CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों के दरीचे

राम बदन राय

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

Ø·2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों के दरीचे

श्रद्धेय स्वामी जी.
रामगुरु मठ
वाराणसी
को
सादर समर्पित,
[illegible]
24.1.21

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों के दरीचे

(व्यक्तित्व विश्लेषण-संस्मरण)

राम बदन राय

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ISBN 978-93-88799-50-8

यादों के दरीचे

© राम बदन राय

पहला संस्करण (सजिल्द) : 2020

मूल्य : 250.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फ़ोन : 0-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

YADON KE DARICHE (Memories) by Ram Badan Ray

Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II

Ghaziabad-201005 (UP) India

Price : ₹ 250.00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानंद सरस्वती
पी. जी. कॉलेज ग़ाज़ीपुर
के अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष
प्रो. अजय राय
को
सस्नेह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

एक और नर सिंह, बनाम शेर को शिकस्त	9
एक ऑल राउण्डर साहित्यकार के कुछ अद्‌भुत प्रसंग	13
यह आसमाँ तक उठे कैसे ?	22
मल्लविद्या के अद्वितीय साधक पुण्य श्लोक : मंगला राय	38
मुझे कोई मिल गया था, सरे राह चलते–चलते	46
बीते कल के अँजहुरी भर पल	52
सिन्हा मनोज के मायने	60
डॉ. राम दरश मिश्र उवाच : 'आप सभी मेरे आवास पर आमंत्रित हैं'	67
वाणी विभव विवेकी राय जी को याद करते हुए	72
बेनजीर नाजिर सर का नायाब नाजिरनामा	78
माननीय मनोज जी के प्रति कुछ अन्य उद्‌गार	91

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक और नर सिंह, बनाम शेर को शिकस्त

यह काल्पनिक नहीं सत्य घटना है। एक अद्भुत पराक्रम-संपन्न पुरुष ने एक शेर को, वह भी किसी चिड़िया घर या सरकस के पालतू शेर को नहीं, जंगल के खूँखार आदमखोर शेर को, नंगे हाथों मल्ल युद्ध कर कुछ ही पलों में ज़मीन सुँघा दिया था। वह रोमांचकारी कथा, उनके संक्षिप्त परिचय सहित इस प्रकार है—

भारतीय उ. प्र. के ग़ाज़ीपुर ज़िले में कुण्डेश्वर एक गाँव है। वहाँ के श्री कृष्ण मोहन सिंह के दूसरे सुपुत्र हरिनारायण सिंह जी का व्यक्तित्व अत्यंत अद्भुत था। ऊँचा मस्तक, शुंडाकार बलिष्ठ भजाएँ, गज भर का चौड़ा उन्नत वक्ष तथा क़रीब सात फुट लंबी उनकी सुदीर्घ-सुदर्शन गौर वर्ण कमनीय काया, किसी के भी मन को बरबस मोह लेती थी।

उनका जीवन जिन अनेक आश्चर्यमयी घटनाओं से ओत-प्रोत रहा है, उनमें एक भयंकर बलशाली शेर को शिकस्त देने वाली सनसनीखेज घटना, सर्वाधिक रोचक, दिल दहलाऊ और उनके अद्भुत शौर्य-शक्ति का सर्वोत्तम निदर्शन है। निश्चय ही, निर्विवाद, वे मात्र हरि नहीं, भारतीय भूमि पर उत्पन्न केहरी थे।

श्री हरिनारायण जी बद्रीनाथ, केदार नाथ, गंगोत्री-जमुनोत्री की तीर्थ यात्रा पर निकले थे। यातायात के साधनों के अभाव में पैदल ही चलना था। पीछे-पीछे उनका परिचारक नाई चल रहा था। बियाबान घनघोर जंगल। चलते-चलते वे बहुत दूर निकल गए। अचानक संतरियों ने मार्ग अवरुद्ध कर दिया। बोले, "यह रास्ता बहुत ख़तरनाक हो गया है। इधर से निकलना कत्तई निरापद नहीं रह गया है। एक जंगली शेर ने कई लोगों की जान ले ली है। अच्छा हो, आप उस दूर के रास्ते से घूमते हुए निकल जाएँ।" किंतु बाबू साहब कहाँ मानने वाले थे। उन्हें तो अपने भारत देश की जनता को इस भीषण स्थायी संकट से मुक्त करना था। वे किसी भी तरह नहीं माने और अपनी जान को हथेली पर लिए, बाजू-ए-कातिल का ज़ोर आजमाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी रास्ते चल पड़े।

फिर तो वही हुआ जो होना था। साथ चल रहा नाई बेचारा बिना शेर को देखे, उसकी गुर्राहट भरी दहाड़ सुनकर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। शेर दहाड़ते हुए उठा और तेज़ क़दम आगे बढ़ा। इधर हरिनारायण जी भी धोती-कुर्ता उतार लँगोट पहने झटपट तैयार हो गए। उन्होंने बायें पैर को आगे निकाल, दोनों हाथों को थोड़ा ऊपर उठा, अभी मोर्चा सँभाला नहीं, कि नरभक्षी शेर अगले दोनों पंजों के बल छलाँग लगा, पिछले दोनों पंजों के सहारे ऊपर उछल, पूरी ताक़त से उन पर टूट पड़ा। शेर के अगले बायें पैर को उन्होंने अपने दायें हाथ से अच्छी तरह कस कर पकड़ लिया, किंतु बायाँ पाँव सँभालते-सँभालते कंधे पर सरक आया और एक हल्की-सी खँरोच आ ही गई। ख़ून से पीठ लहू-लुहान हो गई। दोनों शेरों की गुत्थम-गुत्थी कुछ देर तक जारी रही। अब तक अगले दायें पैर को भी उन्होंने पूरी तरह सँभाल लिया। बड़ा भयानक दृश्य था। पेड़ की मोटी शाखा को दोनों हाथों से जकड़े भयाक्रांत नाई थर-थर काँप रहा था। अचानक हरि जी ने अपने दाहिने पैर से शेर की छाती पर भरपूर ताक़त से प्रहार किया और बुरी तरह घायल शेर धराशायी हो उठा। वह थोड़ी देर तक छटपटाया और शीघ्र ही शांत हो गया। पेड़ पर चढ़े नाई की जान में जान आ गई। वह धीरे-धीरे नीचे उतर आया।

उल्लेखनीय है कि हरिनारायण सिंह जी के शौर्य और पराक्रम की यह जीवंत सत्यकथा बहुत पुरानी नहीं, डेढ़-दो सौ वर्ष पहले की भी नहीं है। यह घटना सन 1888 ई. में बड़ौदा राज्य के सीमांतर्गत घटी थी। बड़ौदा राज्य के महाराज ने इस घटना से प्रभावित होकर उनका बड़ा सम्मान किया तथा कुछ दिनों तक अपने यहाँ रखकर उन्हें सादर विदा किया। उस समय देश की अनेक छोटी-बड़ी रियासतों में अच्छे-अच्छे मल्लों को राजाश्रय भी प्राप्त था, किंतु मनस्वी हरिनारायण जी इससे सर्वथा मुक्त रहे। वे आजीवन अपने पैतृक निवास पर ही रहे, कहीं गए-ठहरे नहीं। जबकि ग़ाज़ीपुर के ही रेवतीपुर निवासी राजानारायण जी, नगीना, जोगा मुसाहिब निवासी मंगला तथा करीमुद्दीन पुर निवासी विभूतिराय आदि ने अनेक स्थानों को अपना आश्रय बनाया।

शेर को मारने के बाद वे अपनी ससुराल मनीकंठ पुर, तिसखोर, जिला पटना पहुँचे। वहाँ उनकी साली श्रीमती महेश्वरी कुँवारि ने हँसी-मज़ाक़ में उन्हें एक चाँदी का बड़ा सिक्का टेड़ा करने को दिया। प्रत्युत्तर में हरि जी ने पानी पीने के लिए दिये गए भारी-भरकम लोटे को ही बायें हाथ के पंजे से दबाकर बुरी तरह पिचका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया। वह लोटा आज भी स्मृति स्वरूप उनकी ससुराल में रखा हुआ है।

एक बार उनके मित्रों ने मज़ाक़ किया कि अपने घर तो कुत्ता भी ताक़तवर होता है, वे कहीं बाहर जाकर शक्ति प्रदर्शन करें तो कुछ समझा जाय। इस चुनौती से उनके अहं को बड़ी ठेस लगी। उन्हें पता चला कि तमखुहीं (देवरिया) के राजा के यहाँ एक बेजोड़ पहलवान राज नारायण राय अपना सिक्का जमाए हुए है। अच्छे खान-पान तथा लड़ने के लिए राजा की ओर से उसे पूरी मनचाही व्यवस्था है। फिर क्या था! वे घर छोड़कर चुपचाप अकेले निकल पड़े।

शाम के धुँधलके में उन्होंने तमखुहीं राज्य की सीमा में प्रवेश किया। उनके पहुँचने की ख़बर पाकर ग़ाज़ीपुर के रेवतीपुर वाले राजनारायण राय जी ने सगे बड़े भाई की तरह उनकी ख़ूब आव-भगत की। भोजनोपरांत रात्रि विश्राम के समय राज नारायण ने कहा, "आपने ज़रा भी सोचा होता कि आपका ही एक भाई अजेय बनकर यहाँ रंग जमाए हुए है। ...अगर आपने मुझे पछाड़ ही दिया तो आपको क्या मिल जाएगा?" (इसी राज नारायण पहलवान ने झरिया (बिहार) में विश्वजयी गामा के साथी प्रसिद्ध मल्ल इमामबक्श को सरे मैदान आसमान दिखा दिया था और मारे भय के गामा अपने काफिले के साथ बिना लड़े लाज बचाकर वापस लौट चुका था।)

संयोग से ये दोनों नारायण (हरि और राज) एक ही जनपद के रहने वाले भी थे। हरिनारायण जी उम्र में कुछ छोटे थे। अतः बड़े भाई के मुख से ऐसी बात सुनकर उनकी आँखों में आँसू छलक आए। उन्होंने भरे गले से क्षमा-याचना की और जब तक सवेरा हुआ, वे तमखुहीं राज की सीमा से बाहर थे। लड़ने के उद्देश्य से कहीं बाहर जाने की यह उनकी पहली और अंतिम यात्रा थी।

युवावस्था का अधिकांश समय उन्होंने अपने ननिहाल माधोपुर कोट, जिला वाराणसी में बिताया। लोगों के उत्साहित करने पर वे गंगा-किनारे पड़े हुए एक दीर्घाकार विशाल वजनी पत्थर को बस्ती तक उठाकर ले आए, जिसे आज आठ-दस जवान किसी तरह मिलकर उठा सकेंगे। यह विशाल पत्थर यहाँ मौनी बाबा के प्रचीन आश्रम पर आज भी उनकी अद्भुत शक्ति, अलौकिक क्षमता का परिचायक बना हुआ है।

कुछ दिनों तक उन्हें साँढ़ और भैंसा पालने का शौक रहा। पखनपूरा (ग़ाज़ीपुर) के एक भैंसे के साथ उनके पाले भैंसे की मुठभेड़ हो गई। उनका भैंसा अभी कम उम्र का था। जब वह द्वंद्व युद्ध में प्रतिद्वंद्वी भैंसे से दबने लगा, तब कहा जाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि उन्होंने दोनों भैंसों की एक-एक सींग पकड़कर तब तक अलग किए रखा, जब तक वहाँ अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी न हो गई। फिर किसी तरह दोनों भैसों को रस्से के सहारे बाँधकर अलगाया जा सका। इस तरह की अनेक विचित्र घटानाओं से उनका विशिष्ठ व्यक्तित्व भरा पड़ा है, जिन पर एक पूरी पुस्तक तैयार की जा सकती है।

हरिनारायण जी संगीत के भी बहुत प्रेमी थे, उन्हें मृदंग बजाने का बेहद शौक था। वे प्रतिदिन मृदंग वादन का अभ्यास करते थे। उनके पौत्र कुँवर बाबू, जो आज भी जीवित हैं, के अनुसार, वे कहते थे कि उनकी भुजाओं में शेर को शिकस्त देने की ताक़त मृदंग वादन से ही आयी है। नाल उठाना, मुगदर भाँजना तथा दण्ड-बैठक जैसी अन्य कसरतों की तुलना में आसन और प्राणायाम को वे अधिक महत्त्व देते थे। उन्होंने आजीवन शुद्ध शाकाहारी भोजन किया। इस प्रकार संगीत, व्यायाम तथा दूध-दही-घी मिश्रित सादे भोजन को उन्होंने सदैव अहमीयत दी।

अंतिम समय में वे काशी चले गए थे। 6 जून, 1949 ई. को यहीं के प्रसिद्ध संगीतज्ञ पं. शिवप्रसाद तिवारी के निवास स्थान पर, उन कीर्तिसूर्य ने 85 वर्ष की आयु में शिव लोक के लिए प्रस्थान किया।

(इस आलेख को तैयार करने में हरि जी के पौत्र कुँवर बाबू, जो एक अच्छे शास्त्रीय संगीतज्ञ हैं, की सहायता हेतु, लेखक उनका हार्दिक रूप से आभारी है। यह लघुलेख 'कंचन प्रभा' कानपुर में, फर. 1979 में सचित्र छपा था।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक ऑल राउण्डर साहित्यकार के कुछ अद्भुत प्रसंग

भगवान शिव की नगरी होने की गरिमा से मण्डित काशी का एक गौरवपूर्ण बहुत प्राचीन इतिहास रहा है। नृत्य, संगीत तथा साहित्य के क्षेत्र में इसका कोई सानी नहीं रहा है। परवर्ती काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, राय कृष्ण दास, मुंशी प्रेमचंद्र, शिवप्रसाद मिश्र रूद्र तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे अनेक उद्भट्ट मनीषियों ने भी इसे पर्याप्त गौरवांवित किया है। इसी कड़ी में यहाँ आगे चलकर महान साहित्य-साधक, उत्कृष्ट कथाशिल्पी, बहु विधायी साहित्य सर्जक डॉ. शिवप्रसाद सिंह जी भी हुए। डॉ. सिंह को न केवल कहानी-उपन्यास, बल्कि साहित्य की अन्य कई विधाओं, यथा आलोचना, भाषा विज्ञान, जीवनी, निबंध, नाटक, रिपोर्ताज आदि में भी महारत हासिल थी। निसंदेह वे अपने समकालीन हिंदी जगत के कुछ गिने-चुने शीर्षस्थ लेखकों में एक रहे हैं। साहित्य के आलराउण्डर रहे हैं।

यहाँ एक बात साफ़ कर देना चाहता हूँ कि शिवप्रसाद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में मेरा ज्ञान अत्यल्प, अत्यंत विरल है। उन्हें पढ़ा ज़रूर है किंतु आधा-अधूरा ही। उनसे मिला भी हूँ किंतु बमुश्किल चार-पाँच दफा ही। मुझे याद नहीं कि एक को छोड़ उनसे हुई मेरी कोई भी मुलाक़ात दस-बारह मिनट से अधिक की रही हो। हाँ, उनके विषय में दूसरों के द्वारा सुनने-जानने को बहुत मिला है। ख़ासकर उनके विभागीय बी. एच. यू. में रीडर डॉ. नर्बदेश्वर राय, उनके सानिध्य-निर्देशन में पीएच. डी. प्राप्त मेरे सहकर्मी मित्र डॉ. द्वारिका नाथ राय तथा उनके परम भक्त मेरे अनुज डॉ. विजय नारायण आदि के द्वारा उनकी बाबत ढेर सारी जानकारियाँ मैंने हासिल की हैं। डॉ. विजय तो उनके विचित्र व्यक्तित्व के एकदम दीवाने रहे हैं। साहित्य संबंधी किसी भी तरह की परिचर्चा में वह शिवप्रसाद जी को कहीं न कहीं से ज़रूर घसीट लाते हैं। ''ऐसा है भाई साहब कि...'' बक़ौल विजय नारायण, ''इन उल्लू-बुद्धुओं की बात कौन करने जाय, गुरुआ (शिवप्रसाद जी) को शिकस्त देने की कुब्बत बड़े-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े में नहीं रही है। अरे यार, वह हिंदी साहित्य का ऑल राउण्डर रहा है!...क्या कहते हैं नागर जी!...हुँ: 'गली आगे मुड़ती है' के बाद जब गुरुआ का 'नीला चाँद' मार्केट में आया, तो जानते हैं, ये नागर (अमृत लाल) के चमचे बगलें झाँकने लगे। उनके तरकश में बस एक तीर और रह गया, भंगियों की ज़िंदगी पर लिखा नागर का 'नाच्यो बहुत गोपाल', किंतु गुरुआ ने आज तक किसी की चुनौती तो बर्दाश्त की नहीं! उसने खानाबदोश नटों की कबिलाई ज़िंदगी पर लिखा 'शैलूष', और अइसा जमकर, इतना दमदार लिखा कि सबके सब चारो खाने चित्त!''

डॉ. सिंह के बारे में विजय नारायण द्वारा मुझे कई तरह के संस्मरण सुनने को मिले हैं। एक बार शिवप्रसाद सिंह जी गुरु धाम कालोनी स्थित अपने आवास से गंगा के किसी घाट पर पहुँच गए। वे चिंतनमग्न टहलते हुए घाट के किनारे-किनारे आगे बढ़ रहे थे। संयोग वश अपने कुछ मित्रों के साथ विजय नारायण वहाँ पहले से विद्यमान थे। उन्होंने अचानक देखा कि धोती-कुर्ता पहने डॉ. सिंह तेज़ गति के साथ गंगा के पानी में उतर पड़े हैं। किंतु इसके पहले कि पानी कमर तक पहुँचता, विजय तथा उसके साथियों नें दौड़कर उन्हें पीछे से पकड़ लिया।

''अरे गुरुजी, यह आप पानी में कहाँ चले जा रहे हैं?'' एक साथी ने अचकचाकर पूछा।

''ऐं, नहीं तो...'' और इस संक्षिप्त उत्तर के पल भर बाद ही डॉ. सिंह की चेतना वापस लौट आई।

विजय नारायण जी के ही मुँह से सुने एक और दिलचस्प संस्मरण का ज़िक्र करना चाहूँगा। एक दिन का वाकया। शिवप्रसाद जी यकायक विभाग से बहार निकले और कुछ ही दूर खड़े एक रिक्शे पर जाकर बैठ गए। ''गुरुधाम कालोनी!'' उनकी इस आवाज़ के साथ ही रिक्शा वाला चल पड़ा। विश्वविद्यालय के मुख्य द्वारा तक तो वह ताबड़तोड़ पैंडिल मारता हुआ जल्दी पहुँच गया, किंतु आगे भीड़ की वजह से उसने रिक्शे की रफ़्तार धीमी कर दी। वह टेम्पुओं, कारों, साइकिलों तथा पैदल चलने वालों को काटता, बचता-बचाता मंथर गति से आगे बढ़ रहा था। अभी रिक्शा बमुश्किल दो-तीन किलो मीटर ही आगे बढ़ पाया होगा कि अचानक डॉ. सिंह साहब की गुरु गंभीर आवाज़ गूँज उठी, ''रोको रिक्शा! यह मुझे मछोदरी की तरफ़ कहाँ लिये जा रहे हो?''

रिक्शा वाला एकदम हैरान। उसने डरते-डरते कहा, ''अरे साहेब, इधर मछोदरी कहाँ है?''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बेवकूफ़ बना रहे हो!" डॉ. साहब गरजे, "तेरे पैदा होने के पहले से मैं इस शहर में रह रहा हूँ। यहाँ का चप्पा-चप्पा मेरा जाना हुआ है!"

"ऐसा है साहेब कि..." रिक्शावाला गिड़गिड़ाया, "अभी तो हम दुर्गाकुंड..."

"अभी फिर बोलता है?" डॉ. सिंह लगभग चिल्ला उठे। उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में सुर्खी उतर आई, "मैंने कहा, ज़्यादा चालाक बनने की कोशिश न करो और रिक्शा वापस ले चलो। अब मुझे कहीं नहीं जाना। ...तुम्हें सुनायी नहीं देता क्या?"

रिक्शा चालक बुरी तरह डर गया। किसी तरह कहा, "जैसी आपकी मर्जी साहेब।" और रिक्शा वापस डिपार्टमेंण्ट की तरफ़ लौट चला।

डिपार्टमेंण्ट के पास पहुँचते ही किसी ने पूछा, "अरे डाक्टर साब! बहुत जल्दी लौट आए। कोई ज़रूरी काम याद पड़ गया क्या?"

"नहीं भाई, यह दुष्ट रिक्शावाला मुझे मछोदरी की तरफ़ लिए जा रहा था। यह तो मेरा तत्काल दिमाग़ काम कर गया। मैंने कहा, जल्दी वापस ले चलो।"

"किंतु डाट्साब, इतनी जल्दी कोई रिक्शावाला मछोदरी से नहीं लौट सकता। अभी आपको गए ही कितना वक़्त हुआ! बस ज़्यादा से ज़्यादा आध-पौन घण्टा। अभी तो आप मुश्किल से संकटमोचन या दुर्गाकुंड..."

"तो क्या यह रिक्शावाला मुझे ठीक ही ले जा रहा था?"

"हाँ डाट्साब। रिक्शे वाले भी सवारी को ख़ूब पहचानते हैं। वे सबके साथ ऐसी हरकत नहीं कर सकते। फिर युनिवर्सीटी कैम्पस के भीतर रिक्शा लाने वाला शायद ही नया कोई हो, जो आपको न पहचानता हो।"

"तब तो भाई भारी ग़लती हो गई। ज़रा उस रिक्शे वाले को दौड़कर देखिये तो। बेचारा कहीं चला न गया हो!"

गनीमत थी कि अभी रिक्शा वाला कहीं गया नहीं था। वह सड़क से सटे एक पेड़ की छाया में बैठकर पसीना सुखा रहा था। जानकारी होते ही डॉ. सिंह लगभग दौड़ते हुए उसके क़रीब पहुँचे। बोले, "भई माफ करना। मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। क्या इतना सब होने के बाद भी तुम मुझे फिर ले चलना चाहोगे?" डॉ. सिंह ने अपनी बड़ी-बड़ी पनीली आँखें रिक्शे वाले के सामने पसार दी।

"बैठिए साहब, मेरा काम ही क्या है। आपको भले याद न हो; इस रिक्शे पर आप कई बार आ-जा चुके हैं। मैं तो साहेब आपके लिए..." और डॉ. सिंह पुनः रिक्शे पर सावर हो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे अनेक सुने-सुनाये संस्मरणों के आधार पर यह बात मेरे दिल-दिमाग़ में पूरी तरह बैठ गई कि डॉ. सिंह प्राय: किसी गहरे चिंतन में खोये रहने वाले जीव हैं। वे बेहद स्वाभिमानी, अहंमन्य की सीमा तक इगोइस्ट, कुछ-कुछ आत्ममुग्ध, अंदर से सहृदयी तथा बाहर से अत्यंत गंभीर लगने वाले अजीब इन्सान हैं। साथ ही यह भी कि घोर चिंतन के सघन क्षणों में किसी सुपरिचित तक को तत्काल न पहचान पाना या कभी किसी से मिलने तक से इंकार कर देना, उनके लिए बहुत अस्वाभाविक नहीं है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध, संभवत: सतहत्तर के बाद की बात है। मैं पहली बार अपने सहकर्मी डॉ. द्वारका नाथ राय के साथ डॉ. सिंह के दर्शनार्थ गया था। मुझे याद है, एक अच्छी दुकान से हमलोग चार-पाँच बीड़ा बढ़ियाँ पान बँधवाए और उनके आवास 'सुधर्मा' की तरफ़ चल पड़े। चूँकि द्वारका नाथ जी अपने शोध के सिलसिले में डॉ. साहब से पचासों मर्तबा मिल चुके थे, अत: उनके साथ मिलने जाने में मेरे भीतर तत्क्षण किसी तरह का भय या संकोच तनिक भी नहीं था। हाँ, 'सुधर्मा' के समीप पहुँचकर मैं द्वारका नाथ जी के पीछे अवश्य हो गया।

जिस दरवाज़े के सामने हम लोग पहुँचकर खड़े हुए, उसे पूरी तरह बंद तो नहीं कहा जा सकता, किंतु वह खुला हुआ भी न था। मेरे मित्र ने रुक-रुककर दो बार आवाज़ दी, पहली बार हल्की तथा दूसरी दफा थोड़ी तेज़।

"कौन, द्वारका? आओ-आओ, चले आओ।" कहना न होगा, आवाज़ डॉ. साहब की ही थी। द्वारका नाथ जी के पीछे-पीछे मैं भी अंदर दाखिल हुआ। देखा, डॉ. साहब तकिया, शायद डबल तकिया के ऊपर सिर टिकाए, गंजी-लुंगी पहने चित्त लेटे हुए हैं। सिरहाने सटी कुर्सी पर बैठी एक लड़की उनके सिर पर तेल मल रही है। बाद में जाना कि वह उनकी पुत्री मंजुश्री है। अभिवादनोपरांत हम लोग थोड़ा और आगे बढ़कर एक तरफ़ खड़े हो गए।

"कहो, कैसे आना हुआ?" उन्होंने पूछा।

"कुछ काम से ही आया था। सोचा, आपका दर्शन करता चलूँ।" द्वारिका नाथ जी बोले।

"अच्छी बात है। यह हाथ में?"

"जी, आप ही के लिए कुछ पान..."

"वहाँ, उस मेज़ पर रख दो।"

इसके पश्चात हम लोग कुछ क्षण तक मौन खड़े रहे। डॉ. सिंह की बड़ी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ी निगाहें हमें घूरती रहीं। घोर आश्चर्य, मुझ अजनबी के बारे में कुछ पूछना-जाँचना तो दूर, इस बीच उन्होंने हमें बैठते तक के लिए नहीं कहा। जबकि मंजुश्री वहाँ से अंदर जा चुकी थी और वे उठकर आराम से बैठ गए थे।

"अच्छा डाक्टर साहब, अब चलता हूँ।" डॉ. राय के साथ मैंने भी हाथ जोड़े और अविलंब हम लोग बैरन वापस लौट पड़े।

तो यह रही डॉ. शिवप्रसाद सिंह जी से मेरी पहली मुलाक़ात। इसके दो-तीन साल बाद डॉ. सिंह से मिलने का तब संयोग जुटा, जब मेरे उपन्यास 'फिरकी वाली' के प्रकाशक ने मुझसे डॉ. साहब से भूमिका लिखवाने के लिए कहा। डॉ. सिंह से मिलना मेरे लिए बहुत मुश्किल न था, किंतु उनसे कुछ लिखवा पाना मुझे बेहद टेढ़ा काम लगा। मैंने प्रकाशक से अपनी असमर्थता जाहिर की। पूछा कि क्या बिना किसी की भूमिका के काम नहीं चल सकता? या यह दूसरे किसी से नहीं लिखवायी जा सकती? बहरहाल वह मेरे द्वारा सुझाये एक-दो अन्य नामों पर तैयार हो गया।

सबसे पहले मैं ग़ाज़ीपुर (उ. प्र.) के अपने एक अग्रज लेखक विवेकी राय जी के यहाँ पहुँचा। उन्होंने पाण्डुलिपि के दस-बीस पृष्ठों को जल्दी-जल्दी उलट-पुलट देखकर कहा, "इस विषय (डोम जाति) को लेकर तो मैं भी लिखना चाहता था। ख़ैर, तुमने भी अच्छा लिख डाला है। इसे जल्दी कहीं से छपवा डालो।" गोया उक्त महोदय ने पाण्डुलिपि को पूरी तरह पढ़ना तक गँवारा न समझा। इसके पश्चात पाण्डुलिपि लिए अगले दिन मैं काशी नाथ सिंह जी के यहाँ पहुँचा। मेरा मंतव्य सुनते ही वे हँसने लगे। कहा, "अरे यार, मैं तो तुम्हारे जैसा ही एक साधारण लेखक हूँ। किसी रचना की परख भला मैं क्या कर सकता हूँ! हाँ, अगर दो-चार दिन का मौक़ा दो, तो इसे पढ़ना ज़रूर चाहूँगा। इस पर कुछ भी लिखकर दे पाना मेरे लिए संभव नहीं है।" गोया काशी ने भी मुझे टरका दिया, जबकि वे बी.एच. यू. में शिक्षक होने, नामवर का भाई होने तथा कुछ अच्छा-खासा लिखने-छपने के चलते काफ़ी-कुछ चर्चित हो चुके थे। उनकी 'काशी का अस्सी' जैसी लोकप्रिय कृतियाँ इस घटना के वर्षों बाद सामने आई। ख़ैर...

अंततोगत्वा हिम्मत बाँधकर मैंने शिवप्रसाद जी के यहाँ जाना तय किया। सोचा, बहुत करेंगे डाँट कर भगा देंगे, मारेंगे थोड़े न। किंतु ऐसा कुछ भी न हुआ। मेरी पूरी बात सुनने के बाद उन्होंने पाण्डुलिपि रखवा ली। और हफ्ता-दस दिन बाद मिलने के लिए कह दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क़रीब दस दिन बाद मैं शिवप्रसाद जी के यहाँ पुनः पहुँचा। इस बार उन्होंने मुझे पहचानने से ही इंकार कर दिया। बोले, "कहिए क्या काम है? कहाँ से आए हैं?"

"जी मैं ग़ाज़ीपुर से....राम बदन राय..."

"बस-बस समझ गया। देखो भाई, अभी मैं पढ़ नहीं पाया हूँ। ऐसा है कि तुम आठ-दस दिन बाद आओ।"

मैं अपने गाँव जोगा मुसाहिब से क़रीब सौ किलोमीटर दूर वाराणसी पहुँचा था। उनकी बात सुनकर तबीयत झल्ला उठी। किंतु मैं कर भी क्या सकता था। झख मारकर वापस लौट पड़ा।

तीसरी बार लगभग दस दिन बाद मैं पुनः पहुँचा। गनीमत थी कि इस बार उन्होंने मुझे आसानी से पहचान लिया। कहा, "आओ भाई राम बदन जी, बैठो। कहो क्या हाल है?"

"आप की दया से सब ठीक ही है डाट्साब।"

"मेरी दया से!" वे ठठाकर हँस पड़े। "अरे भाई मेरी दया का ऐसा प्रभाव होने लगे तो फिर क्या कहने! अब देखो न, तुम्हारे उपन्यास को ही अब तक पूरा नहीं पढ़ पाया।"

पहले तो मुझे लगा कि डॉ. साहब मज़ाक़ कर रहे हैं। किंतु उनकी चुप्पी देखकर मुझे विश्वास हो गया कि इस बार भी मेरा काम नहीं हुआ है। अंततः पूछना पड़ा, "तब डाट्साब, मैं फिर कब आऊँ? आख़िर मुक़दमे की कोई तारीख़ तो डालेंगे ही।"

उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "बस एक सप्ताह बाद। अरे लंबा-चौड़ा उपन्यास है, कोई लेख-कहानी नहीं।"

"तो मैं चलूँ?" पल भर बाद मेरे दोनों हाथ जुड़ गए और मैं 'नमस्कार' कह, पैर छूते हुए उठ खड़ा हुआ।

और अगली बार यानी चौथी पेशी। इस बार सोचा, डॉ. साहब अब तक पढ़े हों या न पढ़े हों, कुछ लिख हों, न लिखे हों, मुझे पाण्डुलिपि अवश्य ले लेनी है। आख़िर धैर्य की भी कोई सीमा होती है। सिर्फ़ दस-बीस पंक्ति की भूमिका के लिए अपने गाँव से वाराणसी आने-जाने में न मालूम कितना पैसा और वक़्त मैं बरबाद कर चुका था।

उस समय तक मेरे गाँव के डॉ. नर्बदेश्वर राय की नियुक्ति बी. एच. यू. के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिंदी विभाग में मुकम्मल हो चुकी थी। वे विश्वविद्यालय परिसर से थोड़ी ही दूर अपना आवास तक बनवा चुके थे। अत: अगली बार मैं सबसे पहले उन्हीं के यहाँ पहुँचा। नाश्ता-पानी कर चुकने के बाद मैंने उनसे निवेदन किया, कि वे भी मेरे साथ शिवप्रसाद जी के यहाँ चलें। नर्बदेश्वर जी बोले, "आप कहें तो मैं आपके साथ केरल-कश्मीर-नागालैण्ड कहीं भी चल सकता हूँ, किंतु डॉ. साहब के यहाँ चलने के लिए मुझसे न कहें।"

मैंने पूछा, "आख़िर क्यों? उनके यहाँ चलने में आपको क्या दिक़्क़त है?"

"अब क्या बताऊँ! क्या परेशानी है। ...मैंने आज तक उनके सामने आँख उठाकर कभी बात ही नहीं की। विभाग में भी ज़्यादा से ज़्यादा नमस्ते-बंदगी बस्स। उनकी बड़ी-बड़ी उथली डरावनी आँखें, बाप रे बाप! लगता है जैसे फाड़ खाएँगी।"

"आँखें तो आप की भी छोटी नहीं हैं। ...तब इसका मतलब मुझे अकेले जाना पड़ेगा।"

"नहीं, उनके आवास के पास तक तो मैं आपको स्कूटर से छोड़ ही सकता हूँ। आप कहेंगे तो किसी चाय की दुकान पर आपके लौट आने तक बैठा भी रह सकता हूँ।"

"चलिए, यही सही।"

"किंतु अधिक देर तक इंतज़ार नहीं करूँगा मैं। भई पहले ही बता दे रहा हूँ। अगर आपने बीस-पच्चीस मिनट से अधिक का समय लिया तो मैं आपको छोड़कर वापस लौट आऊँगा।"

"हाँ भाई लौट आइएगा। मगर इससे अधिक समय लगने का कोई सवाल ही नहीं उठता।" और मैं नर्बदेश्वर भाई के पीछे स्कूटर पर बैठकर आनन-फानन में गुरुधाम कालोनी पहुँच गया।

जब मैं 'सुधर्मा' के प्रवेश द्वार पर पहुँचा, शाम ढल चुकी थी। बैठक का दरवाज़ा भिड़ा हुआ था। अभी-अभी जली बिजली की चकाचौंध में हरी-भरी छोटी फुलवारी, रंग-बिरंगे पौधे आवास की ख़ूबसूरती को बढ़ा रहे थे। पास पहुँचने पर लगा, अंदर कई सज्जन बैठे हुए हैं। उनकी तेज़-मद्धिम स्फुट आवाज़ें खिड़कियों तथा दरवाज़े की फाँकों-सुराखों से निकल कर बाहर तक आ रही थीं। बीच-बीच में रह-रहकर डॉ. साहब की हँसी के पटाखे और फुलझड़ियाँ भी गुंजायमान थे।

मैं बाहर खड़ा बहुत पसोपेश में था। समझ में नहीं आ रहा था कि कुछ देर इंतज़ार करूँ, अंदर आने की इजाजत माँगू या उलटे पाँव लौट जाऊँ। पता नहीं, कैसे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ से आये लोग बैठे हैं! अगर किसी ने यूँ चोर-उचक्के की तरह कान लगाये बाहर खड़ा देख लिया, तो पता नहीं क्या सोचेगा। शायद दो-चार थप्पड़ लगा भी दे! बहरहाल जब आ गया हूँ, तो बिना मिले नहीं लौटूँगा, मैंने अविलंब निर्णय ले लिया। भिड़े हुए दरवाज़े को ज़रा-सा ठेलकर पूछ बैठा, "क्या मैं भी अंदर आ सकता हूँ?"

"कौन, राम बदन? आओ-आओ।" आवाज़ डॉ. साहब की थी। इसके साथ ही अंदर चल रही बतकही एकदम बंद। मैंने अंदर घुस कर सबका अभिवादन किया और दरवाज़े को पूर्ववत बंद करके एक तरफ़ ख़ाली सोफे पर बैठ गया।

"इस लड़के को पहचान रहे हैं आप लोग?" डॉ. साहब के इस सवाल के साथ वहाँ विराजमान चारो सज्जन मेरी तरफ़ देखने लगे। उनमें से एक की शक्ल मेरे मस्तिष्क में आज भी बनी हुई है। वे धोती कुर्ता सदरी के साथ-साथ सिर पर गाँधी टोपी लगाए हुए थे। मुझे ही हाथ जोड़कर बोलना पड़ा, "मैं राम बदन राय, ग़ाज़ीपुर"

डॉ. साहब पुनः मुखर हुए, "अरे भाई इस लड़के ने तो हद कर दी है। पहली बार ही डोम कहे जाने वाले अंत्यजों पर इतना जानदार उपन्यास लिखा है कि क्या बताऊँ! ये आजकल (वे अलां-फलां कई बड़े बुजुर्ग, नामी-गिरामी ग्राम (आंचलिक) कथाकारों के नाम गिना डाले, जिनका यहाँ उल्लेख करना मैं सर्वथा अनुचित समझता हूँ।) भला क्या लिखेंगे!" डॉ. साहब की यह अतिशयोक्ति वहाँ बैठे लोगों को शायद अच्छी न लगी, क्योंकि टोपी वाले सज्जन ने अविलंब कहा, "अच्छा डॉ. साहब, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया। अब इजाजत दीजिए।" और सबके सब एक साथ उठ खड़े हुए। पल भर के लिए मैं भी डॉ. साहब के साथ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

इस बार शिवप्रसाद सिंह जी सचमुच बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे। मैंने कदाचित पहली बार उन्हें इतनी आह्लादित अवस्था में देखा था। सबके चले जाने के बाद उन्होंने कहा, "आशा के विपरीत बहुत ही उम्दा लिख डाला है तुमने। जानते हो क्या हुआ! इसे सबसे पहले पढ़ा मंजू ने, फिर पढ़ा नरेन्द्र ने। यानी यहाँ जिसने भी पढ़ा, बड़ी तारीफ़ की। मैंने सोचा, आख़िर ऐसा क्या लिख डाला है तुमने कि सभी तारीफ़ पर तारीफ़ किए जा रहे हैं! फिर तो मुझे भी पढ़ना पड़ गया। एक बड़ी कमी ज़रूर दिखायी दी है तुम्हारे उपन्यास में। कहीं-कहीं लगा है, तुमने जान-बूझकर, सायास, भोजपुरी शब्दों को ठूस दिया है। इससे दूर-दराज, जैसे पंजाबी, बंगाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा राजस्थानी आदि के पाठकों को समझने में कठिनाई होगी, जो हिंदी भी अच्छी तरह समझ लेते हैं।''

''अब डॉ. साहब, जो लिख गया सो लिख गया। हाँ, फिर कभी लिखना हुआ तो आपकी हिदायत को ज़रूर ध्यान में रखूँगा।''

थोड़े में बातों को समेटना चाहूँ तो यह कि उन्होंने एक छोटी, किंतु सार गर्भित, तत्थपूर्ण भूमिका लिख दी थी। स्कूटर पर बैठाकर मुझे वापस ले आने के लिए भाई नर्बदेश्वर राय डी. लिट्. ने क़रीब आधे घंटे से अधिक मेरी प्रतीक्षा की थी, जिनके प्रति मैं आज भी हृदय से आभारी हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह आसमाँ तक उठे कैसे?

(मेरे सर्वाधिक शुभेच्छु, सहायक एवं संरक्षक)

बात की शुरुआत इन सवालों से कि—

भला ऐसी आबो हवा में
तुम्हीं कहो, खिले कैसे?
डगर अजानी थी, वीरान थी
तुम हम सफ़र, मिले कैसे?
अजी मैं तो एक काँटा था
कहो गले मेरे, लगे कैसे?
जमा डाली, हथेली पे तीसी
आख़िर इत्ता सब, किये कैसे?
तुम देखने में तो मामूली थे
यह आसमां तक, उठे कैसे?

तो ऐसे अनेक 'कैसे?' के अकेले उत्तर श्रद्धेय बृज मंगल राय (मंत्री जी) का अभ्युदय, ग़ाज़ीपुर-बलिया के बीच स्थित करइल के इस बेहद पिछड़े इलाक़े में, राख की ढेर से निकली दहकती चिंगारी की मानिंद, एक अत्यंत ग़ैर मामूली घटना है। दरअसल स्व. राय एक अति सामान्य किसान परिवार में पैदा हुए थे। वे आरंभिक स्कूलों की, किसी तरह पढ़-लिख पाने लायक़ शिक्षा पाये थे। क़द-काठी भी उनकी ठिगनी, बेडौल एक-दम साधारण थी। फिर सादगी पसंद अति सामान्य रहन-सहन। शुद्ध शाकाहारी मामूली खान-पान। भगवान भूतनाथ भोले शंकर के समर्पित भक्त-आराधक। मोटी खुरदरी खादी की गोल-गला गंजी, धोती एवं उत्तरीय का साधारण सफ़ेद पहनावा तथा प्राय: हँसी-ठट्ठा वाली सामान्य गँवई बतकही। यानी बाहर-बाहर सब कुछ बेहद सामान्य! किंतु उनका अनंत जिजीविषा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उर्जस्वित, संघर्षशील भीतरी व्यक्तित्व निश्चय ही असामान्य था, विलक्षण था, विशाल था। कई मायने में वे बेजोड़ थे। उनका कोई सानी न था।

आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी थी। वे गाँधी जी के आदर्शों से पूरी तरह अनुप्राणित थे। उनके आदर्शों के आक्षरशः अनुपालन में उन्होंने अपने आपको मनसा, वाचा, कर्मणा समर्पित कर दिया था। सरकार विरोधी क्रियाकलापों के चलते पीछे पड़ी पुलिस के भय से वे रंचमात्र भी विचलित न हुए। रात के अँधेरे में रेलवे प्लेटफार्म, बस स्टैण्ड तथा पुलिस-स्टेशन जैसी जगहों पर उन्होंने सरकार विरोधी पाम्फलेट सटाया तथा कभी-कभार औचक प्रकट होकर धरनों, जुलूसों तथा प्रदर्शनों में हिस्सा भी लिया। एक बार वे पुलिस द्वारा पकड़े भी गए, किंतु कुछ ही दिन बाद जेल से छूटकर बाहर निकल आए। आज़ादी मिलने के बाद भी वे कांग्रेस पार्टी के अजीवन सहयोगी समर्थक बने रहे। वे जिला कांग्रेस कमेटी ग़ाज़ीपुर के अध्यक्ष तथा मंडल कांग्रेस कमेटी के महामंत्री भी चुने गए। यहाँ यह कहना ग़लत न होगा कि राजनीति के क्षेत्र में अगर बृजमंगल राय जी, कई बार विधायक रह चुके विजय शंकर बाबू की देन थे, तो विजय शंकर बाबू (सिंह) भी बहुत कुछ बृज मंगल राय जी की उपज थे।

असल में उच्च कुल संभवा विजय शंकर बाबू नितांत साधु प्रकृति के जीव थे। जमींदारी ठाट-बाट वाले बड़प्पन का प्रदर्शन तो उनमें छूकर भी न था। खान-पान, रहन-सहन तथा आचार-विचार की, उनकी जैसी शुचिता का दिखायी पड़ना सम्प्रति दुर्लभ है। उन्हें किसी ने मरते दम तक दुकान या होटल में खाते-पीते नहीं देखा। बड़ी से बड़ी यात्राओं में वे फलाहार के सहारे कई-कई दिन गुज़ार लेते थे। बहुत क्रोध की मुद्रा में भी शायद ही उन्हें किसी ने देखा हो। किंचित ऐसे ही गुणों के चलते मंत्री जी (बृज मंगल राय) न केवल उनके अनुगामी, अनुज या प्रिय सखा रहे, बल्कि एक सीमा तक श्रद्धालु भक्त भी। निस्संदेह विजय शंकर बाबू के व्यक्तित्व में कुछ तो ऐसा था ही, जो अत्यंत अनुकरणीय था तथा जिसे मंत्री जी ने भी अपने जीवन में यथासंभव उतारने का प्रयास किया था। उनके उदात्त जीवन का उत्तरार्द्ध तो शुचिता, सरलता एवं निश्छलता का प्रतिमान बन गया था। उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, निःसंकोच स्वीकार करना चाहूँगा, कि सन 1973 के दौरान, मुझे महाविद्यालयी (स्वामी सहजानंद, ग़ाज़ीपुर) शिक्षक बनवाने में मंत्री जी के साथ-साथ विजय शंकर बाबू का भी पूरा हाथ था।

विजय शंकर बाबू में आज के नेताओं जैसी जनता को भरमाने वाली वाक्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटुता न थी। इसके विपरीत अत्यल्प शिक्षा के बावजूद मंत्री जी सभा-समारोहों में घंटों धाराप्रवाह बोल लेते थे। उनकी मधुगंधी आवाज़ में गजब का ओज था। सहज आत्मीयता का अजीब आकर्षण था। बोलते समय कभी-कभी वे इस कदर भाव विह्वल हो उठते कि अपने लोगों के बीच खड़ी बोली छोड़कर बोलचाल की ठेठ भोजपुरी पर उतर आते, आवाज़ रुआँसी तथा आँखें नम हो जातीं। ऐसी स्थिति में उनकी क्षणिक चुप्पी पूरे वातावरण में सूई पटक सन्नाटा भर देती और दर्शक-श्रोता एकटक मंत्रमुग्ध! सचमुच उनकी वकृता शक्ति प्रकृति प्रदत्त थी। इसमें उनका अपना सायास शायद कुछ भी न था।

स्व. मंत्री जी मेरे पिता तुल्थ थे। बल्कि पिता से भी बढ़-चढ़कर थे। अगर मैं कहूँ, कि मेरे पिता स्व. शम्भु नारायण 'भक्तराज' या सहोदर भ्राता स्व. राम बचन राय के द्वारा मुझे वह आत्मीय स्नेह नहीं मिला, जो स्व. महामना मंत्री जी से उपलब्ध हुआ, तो ग़लत न होगा। कालेज की शिक्षणेतर गतिविधियों में मेरी इच्छा के विरुद्ध वे कोई कार्य नहीं करते थे। एन. एस. एस., प्रौढ़ शिक्षा, दीक्षान्त समारोह, कवि सम्मेलन या इस तरह के किसी भी आयोजन में, कैसे-क्या करना है, किसे बुलाना है, वे मुझसे ज़रूर पूछते-समझते थे।

मंत्रीजी में यायावरी वृति भी ख़ूब थी। देश का शायद ही कोई प्रमुख धार्मिक स्थल हो, जो उनकी नज़रों से ओझल रह गया हो। यात्रा की कठिनाइयों से वे घबराते नहीं थे, बल्कि उनका भरपूर आनंद उठाते थे। साठोत्तरी उम्र में भी 15-20 किलो मीटर तक की पैदल यात्रा उनके लिए साधारण बात थी। अपने भइया विजय शंकर बाबू के साथ उन्होंने यहाँ-वहाँ दूर-दराज तक का चक्कर मारा था। कई-कई दिन ठहरकर दिल्ली की राजनीति को उन्होंने समझा था, लखनऊ की नफासत को नजदीक से देखा था। इसी यायावरी में वे मुझसे एक बार अचानक काठमाण्डू में मिले थे। कहना न होगा, उनके जिज्ञासु घुमक्कड़पन ने उन्हें देश काल तथा जीवन का अकूत अनुभव प्रदान किया था। इस महत जीवनानुभव तथा क्षेत्रीय शैक्षणिक योगदान (इ. कालेज, जे. टी. सी., बी. टी. सी. एवं डिग्री कालेज) के चलते, कुछ लोगों द्वारा उन्हें कबीर तथा मालवीय का लघु संस्करण कहा जाना, सर्वथा समीचीन एवं तर्क संगत प्रतीत होता है।

मेरे मस्तिष्क में कभी-कभी उनकी अद्भुत अपराजेय छवि, भारतीय ऋषि परंपरा के आधुनिक प्रतीक के रूप में उभरती है। प्रातः प्रायः चार बजे उठकर शौच, स्नान (ग़ाज़ीपुर रहने पर, कोस भर पैदल चलकर गंगा नहान) तथा ध्यान-पूजा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकर सायं नौ-दस बजे तक की उनकी दैनिक गतिविधियों की अबाध निरंतरता अद्भुत थी। और अद्भुत थी उनकी विलक्षण स्मरण-शक्ति, समय की सच्चाई या माँग को अविलंब समझ लेने की अंतर्दृष्टि, जटिल से जटिल समस्याओं के निराकरण की निष्णात चतुरता तथा प्राय: दो टुक सही-शीघ्र निर्णय लेने की निर्भीक क्षमता। रोज़मर्रा के निजी जीवन में वे जितने कठोर थे, उससे अधिक दयार्द्र भी। वे विनय, क्षमा, सहिष्णुता तथा धैर्य की प्रतिमूर्ति तथा अथक-अनवरत सनिष्ठ परिश्रम के पर्याय थे। निर्भ्रांत वे इस जनारण्य करइल-कांतार के सिद्ध कर्मयोगी, शैक्षिक रूप से इस अत्यंत पिछड़े क्षेत्र के उन्नायक तथा समकालीन समूचे जनपद के जननायक थे। ऐसे महायशस्वी, प्रकृति प्रदत्त प्रातिभ पुरुष की मात्र स्मृतियाँ ही अब मन-मस्तिष्क में रह गई हैं।

यादें, यादें और सिर्फ़ यादें

बहुत पहले एक फ़िल्म देखी थी। अब नाम तो याद नहीं, किंतु उसमें फ़िल्माया एक गीत मुझे आज भी याद है। उसे सुनने के बाद से आज तक जब भी किसी अजीज-आत्मीय की मौत को सुना-देखा हूँ, वह गीत मेरी ज़ुबान पर ज़रूर चढ़ा है, दिल-दिमाग़ में ज़रूर कौंधा है। दरअसल गीत से ज़्यादा ख़ूबी उसके गाये जाने के अंदाज़ में है, दर्द भरी आवाज़ में है। शायद आपने भी सुना हो—

आदमी मुसाफिर है
आता है जाता है
आते-जाते रस्ते में
यादें छोड़ जाता है।

इन छोड़ी गई यादों का शायद कोई व्याकरण नहीं हो सकता। क्योंकि यादों की कोई सुनिश्चित परिधि या ज्यामिती नहीं होती। यादें हाई-वे की तरह होती हैं, जो दौड़कर हमारे पास आती हैं, तो कभी हमें छूकर दूर निकल जाती हैं। यादें उजास की तरह फूटती हैं। यादें शाम की मानिंद ढल जाती हैं। यादों का सिलसिला जब चल निकलता है, तो चलता ही जाता है। जल्दी थमने का नाम नहीं लेता। मगर यादों की कोई डायनेस्टी नहीं होती, उनका सरनेम नहीं होता।

हमें किसी की यादें रुलाती हैं, किसी की हँसाती हैं, किसी की तड़पाती हैं तो किसी की गुदगुदाती हैं। ये यादें आदमी को ज़िंदा रखती हैं। यादें उसे तिल-तिल मार डालती हैं। यादें बुलाने पर भी नहीं सुनतीं। यादें बिन बुलाये आ धमकती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं, दिल-दिमाग़ पर पसरट्टा मारे बैठ जाती हैं। ऐसी कुछ मुख्तलिफ, मानीखेज़ यादें, जो लाख भुलाये नहीं भूलतीं, उनकी बातें ही कुछ दीगर हैं।

ऐसी ही अविस्मरणीय सालने-बिलखाने वाली यादें (कम से कम मेरे लिए) मेरे पिता सरीखे भाई राम बचन राय की हैं। बेहिचक कहूँगा, मेरे अब तक के इस होने में सहोदर भाई राम बचन राय (एम. ए. बी. एड.) तथा मंत्री जी की सर्वाधिक भूमिका रही है।

अवांतर ही सही, मुख्तसर में इतना और बताने कि इज़ाजत दें कि मेरे एक मात्र ज्येष्ठ भ्राता राम बचन जी की विगत 15 दिसं. 1996 ई. को महज 57 साल की अल्पायु में अचानक असामयिक मृत्यु हो गई। वे बहुत अच्छी अंग्रेज़ी जानते थे। इत्तफाक देखिये कि उनका क़द मंत्रीजी की तरह ही ठिगना था। रंग भी उन्हीं की तरह साँवला था। और जैसा कभी बहुत पहले मंत्री जी ढोलक बजाया करते थे, भइया भी बहुत बढ़िया ढोलक बजाते थे। गीत-गौनई तथा नाटक आदि में उनकी भरपूर दिलचस्पी थी। वे छात्र-प्रिय उत्कृष्ट अध्यापक थे तथा मंत्री जी की तरह ही बहुत अच्छा बोल लेते थे। वे इंटर का. खरडीहा की प्रबंध समिति के एक सक्रिय सदस्य भी थे। उन्होंने मेरे लिए, अपने 24 सदस्यीय संयुक्त परिवार के लिए तथा लगातार 17 साल से जू. हाई स्कूल अबथहीं के हज़ारों शिक्षार्थियों के लिए क्या कुछ नहीं किया! वैसे उनके जिम्मे अभी बहुत कुछ करना बाक़ी था। क्योंकि—

'अभी तो दिन उठान पर था
शाम कैसे हुई?
(किंतु) वक़्त का भेड़िया
सूरज उठा के ले गया!'

यादें एक की नहीं, दो की नहीं, तीन की भी नहीं, यादों के अलबम में धुँधली-गाढ़ी तस्वीरों की लंबी क़तार है। यादें लाल बहादुर जी की हैं, यादें राजीव जी की हैं, यादें क्रांतिकारी कवि मान बहादुर जी की हैं, यादें यशस्वी निबंधकार कुबेर नाथ राय जी की हैं। कुछ चश्मदीद शख़्सियतों की यादें भी हैं, मसलन मेरे सुहृदय मित्र कवि-कथाकार नरेंद्र शास्त्री जी की, मेरी पूजनीया माँ राम सँवारी देवी की, काका शिव नारायण 'मलिकार' की तथा सबसे बड़े भाई राम सागर जी की। और भी बेशुमार यादें हैं मेरी जेहन में। मगर घबराएँ नहीं, मुझे आपको मंत्री जी से संबंधित यादों की दुनिया में ही ले चलना है।

मंत्री जी यानी बृज मंगल राय अब हमारे बीच नहीं हैं। यह जितना ज़्यादा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच है, इससे ज़्यादा सच यह है कि वे हमारे बीच और भी शिद्दत के साथ मौजूद हैं, मौजूद रहेंगे। अपनी ता-ज़िंदगी किये के सहरे, अपने कारनामों की यादों के सहारे। क्योंकि हमारा चैलेंज है—

'हे प्रियवर तुम चले गए हो, यह कैसे हम मानें!
हृदय गेह के नेह द्वार से, जाओ तो हम जानें!!'

जी हाँ, हमने तो उसे अपने भीतर क़ैद कर बाहर से ज़बरदस्त सिकड़ी लगा रखी है। अब देखें, कैसे निकल पाता है! मेरे साथ जुड़ी उस शख़्स की यादों की फ़ेहरिश्त काफ़ी लंबी है। जैसे यहाँ से वहाँ तक अछोर कोसों फैली कोई बेहद विशाल प्रदर्शनी लगी हो। किसे छोड़ूँ, किसे दिखाऊँ! क्योंकि इस संस्मरण-पुस्तक के छोटे कैनवस पर सबको सिलसिलेवार उकेर-दिखा पाना मुमकिन भी तो नहीं। बेतरतीब ही सही, आइये, मंत्रीजी की कुछ ख़ास, चुनिंदा यादों की ओर आपको लिये चलता हूँ।

1. वह ठगा-सा खड़ा देखता रह गया है

उ.प्र. का विधान सभायी चुनाव। प्रचारार्थ मंत्री जी मेरे गाँव जोगा मुसाहिब में आये हैं, ग्रामीण मतदाताओं को अपने पक्ष में करने, उनसे वोट माँगने। उनके साथ कांग्रेसी उम्मीदवार विजय शंकर बाबू हैं। खरडीहा के लालजी राय हैं। और भी कई लोग हैं। ये सभी रामायन बाबा के दरवाज़े पर बैठे हैं। नाश्ता-पानी चल रहा है। वोट संबंधी बातों की जुगाली चालू है।

इसी बीच गाँव का एक लड़का। उम्र यही कोई 17-18 साल। शिक्षा सिर्फ़ हाई स्कूल पास। इन कांग्रेसियों की ख़बर पाते ही दौड़ पड़ता है। रामायन राय के दरवाज़े (जहाँ सभी बैठे हैं) के बगल में खड़ी मिट्टी की एक जीर्ण-शीर्ण दीवार पर वह फुर्ती के साथ चढ़ जाता है। उसकी किशोर सुलभ जोशीली आवाज़ आग उगलने लगती है—कांग्रेस के ख़िलाफ़, विजय शंकर बाबू के ख़िलाफ़ और बीच-बीच में बृज मंगल राय के ख़िलाफ़ भी। धीरे-धीरे उसके इर्द-गिर्द एक छोटी भीड़ लग जाती है। लड़के का भाषण जारी है—

आदरणीय महानुभावो! मेरे प्यारे ग्रामीण मतदाताओ!! आप सबको जानना चाहिए कि आज़ादी मिलने के साथ ही कांग्रेस का उद्देश्य ख़त्म हो गया। और जब उद्देश्य ख़त्म हो गया तो समझिये, कांग्रेस भी ख़त्म हो गई। यह बात मैं नहीं कह रहा। इसे बहुत पहले गाँधी जी ने कह दिया था। आज कांग्रेस के नाम का उपयोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिर्फ़ सत्ता पाने के लिए हो रहा है। जो कल तक अंग्रेज़ों के पिट्ठू थे, चापलूस और भक्त थे, आज देश भक्त कांग्रेसी बन गए हैं। ये सभी चोरकट हैं, रँगुआ सियार हैं। मेरी प्रार्थना है कि कोई इनके झाँसे-बहकावे में न आएँ। ज़रा आप लोग ज़ोर से नारा लगाइये—

—'गाँव-गाँव में मचा है शोर'

—'कांग्रेस में सभी हैं चोर' आस-पास खड़े सभी लड़के बोल उठते हैं।

वही लड़का—'जनता को भरमाया है'

बाकी बच्चे—'फिर बृज मंगल आया है'

—'हमारी मुहर कहाँ लगेगी?'

—'दीपक के निशान पर'

इधर पास ही कांग्रेस के प्रचार में आए सभी सन्न! सब एक दूसरे का मुँह देख रहे हैं। मारे गुस्से के पिनपिनाये रामायन बाबा उठ कर चल देते हैं। उनके साथ कांग्रेस-प्रत्याशी विजय शंकर बाबू, मंत्री जी, जहूर अंसारी, लालजी राय तथा कुछ अन्य लोग भी चल पड़ते हैं। वहाँ लड़के के आस-पास खड़े श्रोताओं की दृष्टि अब उधर घूम गई है, जिधर से ये लोग आ रहे हैं। सबके मन में कुतूहल है, 'देखें क्या होता है' की उत्सुक-जिज्ञासा है।

विजय शंकर बाबू के पीछे चल रहे मंत्री जी यकायक उनके आगे हो गए हैं। लड़के के समीप पहुँचते-पहुँचते सबकी चाल धीमी पड़ गई है। पल भर के लिए सभी ठहर गए हैं। मंत्री जी (बृजमंगल जी) की प्रसन्न निगाहें औचक लड़के की तरफ़ उठ गई हैं। उनके दायें हाथ की तर्जनी भी लड़के की ओर घूम गई है। फिर विजय शंकर बाबू की तरफ़ मुखातिब होते हुए वे ऊँची आवाज़ में कहने लगते हैं, "भैया! यह लड़का बड़ा होनहार है। यह एक न एक दिन, ज़रूर आगे बढ़ेगा। आजकल अइसा निडर, बोलता लड़का अपना गाँव-जवार में कहाँ दिखायी दे रहे हैं!...'बाह बेटा वाह! तबियत ख़ुश कर दिया।' ...अच्छा अब चला जाय।" और बिना विजय शंकर बाबू की अनुमति पाये उनके क़दम आगे बढ़ चले हैं। इसके साथ ही लोग-बाग तितर-बितर। लड़के की भाषण बाजी ख़त्म। वह ठगा-सा खड़ा देखता रह गया है।

यहाँ एक बात साफ़ कर दूँ कि वह लड़का और कोई नहीं, मैं ही था और मंत्री जी ने मुझे ठीक से पहचान लिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2. कहीं पैसे के बहुत लोभी तो नहीं हैं ?

मंत्री जी की कृपा की बदौलत उन दिनों मैं स्वामी सहजानंद डिग्री कालेज में प्रध्यापक था। ग़ाज़ीपुर के रायगंज मुहल्ले में एक किराये के मकान में रह रहा था। विश्वविद्यालयी परीक्षा सन्निकट थी। कालेज में डी. ए. बी. कालेज आजमगढ़ से डॉ. के. डी. (कपिल देव) राय केन्द्राध्यक्ष बनकर आने वाले थे। इसी दौरान एक दिन औचक-अप्रत्याशित मंत्री जी मेरे आवास पर आ धमके। उन्हें देखकर जितनी मुझे ख़ुशी हुई, उतना ही आश्चर्य भी। अत: कहना पड़ा, "किसी को भेजकर आप अपने यहाँ ही (मुझे) बुलवा लिए होते!"

"कुछ बहुत ज़रूरी काम से आ गया हूँ।" वे बोले।

"तो फिर कहिए, मेरे लायक़ क्या सेवा है?"

"सोच रहा हूँ अपने यहाँ (डि. का. खरडीहा), आजमगढ़ वाले कपिल देव राय को प्रिंसिपल बना लिया जाय।"

"तब?"

"तब ई कि तनी तोहरा उनकर खोज-खबर लेबे के पड़ी—उनकर चाल-ढाल, रहन-सहन या बुद्धि-विचार। ई पता लगाना है कि 'कहीं पैसे के बहुत लोभी तो नहीं हैं।' तुम्हारे यहाँ, क़रीब एक महीना, पूरी परीक्षा तक, वे कालेज (सहजानंद) पर ही रहेंगे। उनकी हर गतिविधि का बहुत ठीक से पता लगाना है। और यह काम तुम अच्छी तरह कर सकते हो। कालेज को आगे बढ़ाने में, उसे पीछे धकेलने में, प्रिंसिपल का ही हाथ होता है। और एक बात विशेष, ऐसे काम बहुत गोपनीय ढंग से किये जाते हैं।"

"आप निश्चिंत रहिए। अपनी ओर से, इसके लिए मैं पूरी कोशिश करूँगा। बीच-बीच में आपको सूचित करता रहूँगा।"

"तब मैं चलूँ?"

"मैं जाने के लिए कहूँगा?" और मंत्री जी उठकर चल दिये हैं।

3. यह विद्या मंदिर का पैसा है

सहजानंद कालेज से, मुझे मंत्री जी अपने यहाँ खींच लाये थे। डिग्री कालेज खरडीहा में मेरी नियुक्ति अभी हाल ही में हुई थी। मैं बिल्कुल नया था। प्राय: सभी सहकर्मी मुझसे साल-सवा साल पुराने थे। क्लास में जाकर पढ़ा देने के अलावा किसी भी कार्य के लिए मैं लगभग अनुभवहीन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन मंत्री जी कालेज पर आये। किसी से मुझे बुलवाये। अभिवादनोपरान्त मेरे बैठते ही बोले, "आपको कालेज के लिए कुछ सामान ले आने बनारस जाना है। मुझसे पैसा और सामान की लिस्ट लेकर, दो-तीन दिनों के अंदर किसी दिन चले जाते!"

"आपके आदेश की अवज्ञा मैं नहीं कर सकता। किंतु यह सामान ले आने के लिए तो आपको बड़े बाबू (मु. इसराइल) या राजा जी (डॉ. द्वारिका नाथ) आदि को भेजना चाहिए। ये सभी लोग मुझसे पुराने ही नहीं, अनुभवी भी हैं।"

"देखिये, कौन अनुभवी है और कौन नहीं, यह यहाँ के लिए मैं आपसे अधिक जानता हूँ। यह विद्या-मंदिर का पैसा है, इसके एक पैसे का भी दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। बस, मुझे इतना ही कहना है।"

"तो हमारे साथ जाने के लिए एक सहायक साहिए। आप कहें तो रामानंद को ले लूँ।"

"ठीक है, किसी को भी ले लीजिए और परसों-नरसों तक जल्दी निकल जाइये।" इसके तत्काल बाद नोटों की गड्डी तथा सामानों की लिस्ट पकड़ाकर वे चले गए।

4. उनसे कुछ प्राप्त करना है

"बसीठ (चपरासी)! ज़रा देखों तो कवि जी (मेरा उपनाम) आये हैं?" मंत्री जी की आवाज़ सुनते ही मैं टीचर-रूम से बाहर निकल आया हूँ। वे बरामदे में कुर्सी पर बैठे हैं। पहुँच कर पाँव छूता हूँ।

"मैं आपके लिए ही भागा चला आ रहा हूँ।"

"कहिए, मेरे लिए क्या आदेश है?"

"इ. कालेज पर डी. एम. साहब को बुलाया हूँ। वे एक-दो घंटे में ही आने वाले हैं। मुझे उनसे कुछ कालेज के लिए प्राप्त करना है, यही सब—गोबर गैस, शौचालय तथा चापाकल आदि। तो जिससे कुछ लिया जाता है, उसका ठीक से स्वागत-सत्कार करना भी ज़रूरी होता है। आप एकाध घंटा में जल्दी ही पढ़ा-ओढ़ाकर चले आइये। कालेज की ओर से, गाँव की ओर से, उनके स्वागत में एक ख़ूब ज़ोरदार भाषण आपको देना है।"

"स्वागत-भाषण के लिए वहाँ इ. कालेज में, एक से बढ़ के एक ब्रह्मचारी राय, राजाधारी राय या बंशनरायन ही नहीं हैं, कि आप मुझे बुलाने चले आए?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आप हमारी हर बात में टोक-टाक काहे करते हैं?"

"अच्छा आप चलें। मैं एक-सवा घंटे में पहुँच रहा हूँ।"

5. जब आँखें अश्रुप्लावित हो उठीं

क्या कभी कोई याद किसी तकलीफ़देह सफ़र में, राहत देने वाली माँ की मानिंद आती है और अपनी ममतामयी आँखों, पुत्र-वत्सल करों तथा स्नेहिल पुचकार के स्पर्श सुख से हमें पुलकित कर देती है? तो एक ऐसी ही हृदयस्पर्शी याद है यह।

किन्हीं कारणों से पिछले दो-तीन माह से वेतन पास न हो सका था। कमोबेश सभी शिक्षक तथा शिक्षण-कर्मी परेशान थे। इधर मेरी बड़ी लड़की कविता की जल्दी ही शादी होने वाली थी। मैं उसी की तैयारी में व्यस्त था। यह बात अप्रैल-मई 1995 की है।

उधर ग़ाज़ीपुर पहुँचकर किसी ने मंत्री जी से कह दिया कि वेतन न मिलने से कवि जी (मैं) काफ़ी परेशान हैं। हफ्ता-दस दिन बाद ही उनकी लड़की की शादी है। फिर क्या था! वे 36 किलो मीटर दूर ग़ाज़ीपुर से दौड़े-दौड़े मेरे घर, जोगा मुसाहिब आ पहुँचे।

दरवाज़े पर कोई पड़ोसी पहले से बैठे हुए थे। उन्हें देखते ही प्रायः सभी खड़े हो गए। मैंने पैर छूकर प्रणाम किया और तुरंत एक लड़के को इशारे से जलपान लाने के लिए घर भेज दिया। कुछ लोग उनसे कुशल-क्षेम पूछने लगे। मेरा भतीजा हृषीकेश उनके सिरहाने एक तकिया लाकर रख दिया। पानी पिला चुकने के बाद मैं किसी ज़रूरी काम से दरवाज़े के दूसरे भाग (अहाते) में चला गया। चूँकि मंत्री जी मौक़ा-बेमौक़ा मेरे यहाँ बीसों बार आ चुके थे, इसलिए उनका आगमन अतिरिक्त ख़ुशी या आश्चर्य पैदा करने वाला न था।

थोड़ी देर बाद उनके पास आया तो देखा, अधिकांश लोग जा चुके थे। अपने एक विश्वस्त सेवक मेरे गाँव के दया यादव से बतयाने में वे व्यस्त थे। मुझे देखते ही बोले, "मैं एक ज़रूरी काम से यहाँ आया हूँ।"

"बताइये, क्या काम है?"

उन्होंने चारों तरफ़ निगाह दौड़ाई। बैठक के कोने में रखी चौकी पर अभी भी एक व्यक्ति (मेरे एक पट्टीदार) बैठे रह गए थे। वे बोले, "बताऊँगा, थोड़ी देर बाद बताऊँगा ही।"

उस समय मेरे दिमाग़ में यह नहीं घुस पाया कि मंत्री जी उक्त ज़रूरी काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभी क्यों नहीं बता रहे हैं। मैंने पुनः पूछना तक ज़रूरी नहीं समझा। कुछ समय, यही कोई पाँच-सात मिनट बाद वे अचानक बोले, "अब मैं गाँव (खरडीहा) जाऊँगा हो।" और यकायक उठ खड़े हो गए।

मैंने तथा दया यादव ने उनसे थोड़ी देर और रुकने तथा कुछ खाने-पीने का आग्रह किया। किंतु वे नहीं माने और चल दिये। आगे-आगे मंत्री जी, उनके पीछे मैं तथा हम दोनों के पीछे दया यादव। हम लोग गाँव से बाहर कुछ दूर तक निकल आये। गर्ल स्कूल गुज़र गया। खलिहान की परती पीछे छूट गई। चलते-चलते चर्मकारों की बस्ती भी बीत गई।

आख़िर यह मंत्री जी को हो क्या गया है! हमें लौट जाने के लिए वे कह क्यों नहीं रहे हैं? इतनी दूर तो इसके पहले कभी नहीं आना पड़ा था। मैं भीतर ही भीतर सोचने लगा था। तभी गाँव के पूर्वी छोर वाली नदी आ गया। तुलबुल-तुलबुल तेज़ चल रहे मंत्री जी सूखी नदी में भी हेठिया गए। मैं और दया यादव एक-दूसरे की तरफ़ गुमसुम मुस्कराते हुए उनके पीछे-पीछे।

नदी के उस पार पहुँच कर वे यकायक पीछे मुड़े। बोले, "हँ, लड़की की शादी किस दिन पड़ी है?"

मैंने तारीख़ बतलायी, "आठ मई को। निमंत्रण-पत्र परसों-नरसों तक आप के यहाँ पहुँच जाएगा।"

"वह तो ठीक है। कल ज़रा खरडीहा बैंक पर आप चले आइये। मैं साढ़े दस बजे के आस-पास वहीं मिलूँगा।"

"क्या कोई ज़रूरी काम है वहाँ?"

"काम! अजी लड़की की शादी पड़ी है, उसमें पैसा नहीं लगेगा? आजकल लड़के-लड़की की शादी कहाँ हो रही है, सिर्फ़ रुपए-पैसे की शादी हो रही है। 25-50 हज़ार तक, आपको जितनी ज़रूरत हो, कल आकर ले जाइये।"

इतना सुनते ही मेरी आँखें भरभरा आयीं। रुँधे कंठ से कहना पड़ा, "जिसके सिर पर आप जैसा शुभेच्छु संरक्षक हो, उसका भला पैसे के अभाव में काम रुकेगा। जब पैस की ज़रूरत पड़ेगी, तब मैं ख़ुद ही कहूँगा। फ़िलहाल आप की दया से रुपए-पैसे की कोई ज़रूरत नहीं है।"

"तब अति उत्तम। मैं जा रहा हूँ। किंतु इसके लिए कभी भी, तनिक संकोच मत कीजिएगा।"

आप घबरा गए न! क्या करूँ, यादों की बेइंतहाँ लंबी रीलें जल्दी ख़त्म होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का नाम ही नहीं ले रहीं। किसी ऐसे स्मृति पुँज आत्मीय जन का बिछोह, ज़रा सोचिए, कितना त्रासद, कितना मर्मांतक हो सकता है! सर्वेश्वर की चंद पंक्तियों के धुँधले बादल मस्तिष्क में तैर उठे हैं—

मेरे दोस्तो!
तुम मौत को नहीं पहचानते
धीरे-धीरे अँधेरे के पेट में
सब समा जाता है
फिर कुछ होता नहीं
होने को कुछ रह भी नहीं जाता
ख़ाली बोतलों के पास
ख़ाली गिलास सा
झण्डे के पास देश
नाम के पास आदमी
प्यार के पास समय
सब पड़ा रह जाता है
ख़ाली बोतलों के पास
ख़ाली गिलास सा।

और सचमुच सब कुछ पड़ा है। सब कुछ को छोड़कर एक बहुत प्यारा हमदर्द, एक बेहद उम्दा अपना शुभेच्छु तथा मनुष्य जीवन का एक बड़ा पारखी कलाकार अपनी तमाम ऊर्जा, सामर्थ्य, शक्ति, रचनात्मकता और ढेर सारी उच्छाइयों के साथ हमेशा-हमेशा के लिए चला गया है। बोतलें और गिलास ख़ाली पड़े हैं—ग़ाज़ीपुर स्थित उसका आवास ज्यों का त्यों है। उस आवास से जुड़ा बाहरी बरामदा भी उसी तरह पूर्ववत है। किंतु वहाँ रखी वह आरामकुर्सी अब ख़ाली है। क्योंकि उसपर बैठने वाली वह अजीम शख़्सियत अब नहीं है। खरडीहा में खड़ा इण्टर कालेज भी है। उसके बीचोबीच स्थापित शिवजी का गगन-चुम्बी मंदिर भी है। थोड़ी ही दूर स्थित सम्प्रति उदास, पतनोन्मुख, महाविद्यालय भी है। किंतु इन सभी जगहों पर अकस्मात-अनाहूत उदित हो जाने वाला वह देदिप्यमान नक्षत्र अब नहीं है। अब न वह छतनार विशाल वृक्ष है, न उसकी सुखद शीतल छाँव ही, जिसके तले मेरे जैसे थके-हारे न जाने कितने पथिक विश्राम पाते थे। अब तो बस, उसकी यादें, यादें और सिर्फ़ यादें रह गई हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंततः उस तपः पूत महामानव की पावन स्मृति को प्रणत प्रणाम! कोटिशः नमन!!

और आख़िर में आइये जानें, मेरे द्वारा संपादित 'बृज मंगल राय स्मृति विशेषांक' से उद्धृत कुछ उद्गार

(अ) आलोचना एक कड़वी औषधि है, जिसका सेवन स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक है। निंदक के लिए कुटी छवाकर निकट रखने की बात कही जा चुकी है। सप्ताहिक 'पर्दाफाश' सं. सुरेंद्र नाथ तिवारी उर्फ़ बवंडर, भी आलोचना प्रधान एक अख़बार रहा, जिसका जन्म ही हुआ, बृज मंगल राय की आलोचना करने हेतु। दोहा, चौपाई, कविता, सवैया आदि द्वारा मंत्री जी के नाम पर ऐसा सब छपता था, जिसे पढ़-सुनकर कोई व्यक्ति बौखला जाता, किंतु अजब की सहन शक्ति थी मंत्री जी में भी। इन आलोचनाओं के संबंध में पूछे जाने पर उन्होंने हँसते हुए कहा था, "दोनों आदमी का उद्देश्य एक ही है। हम सिर्फ़ कार्य करते हैं और त्रिपाठी जी (सुरेंद्र नाथ) उसकी रखवाली करते हैं।"

—डॉ. अब्दुल रज्जाक अंसारी

(आ) बृज मंगल राय इस करइल क्षेत्र के भीतर, इस ग़ाज़ीपुर ज़िले के भीतर पुनर्जागरण के पुरोहित हैं। उन्होंने आजीवन सादा जीवन, सादा भोजन तथा सादे लिबास का वरण किया, परंतु उनके विचार उच्चगामी रहे। ...बंगाल के पुनर्जागरण युग में सर आशुतोष मुखर्जी ने प्रतिज्ञा की थी कि बंगाल के प्रत्येक गाँव में मैट्रीक्युलेट पैदा कर दूँगा! उन्होंने किया भी। ग़ाज़ीपुर के इस प्रखण्ड के लिए, बृज मंगल जी की भूमिका भी यही रही।

—कुबेर नाथ राय, शीर्ष निबंधकार

(इ) उन्होंने बापू के सत्याग्रह आंदोलन का सफलता पूर्वक संचालन किया तथा स्व. तारकेश्वर पाण्डेय (कांग्रेस सांसद) बलिया के साथ दिल्ली मार्च भी किया। फलतः 1942 के 'करो या मरो' आंदोलन में इनके ऊपर दफा 129 का वारंट निकला, परंतु ये पकड़ में नहीं आये और भूमिगत हो गए। घर की सारी सम्पत्ति नीलाम हो गई। सरकारी ताला लग गया। छोटे भाई बृजनाथ राय की सरकारी नौकरी छूट गई,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किंतु स्व. राय गौरांग सरकार के सम्मुख झुके नहीं। अंततोगत्वा गिरफ़्तार हुए, परंतु कुछ ही समय बाद छोड़ भी दिये गए।

—डॉ. लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

(ई) 24 अप्रैल 1943 चीतनाथ घाट (ग़ाज़ीपुर) पर भोर में 3:30 बजे बैठा मैं प्रतीक्षा कर रहा था। उस पार से एक नाव आनी थी। उस नाव पर 'रणभेरी' की प्रतियाँ थीं।.....अकस्मात घाट के मंदिर के पिछवाड़े से एक थैला मेरी गोद में गिरता है। टटोलकर समझ लेता हूँ कि इस थैले में 'रणभेरी' की ही फाइलें हैं। तब तक लोटे में गंगा जल लिए, उरेबी गंजी पहने और आधी धोती घुटने तक लपेटे एक साँवला-सा व्यक्ति, मुझे दो रुपया देकर कहता है, "ए बबुवा, इ कुल हमें दे द, ऊ चारो-पाँचों जने (राम दत्त, रघुनायक, नीबू, नगीना तथा कपिल देव) गिरफ्तार हो गइले। तू धर्मशाला पर मति जइह। गंगा जी का तीरे-तीरे रेलवे स्टेशन भाग जा। पुलिस बहुत चौकस बा। हम बृज मंगल राय हँई, चिन्हिला" मैंने प्रणाम किया और मुड़ गया। नाम जानता था परंतु यह पहला परिचय था। बाबू बृज मंगल राय गंगा-स्नानार्थी के रूप में 'रणभेरी' की फाइल मुझसे लेकर, पुलिस बल को चकमा देकर स्वयं बच निकले और मुझे भी गिरफ़्तार होने से बचा लिए।

—सत्य केतु दुबे

(उ) अपने या अपने सगों की प्रशंसा में संकोच करना मेरा स्वभाव है। अत: संकोच के कारण मेरे शब्द उस स्थान को नहीं स्पर्श कर पाएँगे, जहाँ उनके सत्कार्यों का वर्चस्व प्रतिष्ठापित है। फिर भी चंद शब्दों में इस तथ्य को उजागर करना चाहूँगा कि उन्होंने करइल को, जो शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था, मात्र अपने बल-बूते पर जनपद में शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बना दिया। उन्होंने अनेक शिक्षित युवकों को रोज़गार दिया और विभिन्न विभागों में दिलवाया भी।

—श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ऊ) बहुत सामान्य पृष्ठभूमि लेकर, कम शिक्षा प्राप्त, विषम और विसंगत परिस्थितियों से निबटते हुए ...सादगी-स्वाभिमान और निष्कपट इंसानियत की सहज आंतरिक प्रेरणाओं में संवेदनशील लोगों की कर्मठता और उद्देश्यप्रियता ने मुझे हमेशा आकर्षित किया, और ऐसे लोगों का मिथक एक ऐसा प्रभामण्डल बनाता है, जिसे तॉल्स्तॉय के शब्दों में 'औपन्यासिक टाइप' पात्र कह सकते हैं। जितना जाना-सुना, उस आधार पर क्या बृज मंगल टाइप में नहीं दिखते?

—**हृषीकेश**, अपने वक़्त के, ग़ाज़ीपुर के प्रखर बौद्धिक

(ए) ...अतः जब डॉ. राम बदन राय ने अपने 'मंत्री जी' पर कुछ लिखने के लिए कहा तो मैं असमंजस में पड़ गया। लेकिन दुहराए-तिहराए गए आग्रह को टालते जाना संभव नहीं रहा।

स्व. मंत्री जी पर लिखने की प्रेरणा डॉ. राम बदन राय की बातों से ही मिली। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि वे भी एक लंबे अरसे तक उनके आरूढ़ विरोधी रहे, छात्र जीवन में उनके विरुद्ध ख़ूब भाषण दिया करते। दरअसल करइल क्षेत्र राजनीतिक दृष्टि से तीन गुटों में बँटा था— प्रमुख गुट मंत्री जी और विजय शंकर बाबू के साथ था, दूसरा बाबू सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह के साथ, और तीसरा उन बचे-खुचे लोगों का था जो सरजू पाण्डे के प्रभाव में कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सटा रहता था। बहुतों का आक्षेप है कि विजय शंकर बाबू को सामने खड़ा कर 'मंत्री जी' ने सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह जैसे तेजस्वी व्यक्ति को कभी जमने नहीं दिया। ...किशोर राम बदन जी द्वारा 'मंत्री जी' की भर्त्सना उसी राजनीतिक बँटवारे का प्रतिफल था। उसी आरंभिक उत्साह में डॉ. राय ने एक लंबी पद्य-व्यंग्य रचना भी लिख मारी थी। ...व्यक्तिगत उलझाव और पूर्वाग्रह के चलते उक्त व्यंग्य-रचना की तद्भवता और भदेसपन बहुत मारक तो है, किंतु एक पक्षीयता और अशालीनता के चलते यह साहित्यिक नहीं रह पायी है। डॉ. राय भी उक्त किशोर अभिव्यक्ति के लिए अब काफ़ी दुखी हैं। इस ज़बरदस्त विरोध के बावजूद मंत्री जी ने उन्हें अपने महाविद्यालय में नियुक्त किया और लोगों की शिकायत पर इतना भर कहा कि 'कम से कम लिखता-बोलता तो है।'

—**डॉ. पी. एन. सिंह**, हिंदी साहित्य के ख्यातिलब्ध आलोचक

(ऐ) बेहिचक कहना चाहूँगा, कि बाजवक़्त पत्रकारिता से जुड़े होने के बावजूद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे बकायदे कभी लिखना नहीं आया, इसलिए संपादक (राम बदन जी) से गुजारिश है कि मेरे इन जज्बातों को, अनगढ़ अल्फाजों को दुरुस्तगी का मुकम्मल जामा पहनाकर ही साया करवाएँ।

'ब्यथित' तो क़रीब-क़रीब शुरू से ही रहा मैं। किंतु बाबू बृज मंगल राय के इंतकाल ने मेरे इस ग़मजदा तखल्लुस पर शायद असलियत की मुहर लगा दी। ...बहुत तालीमयाफ्ता न होते हुए भी मंत्री जी ने इलाक़ाई अदब की ज़रूरत को बड़ी शिद्दत के साथ न केवल महसूसा, बल्कि इसके लिए काफ़ी कुछ किया भी। सन् 1972 में डिग्री कालेज खोलकर इलाक़े के हज़ारों ज़रूरतमंद ग़रीब बच्चों को उन्होंने ऊँची तालीम मुहरूया करायी। दूर-दराज न जा सकने वाली बच्चियाँ तक काफ़ी पढ़-लिख गईं। ...वाक़ई वे बहुत तरक़्क़ी पसंद इन्सान थे। करइल की तरक़्क़ी के लिए उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी दाव पर लगा दी।

—बालेश्वर राय ब्यथित 'बेलसड़िया'

(ओ) *काया की लघुता की प्रभुता मैंने देखी*
राख उगी बिरवा-उर्वरता, मैंने देखी
कुटिल मौसमी शीत-ताप के अनुतापों में
बढ़ते बिरवे की समरसता सबने देखी।

तन विवेक का माप नहीं है, मैंने देखी
निर्धनता अभिशाप नहीं है, मैंने देखी
तड़क-भड़क से दूरदेह में गंजी डाले
गांधी जी की छाप कहीं है सबने देखी।

हे बृजमंगल मंगल-सुत करइल-जननी के
सुखद भोर तुम जनमानस दुख भव रजनी के
था जीवन संघर्षों का पर्याय तुम्हारा
हम आजीवन ऋणी हुए तेरी करनी के।

—राम बदन राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मल्लविद्या के अद्वितीय साधक पुण्य श्लोक : मंगला राय

मेरी दृष्टि में अपने वक़्त के लासानी, लाजवाब अनुपमेय महामल्ल मंगला राय जी पूरी तरह प्रकृति प्रदत्त पहलवान थे। किसी के मार्गदर्शन से, सिखाने-पढ़ाने या खिलाने-पिलाने से वे इस मुकाम तक पहुँचे, ऐसा मैं नहीं मानता। कोई कहता : उनके प्रथम गुरु उनके अपने ही चाचा राधे राय पहलवान थे, जिनके साथ वे रंगून आकर कुछ समय रहे। कोई कहता, उनके असली उस्ताद गाँव के ही रामरुचि राय जी थे तो कोई बताता, उन्हें नरायनपुर जिला बलिया के बाबुओं ने अपने यहाँ रखकर खिलाया-पिलाया, पहलवान बनाया। गोया जितने मुँह उतनी बातें। उन्हें आगे बढ़ाने में सहायक कई लोगों द्वारा गिनाए जाने वाले ऐसे अनेक कारक, मुझे यथार्थ नहीं लगते हैं।

जहाँ तक मेरी समझ में आता है, शैशवावस्था से प्रारंभ करके प्रौढ़ा अवस्था तक की उनकी उत्तरोत्तर बढ़ती तासु दुगुन कपि रूप दिखावा शक्ति, करिश्माई कला तथा आग माफिक फैलती लोक-प्रसिद्धि की मैराथन दौड़ किसी ईश्वरीय चमत्कार जैसी रही है। वे पैदाइशी पहलवान थे। उनका जो कुछ भी था, ज़्यादातर जन्मजात था।

बाल्यावस्था के दहलीज लाँघते-लाँघते वे अपने इलाक़े-करइलांचल के कीर्ति केतु बन गए। किशोरावस्था पार करते-करते वे ग़ाज़ीपुर के गौरव कहे जाने लगे। युवावस्था आने तक उन्हें प्रदेश का शेर कहा जाने लगा। प्रौढ़ावस्था से पूर्व ही वे पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र तथा आंध्र आदि के कई मानीखेज मल्लों को मात दे डाले। कुश्ती कला के दीवानों द्वारा उन्हें भारत भीम के तखल्लुस से नवाजा जाने लगा। यानी देखते ही देखते मामूली दरिया का पानी भीषण बाढ़ का रूप ले लिया, जिसमें एक से बढ़कर एक बरगदी दरख़्त उखड़-बह गए। यूरोपीय मुल्क रोमानियाँ के प्रसिद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहलवान कांटेस्टाइन को पछाड़ देने के बाद तो वे शोहरत के शिखर पर जा पहुँचे, विश्व विश्रुत बन गए। उनकी अपराजेय क्षमता का चतुर्दिक डंका बजने लगा।

इसे मेरा बहक कर बोलना कहें या उनके प्रति असीम लगाव का अतिरेक, विश्वविजयी गामा के बाद की पीढ़ी में ऐसी लोकप्रियता, ऐसी कीर्ति किसी अन्य एशियाई पहलवान को, इतनी जल्दी मिल गई हो, मुझे नहीं मालूम। शारीरिक रूप से उनके बुरी तरह थकने के क़रीब यहाँ ना जाने कितने मेहरूद्दीन और चंदगीराम पैदा हुए, किंतु इनमें से कोई भी, लोगों के दिलों में बने उनके स्थान-सम्मान को आज तक नहीं छीन पाया। मुँह से बरबस अनायास निकल जाता है, 'अरे वाह रे बाबू मंगला राय! अनगिन अहंमन्यों को आसमान दिखा देने वाले, तुम धन्य हो, अनन्य हो, प्रणम्य हो।'

ख़ूबसूरत भी आला दर्जा के थे

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक पद्मावत में जायसी ने कहीं कहा है, का सिंगार ओहि बरनउँ राजा, ओहि के सिंगार ओही पर छाजा। यही क्यों, सीता के सौंदर्य से संदर्भित शीर्षस्थ कवि तुलसी की ये अर्द्धालियाँ तो जायसी के कहे का भी अतिक्रमण कर जाती है, 'सब उपमा कवि रहे जुठारी, केहि पटतरउँ...' या 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी...' या 'छवि गृह दीप सिखा जनु बरई' आदि आदि। संप्रति मंगला जी को याद करते हुए इस तरह की अनेक उक्तियाँ मेरे मन मस्तिष्क में उमड़-घुमड़ रही हैं।

क्या कभी आपने, उन्हें रेखीया-उठान उम्र में देखा है? अगर नहीं, तो जाकर उनसे पूछिए, जो कम से कम पचहत्तर के पार हैं, और उन्हें चढ़ती जवानी में देखने का भरपूर लुफ्त उठा चुके हैं। उनकी जवानी की रवानी देखने का सुख-सौभाग्य तो इन पंक्तियों के लेखक बदनसीब राम बदन को भी नसीब न हो सका है। पता नहीं मैं पैदा भी हुआ था या नहीं। हाँ, चालीस के इर्द-गिर्द उन्हें ज़रूर मैंने देखा है। ढलती उम्र में मेहरूद्दीन से हुई, उनकी एक कुश्ती का चश्मदीद गवाह भी हूँ।

आज सोचता हूँ, नख-शिख सुंदर, सौंदर्य शिखर या क्या कहें, सुंदरता की साक्षात् प्रतिमूर्ति बाबू मंगला राय से भी अधिक ख़ूबसूरत किसी अन्य व्यक्ति की कल्पना की जा सकती है! 'किमि पटतरउँ', तुलसी की तरह मैंने भी दोनों हाथ उठा, अपनी हार स्वीकार कर ली है! मुझे भी कुछ नहीं सूझ रहा, मल्ल महीप, सौंदर्य निधान मंगला राय जी की उपमा के लिए। उनसे लंबे, गोरे, मोटे, छरहरे या भारी-भरकम काया वाले ज़रूर इस धरती पर हुए हैं, आगे भी हो सकते हैं। किंतु आपाद-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मस्तक उनकी जैसी सम्मोहक सुंदरता ? सवाल ही नहीं उठता। इस मायने में वे बेजोड़ रहे हैं। ऐसा उनके प्रतिद्वंद्वी पहलवानों के मुँह से भी, तमाम लोगों द्वारा सुना गया है। यहाँ राम बदन विरचित 'कश्यप कीर्ति' से ली गई, इन पंक्तियों की प्रस्तुति न सिर्फ़ समीचीन अपितु संदर्भ-सापेक्ष भी है।

चौपाई : *कुल किनवारहिं अति शुभ नामा। मल्ल मंगला राय ललामा॥*
लड़े चतुर्दिक कुश्ती नाना। बनि अजेय पग धरती छाना॥
दूज चन्द्र सम सुत श्री चंदर। बढ़ि भए मल्ल अठारह अंदर॥
बीस नहीं पहुँचे भलि-भाँती। पहुँची दूर-दूर तक ख्याती॥
बल नीधि श्री सौंदर्य निधाना। लखि लागहिं कंदर्प समाना॥
भाल कपोल नासिका काना। नैन अधर नहिं जाय बखाना।
मनु विधि निज कर साजि सिराजा। ग्रीवा कंध वक्ष बनराजा॥
प्रति पल मुख मुस्कान सुहाई। मुश्क रान कस करूँ बड़ाई॥
इंच तीनि, फुट छौ, धप गोरे। सम ससि पूनम क्वार अंजोरे॥
नख-सिख अंग-अंग छबि छाये। जो देखे देखत रहि जाए॥
जानहिं दाव-पेंच बहु नीके। किंतु समक्ष टाँगि सब फीके॥
टाँगि दाव जब जहाँ लगाए। का प्राणी पाहन ढहि जाए॥

दोहा : *घूमि-घूमि गहि गहि पकड़ि, महि पटके बहु माल।*
लाल बचा नहिं देस केउ, जो आकर दे ताल॥

चौपाई : *सुनि सोहरत योरप से आया। कण्टेस्टाइन हाथ मिलाया।*
किंतु मिनट भर ठहर न पाया। मंगला जी ने धूल चटाया॥
नगर गाँव घर बनी कहानी। मंगला का नहिं कोई सानी।
कोई भीमसेन सम आँके। कोई जरासंघ सम बाँके॥
कोई कहे अंश हनुमाना। सम्प्रति नहिं मंगला सम आना॥

ग्राम सुरक्षा संघ बनाए। निज निर्देशन सफल चलाए॥
जूआ चोरी सीना जोरी। की इति किए शांति चहुँ ओरी॥
गँगहर पर श्रमदान कराई। पुर हित दिये बाँध बँधवाई॥
भूमि दिए सबसे दिलवाए। पुनि कालेज तहाँ खुलवाए॥
निर्धनी धनी सभी पुरवासी। किए सुखी नहिं रहीं उदासी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चहूँ मंगल मंगला के करईं। मंगल-काल स्वर्ण जुग रहई॥
पहुँचि-पहुँचि झगड़े सुलझाए। पुर मँह राम राज ले आए॥
बड़ी कीर्ति यह छोटी कविता। जैस दीपक सम्मुख सविता॥

छंद : जोगा मुसाहिब के जनक श्रीराम चन्द्र जी धन्य है
कुल जेहि जनमे मल्ल नर वर मंगला जी अनन्य हैं।
है धन्य ग़ाज़ीपुर जनपद धन्य जोगा ग्राम है
बस एक मंगला राय से जिसका जहाँ में नाम है।

पारिवारिक परिचय

मंगला राय जी कब-कब, कहाँ-कहाँ तथा किस-किससे कुश्तियाँ लड़े, उनमें किन-किन कलाओं-दाँवों का इस्तेमाल किया, इसका व्यवस्थित ब्यौरा मेरे पास नहीं है। सही-सटीक प्रामाणिक जानकारी तो मुझे इस बात की भी नहीं है, कि सन् उन्नीस सौ सोलह के अगस्त माह के किस दिवस तिथि को किस समय वे पैदा हुए। जहाँ तक पारिवारिक परिचय, या कहें कुर्सीनामा की बात है, मैं उनके पचीस पुश्त तक के पुरुष-पूर्वजों के नाम गिना सकता हूँ। किंतु यहाँ मुझे सिर्फ़ इतना ही उल्लेख कर देना पर्याप्त लगता है—

रामदत्त राय, सुदर्शन राय, शिव परसन राय, सुदीष्ट राय तथा दिलीप राय (पितामह)...

मंगला राय जी के पूर्वजों में प्राय: सभी अच्छे पहलवान रहे हैं। मेरे गाँव के बानबे वर्षीय श्री सुबच्चन राय जी के अनुसार महीप राय, दिलीप राय, नौजादिक राय, अजोध्या राय, चन्नर राय तथा राधे राय, सबके सब बड़े ही दमखम वाले छ: फुटे पहलवान थे। इनमें से कुछ तो सात फुट तक के हुए हैं। उनके चाचा राधे राय के पास शक्ति, सुंदरता तथा कला तीनों थीं। उनकी ख्याति सुदूर बंगाल तथा रंगून तक फैली हुई थी।

मंगला जी के 'अखाड़ा परिवार' के क्रमश: अच्छे पहलवानों में उनके अनुज कमला राय, राजाराम यादव, हनुमान राय तथा दीनानाथ अधिक उल्लेखनीय हैं। बद्री पहलवान, रेवतीपुर के रामबिलास, गोरखनाथ, उदय नारायण, शिवदत्त, रमाकांत, रणजीत, काशी, सुक्खन, झारखंडे, कृष्णानंद उर्फ़ गागा, यज्ञदेव, रामजी, बलदेव, ताकेश्वर, महेंद्रनाथ, छांगुर तथा भरत के नाम भी महत्त्वपूर्ण हैं। अखाड़े में दूर-दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पहलवान दाँव-पेच सीखने आते थे। राजाराम, हनुमान तथा दीना को लेकर लोगों की ज़ुबान पर काफ़ी दिनों तक चढ़ी रही यह तुकबंदी भी कम उल्लेखनीय नहीं है—

रण में राजाराम अखाढ़ा
हिम्मत में हनुमान अखाढ़ा
दीना जैसा जहाँ नगीना
मल्ल कला की खान अखाढ़ा

महामल्ल के चेलों में राजाराम जी न केवल विलक्षण प्रतिभा संपन्न, अत्यंत फुर्तीले प्रसिद्ध पहलवान थे, बल्कि एकदम पारिवारिक सदस्य की तरह, उनकी लँगोटिया सहयोगी, कुश्ती अभियानों में साये की तरह साथ रहने वाले पायक, सेवक, नेहा अधिकारी, बहुत कुछ थे।

मंगला जी के माता-पिता तो बड़े ही लहीम-सहीम विशाल शरीर के थे, किंतु पत्नी चिरई देवी 'यथा नाम तथा काया' चिरई जैसी ही थीं। सुनने में आता है कि बचपन में मायके वाले उन्हें चिरई-चिरई कहकर चिढ़ाने लगे और धीरे-धीरे उनका यही नाम प्रचलन में आ गया। ससुराल में आने के बाद वे थोड़ी मोटी-झोटीं तो ज़रूर हो गई। किंतु लंबाई ज्यों की त्यों ठिगनी ही रह गई। कदाचित इसीलिए मंगला जी के लड़के रणजीत जी व राम व्यास जी उनके समान लंबे-तगड़े ना हो सके। पिता की विरासत के रूप में कुश्ती की कला तो रणजीत राय को ज़रूर मिली, किंतु शक्ति सामर्थ्य नहीं। फिर भी जनपदीय पहलवानों में वे काफ़ी दिनों तक शीर्ष पर बन रहे। महा रणों के 'रणजीत' तथा महाबली 'बलदेव' की जोड़ी भी कुछ दिनों तक ख़ूब चर्चा में रही।

वागेश्वरी देवी नाम की मंगला राय जी की एक बहिन भी थीं। अगर मंगला जी है फुट छः फुट ढाई ईंच के थे, तो उनकी यह बहिन भी छः फुट से कम ऊँचाई की नहीं थीं। थीं तो वे बला की ख़ूबसूरत, किंतु उनकी पहाड़ जैसी विशाल काया को देखकर मैं दंग रह गया था। तब वे मायके आई हुई थीं और मेरी उम्र छः सात की रही होगी। मैंने ऐसी भीम काय, नख-शिख शानदार, अजूबा औरत आज तक नहीं देखी। एकदम साँचे में ढली, संगमरमर की विशाल सुंदर प्रतिमा की तरह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब मेरी उम्र यही कोई तेरह-चौदह साल की रही होगी। गाँव से सटकर पूरब बहने वाली गंगहर सूख चली थी। उन दिनों, जिधर गाँव की दक्षिणी सीमा ख़त्म होती है, सूखी नदी के ढालुआँ किनारों पर सुबह शाम भैंसे चरा करती थीं। गर्मी के दिन थे। मैं हवाखोरी करने उधर ही जा पहुँचा। वहाँ काफ़ी लोग पहले से जमा थे। बढ़ रहे शोर गुल के बीच पहुँचकर देखा कि दो ज़बरदस्त भैंसों की जानलेवा जंग जारी है। उनकी घुमावदार सींगे एक दूसरे में बुरी तरह फँस चुकी थीं। वे ख़ुद तो उन्हें निकालने में थक ही चले थे, गाँव के कई नौजवान ही थक-हारकर बैठ गए थे। सबकी हिम्मत-अक्ल जवाब दे चुकी थी। आख़िर में कोई चारा न देख एक लड़के को लोहार के यहाँ से आरी लाने के लिए भेज दिया गया। यह लगभग तय था कि किसी भी भैंसे की एक सींग ज़रूर काट देनी पड़ेगी।

तभी "उधर देखा मंगल चाचा आ गए"। भीड़ से निकली इस आवाज़ के साथ ही सबकी निगाहें उधर उठ गई, जिधर से मंगला जी भागे चले आ रहे थे।

"अरे भाई, का हल्ला मचा है?" उन्होंने दूर से ही पूछा और तेज़ चलकर वे फौरन सबके पास आ पहुँचे।

इधर सींगों को निकालने-छुड़ाने में इस वक़्त भैंसे कुछ शिथिल पड़ चुके थे। हाँ, रह-रहकर उनके मुँह-नाक से निकलने वाले फेंचकुर और गेहुवन साँप जैसी फूँ-फूँ अब भी जारी थी। पैरों की हरकत के साथ उनकी पूँछों का रह-रहकर पटका जाना भी अभी पूरी तरह नहीं थमा था।

पहलवान ने आते ही सबसे पहले सबको दूर हट जाने के लिए कहा। फिर वे आनन-फानन में दोनों ज़बरदस्त भैंसों के बीच जा पहुँचे। मैंने अपनी आँखों से देखा, उन्होंने पलक झपकते भैंसों की सीगों को अपनी लौह हथेलियों में पकड़कर, इस तरह अलगा दिया, जैसे अभी-अभी कुछ हुआ ही ना हो। इसके साथ ही दोनों भैंसे पीछे मुड़ कर पूँछ पटकते हुए भाग चले।

नाग पंचमी के अगले दिन की छठईयाँ। इस दिन मेरे गाँवों में ना जाने कबसे लंबी कूद, ऊँची कूद तथा कुश्ती आदि की प्रतियोगिताएँ होती हैं। छोटे स्तर पर यह परंपरा आज भी हाँकती-कराहती जीवित है। मंगला जी के जमाने तक उस दिन या एक दिन पहले से ही, दूर-दूर से रिश्तेदार, दोस्त कुश्ती देखने के लिए गाँव में घर-घर जमा हो जाते थे।

तो उस वर्ष की छठईयाँ के दिन ख़ास लोगों को बैठने के लिए पहले से ज्यादा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुर्सियाँ अखाढ़े के समीप रखी गई थीं। जिन पर मंगला राय जी के अगल-बगल काशी, मथुरा और आगरा आदि से आए मेहमान मल्ल बैठ गए थे। उन्हीं में से किसी ने कहा, "पहलवान साहब! हम लोग आपकी कुश्ती देखना चाहते हैं। अगर संभव हो तो..."

"बिल्कुल संभव है। यह कौन सी बड़ी बात है!" उन्हें आश्वस्त करते हुए मंगला राय ने वहाँ खड़े किसी व्यक्ति से तुरंत कहा, "जा हो, दुआर पर जाकर कमला से कहीं दऽ कि तनी लंगोटा-जाँगिया ले चलि आवँसु।"

जल्दी ही कुश्ती का कार्यक्रम शुरू हो गया। पहले छोटी कुश्तियाँ हुईं, फिर मझोली और अंत में कुछ बड़ी। तीन बजते-बजते मंगला कमला दोनों रणबांकुरे लँगोट-जाँगिया चढ़ाकर अखाढ़े पर आ गए। उनके चढ़ते ही आबाल वृद्ध पूरे मजमे की निगाहें भी अखाड़े पर चढ़ गईं। इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए, इधर-उधर मेले में घूम रहे लोग भी दौड़ पड़े। हर तरफ़ निर्वाक विस्मय की अपलक टक-टकी! सूई पटक सन्नाटा! जैसे सारी सृष्टि की अविराम अनुवरत गतिशीलता यकायक थम-ठहर गई हो।

अजीबो-गरीब नजारा! अंग-प्रत्यंग सुगठित क़द काठी दोनों एक जैसी। सिर्फ़ वर्ण (कलर) का अंतर। यानी एक गौर वर्ण, हल्का साँवला, "श्यामल गौर मनोहर जोड़ी"। सृष्टि सर्जक की श्रेष्ठतम परिकल्पना! सुंदरतम् संरचना! क्या कहें द्वापर कालीन अखाड़े पर महाबली, महाकाय भीम, जरासंघ! या रंगभूमि में बिना धनुष बाण मल्लभेष में साँवले-गोरे राम-लखन! किंतु नहीं, 'अवसि देखिए देखन जोगू' या 'जो देखे, देखत रह जाय' शब्दावलियों को चरितार्थ करते ये थे सहोदर भाई मंगल-कमल, मंगला-कमला। इस मनोहारी अनुपम परिदृश्य का आनंद लेने के लिए, नीचे से देख पाने में असमर्थ बच्चे पास खड़े पेड़ों पर चढ़ बैठे थे।

मैंने कई मशहूर मल्लों को, ऐसे भी, फ़िल्मों में भी देखा है किंतु उस जैसी अनोखी सौंदर्य छटा मुझे कहीं भी कभी भी देखने को न मिली। ऐसे अनेक रंगों-ढंगों से लबरेज, एक से बढ़कर एक कला कौतुकता, साहसिकता लिए यह घटनावली जल्द ख़त्म होने वाली नहीं। लगता है जैसे माता पर काली देवी के गर्भ से उन्होंने जन्म नहीं अवतार लिया था। राम, कृष्ण तथा सिद्धार्थ ने क्रमशः अवध, ब्रज तथा कपिलवस्तु की धरती को धन्य किया था और इस मल्ल प्रवर ने जोगामुसाहिब ग़ाज़ीपुर की धरा को। ऐसे युगांतकारी पुरुष को अनंत अभिवादन।

पुर जनपद जन किया उजागर, गुण आगर करुणा के सागर॥
जिसने भारत में छलका दी, मल्ल कला के रस की गागर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस जनमन के मृदुल मनोहर, मन मयूर निश्छल सुभाय को॥
प्रणत नमन मंगला राय को॥

मुख मंडल कमनीय क्रांति को, गरिमा मय गंभीर शांति को।
यत्र तत्र सर्वत्र जगा दी, जिसने कुश्ती कला-क्रांति को
अनुपमेय अद्‌भुत अजेय, उस कुंदन सरिस विशालकाय को।
शत वंदन मंगला राय को॥

बाधित विद्यालय तैयारी, की हल भूमि-समस्या भारी
पुनः सुरक्षा समिति सजाकर, जिसने पुर की, की रखवारी
ऐसे ज्योतिर्मय जोगा के, युग प्रतीक के कमल पाय को
कोटि नमन मंगला राय को॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे कोई मिल गया था, सरे राह चलते-चलते

(एक अनमोल-अजीज दोस्त की दिलकश यादें)

बात की शुरुआत अपनी ही एक ग़ज़ल से करता हूँ, जिसे 'वीणा' इंदौर ने, 1998 के सितंबर अंक में पृष्ठ 50 पर छापा था—

कहाँ किस मोड़ पर मिल जाये कौन, क्या पता
हो जाये नेक काम, क्या पता कोई खता
मुहब्बत ज़िंदगी है, ख़ुदा है, मैंने जाना
अमां तू क्या समझा इस बाबत, तू ही बता
दिल घायल, है नफ़रत जदा, इससे क्या हुआ
तू हमदर्दी का मरहम तो लगा, प्यार जता
ये सच है छोड़ जाएगा यहाँ ही, सब कुछ तू
रहेगी नेकी-बदी तेरी यहाँ अलबत्ता
दिल की सच्ची आवाज़ होती शायरी है—
तू इसे जो भी कहे, गीत ग़ज़ल नज़्म क़ता

कहाँ, किस मोड़ पर...ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) ज़िले के युसुफपुर—मु. बाद क़स्बे में इंसानियत से आकंठ लबरेज एक बहुत बड़ा जहीन-हसीन आदमी रहता था। सन् 1980 के आस-पास वह मुझे यकायक मिल गया था, मु. बाद चौक से शहनिंदा जाने वाली सड़क पर, ब्लाक मुख्यालय के इर्द-गिर्द। मैं पश्चिम से पूरब जा रहा था। वह पूरब से पश्चिम आते हुए लबे सड़क पर मुझे घेर लिया। मुस्कराते हुए बोला, "क्या आप मुझे अपना कुछ क़ीमती वक़्त दे सकते हैं?"

"हाँ क्यों नहीं, कहिए?" और मेरी सहज स्वीकृति पाते ही वह ख़ूबसूरत नौजवान, मुझे चाय-नाश्ते की एक ऐसी दुकान पर ले गया, जिसे क़स्बे के अलावा बाहरी लोग कम ही जानते होंगे। मुझसे पूछकर उसने दुकानदार से कुछ खाने-पीने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की चीज़ें माँगी और इत्मीनान के साथ कहना शुरू किया—

"यहाँ कुछ लोग मुझे शहाब कादरी के नाम से पहचानते हैं। पूरा नाम शहाब हसनैन कादरी है। मेरा ग़रीबख़ाना यहाँ (मु. बाद) से क़रीब एक किलो मीटर दूर युसुफपुर में है। घर पर ही एक प्रेस (उजाला प्रिंटिंग प्रेस) बिठा रखा हूँ, जहाँ से अपने संपादन में एक साप्ताहिक पत्र 'अगुआ दस्ता' निकालता हूँ।"

"हाँ तो, आप मुझसे क्या चाहते हैं? इसमें मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?" मेरी आवाज़ में अनायास उपजी कुछ रुखाई थी। कहा, "आपका 'अगुआ दस्ता' मैंने कहीं देखा ज़रूर है। कमोबेश प्रभावित भी हुआ, किंतु कुछ बहुत ख़ास नहीं।"

"'दरअसल कुछ ख़ास लिखने वालों की, कम से कम अपने क़स्बे में, निहायत कमी है। अख़बार का आधा से अधिक हिस्सा, उलूल-जुलूल मुझे ही भरना पड़ता है।...आपको पत्र-पत्रिकाओं में मैं कई दफा देखा-पढ़ा हूँ। झूठी तारीफ़ नहीं, वाक़ई आप बहुत उम्दा और सम सामयिक लिख लेते हैं। आपके राजनीतिक व्यंग्य तो ला-जवाब होते हैं...बड़ी इनायत होगी, अगर हर हप्ता कुछ हमें भी लिखकर दे दिया करें।" वह मुस्कराते हुए मेरी आँखों में झाँका।

"सो तो ठीक है मगर...ऐसा है, मैं कई बाहरी पत्र-पत्रिकाओं से जुड़ा हूँ। इसीलिए हर सप्ताह कुछ लिखकर दे पाना, मेरे लिए मुमकिन न होगा। और शायद आप यह भी जानते होंगे, कि मैं एक मामूली टीचर हूँ। कालेज जाना पड़ता है, क्लास लेने पड़ते हैं। घर पर कुछ पारिवारिक दायित्व भी निभाने होते हैं। तो कहीं भी बँधकर कुछ नियमित लिख-दे पाना..."

मुख्तसर में कहूँ, तो मैं उसे बहुत टरकाना चाहा, किंतु वह शख़्स एकदम मेरे पीछे पड़ गया और हप्ता-दस दिनों के अंदर ही पूरी तरह मुझे अपनी गिरफ्त में ले लिया। मौक़ा-बेमौक़ा हम दोनों एक दूसरे के यहाँ आने-जाने लगे, सुख-दुख में शरीक होने लगे। हँसी-मज़ाक़ के साथ किसी मुद्दे-मसले को लेकर आपस में लड़ने-झगड़ने भी लगे। सप्ताह बीतता नहीं कि मैं उससे मिलने के लिए बेताब हो उठता। गो कि मेरा आवास जोगा मुसाहिब, उसके घर से 14-15 किलो मीटर दूर है और तब सड़क की हालत भी माशाअल्ला थी।

हरफनमौला जीनियस—दरअसल यह शहाब था बड़ा ही क्रियेटिव। कुछ न कुछ हमेशा करते रहना उसकी फितरत थी, शगल था। हाशिये के लोगों, मसलन कामगार महिलाओं, भंगियों, चमारों, मुसहरों, कुम्हारों तथा रिक्शा चालकों आदि की समस्याओं को उठाना, उनकी मीटिंग बुलाना, उनकी कुछ ज़रूरी माँगों को लेकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तहसीलदार, एस.डी.एम., दारोगा या बी.डी.ओ. आदि का घेराव करना, प्रशासनिक अधिकारियों के ख़िलाफ़ नारेबाजी करना, उन्हें ज्ञापन देना, ख़बर बनाना, छापना आदि-आदि। कभी-कभार कबड्डी, क्रिकेट, फुटबाल तथा बालीबाल वग़ैरह की प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाना, कवि सम्मेलन-मुशायरा कराना, किसी ख़ास शख़्सियत का अभिनंदन-सम्मान करना जैसे ढेरों काम उसके जिम्मे होते थे।

वह लगभग कम्युनिस्ट माइंडेड था और कमोबेश राजनीति से भी ताल्लुक रखता था। मार्क्स, लेनिन, एंजिल्स, मार्टिन लूथर, अब्राहम लिंकन, भगत सिंह, स्वामी सहजानंद सरस्वती, राहुल सांकृत्यायन, राम मनोहर लोहिया तथा अंबेडकर आदि उसके आदर्श थे। ऐसे महामानवों से संदर्भित उसकी समझ बड़ी पोख्ता थी। इन्हें वह ख़ूब पढ़ा था। गीता, बायबिल, कुरान तथा गुरुग्रंथ साहब आदि का चलताऊ अध्ययन भी उसके पास था। मामूली ताल्लुकात तो उसके गणिक, ज्योतिष, विज्ञान, वाणिज्य तथा कला आदि से भी थे। गीता के कुछ श्लोक उसे ज़बानी याद थे। यानी राजनीति या दर्शन ही नहीं, धर्म, समाज, अर्थ, भाषा, जंगल, पहाड़ से जुड़े अधिकांश विषयों पर वह अपनी बेसाख्ता दो टुक राय रख पाने में सक्षम था। अगर मैं कहूँ, वह हरफनमौला जीनियस, आलराउंडर फनकार था, तो कोई बेजा नहीं।

व्यथित उर्फ़ बकबक उर्फ़ बेलसड़यी—शहाब कादरी की बात की जाय और उसमें बालेश्वर राय 'व्यथित' उर्फ़ 'बकबक' उर्फ़ 'बेलसड़यी' या 'बेलसड़िया' का ज़िक्र न आए, तो इलाक़े के कई पाठक मुझे माफ नहीं करेंगे। 'अगुआ दस्ता' के संपादक-मंडल में शहाब के बाद दूसरा प्रमुख नाम बासठ पार व्यथित जी का ही छापा जाता था। व्यथित उपनाम उनका ख़ुद का रखा हुआ था, जबकि 'बकबक' तखल्लुस उन्हें उत्तरीय (उपहार) स्वरूप किसी अन्य का ओढ़ाया हुआ था। और चूँकि वे बेलसड़ी गाँव के बासिन्दा थे, इसलिए इक्के-दुक्के उन्हें 'बेलसड़िया' भी कहते थे। ख़ैर कोई कुछ भी कहे-पुकारे उन्हें फ़र्क़ पड़ने वाला न था।

व्यथित जी से सरस्वती जी नाराज थीं। वैसे ख़ुश तो उनसे लक्ष्मी जी भी न थीं। मेरी राय में वे भाषा-साहित्य या पत्रकारिता-कला के दुश्मन ही थे। मुझे लिखे एक खत में उन्होंने सरस्वती को स्वरसती की असीम अनुकंपा से... तक लिख डाला था। यानी एक-दो पैराग्राफ़ भी वे कायदे (शुद्ध) से नहीं लिख पाते थे। हाँ, भोजपुरी की कुछ कमज़ोर तुकबंदियाँ वे ज़रूर कर लेते थे। कहीं कुछ उल्टा-सीधा, बेमतलब ही सही, बोल भी लेते थे। एक साप्ताहिक पत्र का संपादक होना, उनकी साठोत्तरी उम्र के लिए कम बड़ी बात न थी। वे मगनमन अख़बार की दर्जनाधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतियाँ अपने बड़े झोले में लिए-लटकाए घूमते रहते। उन्हें दिन भर बेचते या शाम-शाम तक मुफ्त में बाँट दिया करते। जहाँ-तहाँ से विज्ञापन तथा मासिक-वार्षिक ग्राहक भी जुटाते। इस प्रकार वे शहाब रूपी नरेंद्र मोदी के लिए अमित शाह की तरह थे। अपर प्रा. स्कूल से रिटायर होने के बाद तो उनका अधिकांश वक़्त युसुफपुर स्थित शहाब के धर्मशाले में ही बीतता। शहाब भी वालिद की मानिंद उनकी ख़ूब खातिर-तवज्जो करते। उनके खाने-पीने, सोने-रहने तथा पहनने-ओढ़ने तक के ज़्यादातर इंतजाम शहाब के जिम्मे ही होता। वैसे व्यथित जी 'हम किसी से कम नहीं' टाइप निराले व्यक्ति थे। जिस ख़तरनाक ख़बर को सही-सलामत छापने में शहाब डरते थे, उसे व्यथित जी अपने नाम से बेख़ौफ़-बेअसर खुलेआम छापते। वे किसी से भी जल्दी डरने वाले जीव नहीं थे। तो अख़बार के नाते ही सही, शहाब की तरह वे भी मुझे बहुत मानते, मेरी बातों को तरजीह देते थे, जबकि उम्र में वे मुझसे तकरीबन बारह बरस बड़े रहे होंगे।

अपने ढब का अकेला, किंतु बेइंतहा महत्वाकांक्षी

खुदा को छोड़, कुछ न कुछ कमियाँ हर इनसान में होती हैं, रही हैं। मेरी जानिब एक कमी शहाब कादरी में भी ज़बरदस्त थी। कम्युनिस्ट माइन्डेड होते हुए भी, कभी वह इंदिरा के किसी दुस्साहसी निर्णय का गुणगान करने लगता, तो कभी राज नारायण की अक्खड़ सत्यप्रियता का। कभी गांधी की तारीफ़ के पुल बाँधने लगता, तो कभी निंदा की स्थिति तक उनकी कटु आलोचना। कभी चरण सिंह के कैफियत की कसीदे काढ़ने लगता, तो कभी चन्द्रशेखर की। मेरे लाख मना करने के बावजूद एक दफा तो वह निर्दल विधायकी का चुनाव भी लड़ा, किंतु नितांत अर्थाभाव एवं प्रचार-प्रसार की कमी के चलते हार गया। उसकी अपनी बिरादरी के लोगों ने भी उसका साथ न दिया। कुछ के द्वारा मेरे ऊपर तोहमत भी लगाई गई कि उसे उकसा कर राम बदन ने ही खड़ा कर दिया है। और एक वक़्त ऐसा भी आया, जब वह अपनी किशोरावस्था में, अपने इ.का. मुहम्मदाबाद में किए गए किसी नाटक में श्री कृष्ण की जानदार भूमिका के लिए दर्शकों द्वारा मिली बेशुमार शाबाशी-सराहना और शोहरत से उत्साहित हो, फ़िल्मी दुनिया में अपनी तकदीर आजमाने मुंबई जा पहुँचा। वहाँ वह अपने ज़िले के सुविख्यात साहित्यकार एवं फ़िल्म-संवाद लेखक राही मासूम रजा से जा मिला। किंतु जैसा कि उसने बताया था, इस बाबत राही ने उसकी कोई मदद न की और जल्दी ही उसे उल्टे पाँव वापस लौट आना पड़ा था। तो यह सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखते हुए, जहाँ तक अपना तजुर्बा है, वह कुछ दुस्साहसी था, जल्दबाज था। उसमें अपेक्षित धैर्य की, वैचारिक सहिष्णुता की कमी थी और वह बढ़ती उम्र के साथ ज़रूरत से ज़्यादा महत्वाकांक्षी हो चला था। अगर मैं कहूँ कि बहुत कम समय में, वह इतनी तेज़ी के साथ इतना ज़्यादा दौड़ा, इतना अधिक दौड़ा कि मंज़िल तक पहुँचने से पहले ही थक-हाँफकर ढह गया, तो ज़्यादा ग़लत न होगा और उसका ऐसा होना कोई ग़ैर कुदरती भी न था, क्योंकि इतनी मेहनत के बावजूद, अब भी ज़िले के बाहर उसे कम लोग ही जानते थे। ज़्यादा से ज़्यादा ज़िले भर में, एक सच्चे समाज सेवी, पर दुख कातर, खोजी पत्रकार या औसत राजनीतिज्ञ के रूप में उसकी पहचान ज़रूर बन चुकी थी। किंतु इन सबके बावजूद बेशक, निर्विवाद था वह अपने ढब का बे-मिसाल और लासानी। कम से कम अपने इलाक़े (करइलांचल) में तो उसके जैसा बहुमुखी शख़िसयत का आबदार आदमी अब तक मैंने नहीं देखा। अपने ढंग का वह एक अकेला था। एक शायर के चंद अल्फाज उधार लूँ तो 'चौदवीं का चाँद था या आफताब था, जो भी था तुम खुदा की कसम, ला-जाब था।'

तकलीफ़देह दुश्वारियों से साबका—एक बात की संक्षिप्त चर्चा ख़ासतौर से करना चाहूँगा कि शहाब कादरी के इर्द-गिर्द उसके जानी दुश्मन भी कम न थे, जो रूबरू कम, छुपे रुस्तम ज़्यादा थे। ऐसे दुश्मनों में कुछ तो केवल उसकी बढ़ती लोकप्रियता से जलने वाले और बेवजह टाँग खींचने वाले थे, तो कुछ पुश्तैनी, बाप-दादा के जमाने से चले आ रहे थे। दुश्मनों द्वारा किए कराए, उसके साथ हुए कम से कम दो ज़बरदस्त हादसे तो मेरी उसकी दोस्ती के जमाने में ही हुए, जिनकी बाबत यहाँ कुछ भी लिखना-बताना मुझे वाजिब नहीं लगता। अपनी ज़िंदगी से जुड़ी कई आपदाओं के मुतल्लिक वह मुझसे लंबी-लंबी बातें बता चुका था। और यह सब लगातार झेलते-झेलते उसकी मौत भी अचानक दिल के दौरे (हार्ट अटैक) से हुई थी। जबकि जिस्मानी तौर पर अभी वह एकदम जवा था। कम-अज-कम बीस-बाइस बरस अभी और उसे ज़िंदा रहना चाहिए था। मगर दीनपनाह ख़ुदा की मेहरबानी उसके लिए मर चुकी थी। शायद इसीलिए ख़ुदा के रहमोकरम से उसका यक़ीन भी उठ चुका था।

जब शहाब इस बेरहम दुनिया से रुख्सत हुआ, पूरा क़स्बा रो उठा था। पूरे ज़िले में इस बुरी ख़बर की आग लग गई थी। ज़िले का प्रायः हर बड़ा नेता, चाहे वह जिस दल का हो, अनेक पत्रकार, साहित्यकार, मुसलमान तो मुसलमान, सैकड़ों सिक्ख, हजारों हिंदू, उसके जनाजे में शामिल हुए थे। आँखों से रह-रहकर निकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ते अश्कों को पोंछते हुए, उस भीड़ की बाढ़ का एक अदना तिनका मैं भी था।

चंद लम्हों का हमदम-हमसफ़र—मेरे तईं शहाब से जुड़ी यादों का जखीरा बहुत बड़ा है। उस पर एक अच्छी-खासी किताब (नावेल या 'आवारा मसीहा' टाइप जीवनी) लिखी जा सकती है। वह मेरा दिली यार था, लख्ते जिगर दोस्त था, साथ ही मेरा बहुत बड़ा मददगार था। दो-तीन दफा बहुत बुरे वक़्त में उसने मेरी बड़ी मदद की थी। एक बार तो वह मेरे लिए फोर व्हीलर पर 'पत्रकार—अगुआ दस्ता' की तख्ती लगाए, मुझे साथ लिए, एस.पी. ग़ाज़ीपुर से भी जा मिला था, जिसके चलते अगले ही दिन एस.ओ. करीमुद्दीन पुर मुझसे हाथ जोड़ माफी माँगने आ पहुँचे थे। कहना न होगा, पत्रकार होने के नाते अधिकारी उसकी क़द्र करते थे, डरते थे।

उसकी कैफियत में शुमार, अलसुबह की इबादती रोशनी माफिक पाक मुस्कान, उसके ख़ूबसूरत चेहरे पर सदा नुमाया रहती थी। अपने वक़्त के अहम अभिनेता अमिताभ तक ही हसीन ख़ूबसूरती उसके आगे पानी भरती थी। यानी वह सिर्फ़ सीरत का ही नहीं, बुलंद सूरत का भी शहंशाह था। और इस बात का मुझे फ़ख्र था कि मेरे पास एक ऐसा अनमोल अजीज दोस्त है, जो हर सुख-दुख में साये की तरह मेरे पीछे खड़ा है। किंतु अब वह कहाँ? अब तो महज उसकी क़ीमती यादों के तोहफे भर रह गए हैं। उसकी पाक रूह को तहे दिल आदाब।

अलविदा! खुदा हाफिज!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीते कल के अँजहुरी भर पल

('मैं अछूत हूँ, चमार हूँ')

स्मृति की लड़ियों में कुछ मनके ऐसे होते हैं, जो अपनी अलग और विशिष्ठ पहचान बना लेते हैं। मानस पटल पर इन विशिष्ठ स्मृतियों की कुछ ऐसी लकीरें खिंच जाती हैं, जो काफ़ी गहरी और चटक हो जाती हैं। समय का लंबा अंतराल भी इस तरह की बरबस खिंची लकीरों को मिटा पाने में समर्थ नहीं हो पाता। ये लकीरें हैं कुछ मिलन की, कुछ विछोह की।

मिलन और विछोह! कैसे लगते हैं ये दोनों आपको? दोनों एक दूसरे से गुथे, गलबहिंया डाले, फिर दोनों एक दूसरे से पृथक, एकदम असंपृक्त भी। एक इस छोर पर, तो दूसरा अंतरिक्ष पार सुदूर उस छोर पर। एक ज़िंदादिल ज़िंदगी-सा सुखकर, स्फूर्तिदायक, तो दूसरा मौत माफ़िक़ तकलीफ़देह, मर्मांतक जानलेवा। फिर भी ये दोनों सदियों पुराने सहोदर हैं। जीवन के शाश्वत सच हैं। क्यों? क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

शुरुआत तो ग़लत-सही हो गई, अब आगे किस तरह बढ़ूँ, समझ में नहीं आता। स्मृति में टँके इन गिने-चुने क़ीमती पलों को बेतरतीब बिखरा देना भी तो ठीक नहीं लगता। किंतु इन्हें सँजो-सहेजकर कोई करीने का आकार दे पाऊँगा, कम से कम मुझे ऐसा नहीं लग रहा। मन और मस्तिष्क के क्रिया-कलापों में सामंजस्य नहीं रह गया है। आँखें अश्रुप्लावित हुई जा रही हैं। स्यात् लेखनी में भी कंपन आ गया है। ख़ैर...

1971, यानी आज से क़रीब पचास साल पहले। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के बिड़ला छात्रावास का भव्य प्रासाद। छठी लाबी की दूसरी मंज़िल। कमरा नंबर 299। नवंबर के गुलाबी जाड़े की शांत संध्या है। चन्द मिनट पहले मैं लाइट ऑन कर अपने बेड पर बैठा हूँ। बगल वाला बेड सूना पड़ा है। पार्टनर कौशल्या नंदन वर्मा घर गए हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधखुले कमरे के फाटक पर ठक्-ठक् की हल्की दस्तक होती है। एक हमउम्र युवक दरवाज़े की देहली पर अभी-अभी आ खड़ा हुआ है। एकदम अनाम, अजाना, अपरिचित। गहरा साँवला रंग। बिखरे बाल और कई दिनों की शेव की गई बढ़ी हुई खिचड़ी दाढ़ी। वह हरी कमीज और सफ़ेद पैंट पहने है। वैसे कपड़े काफ़ी गंदे हैं। म्लान-थके चेहरे से संकोच के भाव स्पष्ट झलक रहे हैं। देर बाद मुझे ही पूछना पड़ा है—"कहिए किसे ढूंढ़ रहे हैं? कोई काम है क्या?"

किंतु प्रश्न अनुत्तरित रह गया है। एक विनम्र वाणी मुखर हुई है—"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ।?"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं, आइए।" मैंने ख़ाली पड़े बेड की तरफ़ इशारा किया, "बैठिए।"

"नहीं, यहीं ठीक है।" युवक टेबुल के पास रखी कुर्सी पर बैठते हुए किसी तरह बोल सका है, "मैं...मैं रात भर आपके यहाँ ठहरना चाहता हूँ। सिर्फ़ आज रात भर।"

'जान न पहचान, तेरा मेहमान' वाली स्थिति। ख़ैर, पल भर बाद ही मुझे बोलना पड़ा है, "वह तो ठीक है...म-ग-र..."

"मैं समझ रहा हूँ। आपको एक अपरिचित आदमी को ठहराने में असुविधा हो रही होगी। देखिए, मैं पड़ोसी जिला ग़ाज़ीपुर का रहने वाला हूँ। यहीं से..."
"ग़ाज़ीपुर! मगर कहाँ? प्रापर ग़ाज़ीपुर में या? अजी रहने वाला तो मैं भी ग़ाज़ीपुर का ही हूँ।"

मेरे मुँह से ग़ाज़ीपुर का नाम सुनकर युवक कुछ खुल-सा गया है, "ग़ाज़ीपुर में कहाँ घर है आपका?"

"मुम्मदाबाद तहसील में एक गाँव है जोगा मुसाहिब।"

"और मेरा घर 'मुड़ेरा' में है। पिछले वर्ष यहीं से राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। डिपार्टमेंट में कुछ काम था। सोचा था, काम निपटाकर आज ही रात-विरात तक वापस घर लौट जाऊँगा, किंतु काम न हो पाने से रुकना पड़ रहा है।"

"तब तो हम लोग एकदम क़रीब के ही रहने वाले निकले। अरे जोगा और मुड़ेरा में दूरी ही कितनी है!... आप बैठिए, मैं अभी कैंटीन से कुछ..."

"नहीं-नहीं। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। मैंने खाना-वाना भी खा लिया है। मेरे लिए आप बिल्कुल परेशान न हों। रुकने की जगह मिल गई, मेरे लिए इतना ही बहुत है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तो इसमें परेशानी की क्या बात है!" और युवक के लाख मना करने पर भी मैं उठ गया हूँ।

पलोपरांत हम दोनों ने साथ-साथ नाश्ता किया है—सिर्फ़ कुछ सूखे नमकीन और चाय।

और जलपान के अविलंब बाद, "मैं अभी आया" कहकर युवक कमरे से बाहर निकल गया है। थोड़ी देर बाद लौटने पर उसके हाथों में एक छोटा-सा बिस्तर है। वह उसे कुर्सी पर टिका, पार्टनर के चारपाई पर बिछे गद्दे को लपेटने लगा है।

"अरे-अरे यह आप क्या कर रहे हैं?" मैं अचकचा कर पूछता हूँ।

युवक ठहर गया है। शालीनता पूर्वक कहता है, "राय साहब, क्षमा कीजिएगा, अभी आपको मैंने पूरा परिचय नहीं दिया। वास्तव में मैं अछूत हूँ, चमार हूँ। यहाँ आपके पार्टनर भी तो नहीं हैं। और उनकी अनुपस्थिति में मेरे लिए इस बिस्तर का उपयोग...फिर मेरे पास अपना बिस्तर है ही।" कहते-कहते नवागंतुक के दोनों कर निवेदनबद्ध हो गए हैं।

"कुछ भी हो, पर मेरे यहाँ यह कत्तई नहीं चलेगा। मेरे लिए इतना ही परिचय काफ़ी है कि आप मुड़ेरा, ग़ाज़ीपुर के रहने वाले हैं। मुझसे सीनियर विद्यार्थी हैं। और जहाँ तक पार्टनर की ग़ैर मौजूदगी का सवाल है, आप मेरे बेड पर आराम करें।" मैं युवक को बलात अपने बेड पर बैठा, ख़ुद पार्टनर के बेड पर बैठ गया हूँ।

मैं देख रहा हूँ, युवक के पाँव मारे संकोच के अब भी बेड पर नहीं जा पा रहे हैं। मुझे पुनः बोलना पड़ा है, "अरे भाई, पैर ऊपर कर लीजिए नऽ। इत्मीनान से आराम कीजिए।" इस उद्बोधन के साथ ही संकोच बिखर गया है तथा युवक आराम की मुद्रा में आ गया है।

और भोर होते ही—"अच्छा राय साहब, अब आज्ञा दीजिए। नमस्कार।" युवक उठकर चल दिया है। इस तरह मेरे और जगदीश रामजी के पहले मिलन-दृश्य का यहीं पटाक्षेप हो जाता है।

फिर तकरीबन तीन वर्ष बाद

1974 का अगस्त महीना। स्थान—महाविद्यालय खरडीहा, ग़ाज़ीपुर। मिलन-दृश्य का दूसरा परदा उठता है। इस बीच जगदीश राम जी राजनीति शास्त्र के प्रवक्ता हो चुके हैं। मैं स्वामी सहजानंद डिग्री का. ग़ाज़ीपुर से लौटकर इतिहास-प्रवक्ता की हैसियत से खरडीहा महा विद्यालय में अभी-अभी प्रवेश लिया हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे राय जी आप! आइए-आइए, मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ।" इन चंद आत्मीय शब्दों के साथ कुछ ही पलों में जगदीश राम जी मुझसे इस कदर घुल-मिल गए हैं, जैसे वर्षों पुराने लंगोटिया यार हों। फिर तो पल-दर-पल करके क़रीब चार साल का सुखद समय उनके साहचर्य में कैसे गुज़र गया, कि कुछ पता ही नहीं चला। इन बीते वर्षों के अनेक दृश्य-उपदृश्य ऐसे दिलकश और मर्मांतक हैं, जिनको दिखाने के लिए एक पूरी किताब चाहिए, एक लंबा वक़्त चाहिए। बावजूद इसके उनकी आत्मीय बातचीत प्रेम पुलक दृष्टि, होंठों पर खेलती मधुर मुस्कान की अनवरत उर्मियाँ; करुणा, स्नेह और मार्दव की अभ्यंतर संवेदना जैसे नाना भाव बिंब मेरे मस्तिष्क पटल पर ओस कणों की तरह आज भी ज्यों के त्यों टंगे हैं।

संक्षेपतः जगदीश राम जी एक उदात्त चरित प्रांजल, दृढ़ निश्चयी, नीति-निर्भीक, कर्मनिष्ठ, विनय एवं सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति, सुविज्ञ शिक्षक थे। आर्थिक रूप से विपन्नता के बावजूद वे हर हाल में प्रसन्नचित्त रहने वाले इनसान थे। उनके कोश में थकान नाम का शब्द नहीं था। वे अविराम दो-दो घंटा लगातार पढ़ा-बोल सकते थे। उनकी गुरु गंभीर गगन भेदी वाणी अत्यंत ओजस्वी, सार गर्भित एवं प्रवहमान थी। जब वे कक्षा में खड़ा होकर एकनिष्ठ भाव से दत्तचित्त होकर गरजने (पढ़ाने) लगते, तो कम से कम आधा किलोमीटर दूर से ही कालेज में उनकी उपस्थिति का भान हो जाता। महाविद्यालय के छोटे परिसर में एक हल्का सन्नाटा खिंच जाता और ऐसा लगता कि पूरी संस्था में जोरों की पढ़ाई चल रही है। उनकी भोजपुरी मिश्रित खड़ी बोली बड़ी प्यारी और बोधगम्य थी।

जगदीश राम जी से कोई कितना भी मज़ाक़ करे, उन्हें रंच मात्र परेशानी नहीं। वे ख़ुद भी हँसते और ज़ोरदार व्यंग्य करते थे। हिंदी प्रवक्ता डॉ. द्वारिका नाथ उन्हें बहुत तंग करते थे। दरअसल वे सौजन्य-सौहार्द-सौमनस्य के पर्याय-प्रतिमूर्ति थे। जीवन उनका एकदम सादा था। दिल आइना माफ़िक़ झकझक पारदर्शी था। गँवई गंध से पूरित वे एक सीधे-सादे सच्चे मानव थे। कदाचित इसीलिए वे आजीवन, क्या शिक्षक-सुहृद, क्या विद्यार्थी तथा क्या पुर-प्रतिवेशी, सभी के चहेते बने रहे।

जीवनावसान की जीवंत स्मृतियाँ

उनकी अंतिम दिनों की यादें सिर उठा रही हैं। जीवन की अवसान वेला है। जगदीश भाई एक असाध्य रोग से बुरी तरह आक्रांत हो गए हैं। संभवतः उन्हें 'जलोदर' हो गया है, जैसा कि कई लोग कह-बता रहे हैं। पेट काफ़ी सूज गया है। आँखें धँस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गई हैं। घरेलू यानी स्थानीय उपचार नाकाम हो गए हैं। आस-पास के डाक्टरों ने जवाब दे दिया है। प्रताप सागर (टी.बी. की चिकित्सा के लिए चर्चित बिहार का एक छोटा शहर) के डाक्टरों ने पीठ दिखा दिया है। पटना के डाक्टर शिकस्त खा चुके हैं। निदान, जर्जर तन जगदीश राम जी बाबा विश्वनाथ की शरण में काशी पहुँच गए हैं। सर सुंदर लाल चिकित्सालय, वाराणसी।

महीनों इलाज चला है। कालेज आना-जाना बंद। शिक्षण कार्य बंद हुए तो साल भर से ऊपर हो गए हैं। पर क्या मजाल है कि जगदीश राम जी की एक महीने की सैलरी भी रुक गई हो! यदा-कदा तो चिकित्सालय शय्या पर उपस्थिति पंजिका तक भेज दी गई है। कहना न होगा, ऐसा इतना बड़ा ग़लत निर्णय, तत्कालीन कालेज संस्थापक एवं प्रबंधक, उदार मना, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, गांधीवादी कट्टर कांग्रेसी अत्यंत साहसी व निडर, परमादरणीय बृज मंगल राय जी की जगदीश राम जी के प्रति असीम कृपा की बदौलत ही संभव हो पा रहा है। वेतन पाने के लिए उन्हें कालेज में भी उपस्थित दिखाया जा रहा है। आख़िरकार बनारस का, उनकी लंबी चिकित्सा का ख़र्च कैसे चलेगा!

आख़िरी वक़्त समीप आ पहुँचा है। रोशनी यकायक मद्धिम पड़ने लगी है। प्रिय पाठको! बड़ा हृदय द्रावक दृश्य है यह। तीन-चार सप्ताह बीतते-बीतते तबियत अचानक घबरा उठी है। रह-रहकर ऐसा लगता है, जैसे कोई पुकार रहा हो—'जल्दी चले आओ।' और एक दिन। भागा-भागा बनारस पहुँच गया हूँ मैं।

हस्पताल। सीढ़ियों को फलांगते जल्दी-जल्दी ऊपर पहुँचता हूँ। वार्ड में पहुँचने के लिए यही कोई दस-पंद्रह क़दम और चलना है। पाँव आगे सरकाता हूँ। चलते-चलते ठिठक गया हूँ। फिर धीरे-धीरे...चोर की-सी हालत हो गई है। इतने दिनों बाद जो आया हूँ। मन में क्षोभ है, द्विधा है, पश्चाताप है, और है अपराध की हयासंकुल भावना, भय मिश्रित सोच।

पाँव डगमगा रहे हैं। डरते-डरते वार्ड में प्रवेश करता हूँ। जगदीश राम जी अभी-अभी करवट बदले हैं। ठीक वैसे ही जैसे कोई रूठकर मुँह फेर ले। शय्या के निकट पहुँचते ही कोई कहता है—"इधर देखिए, कौन आया है!"

जज्बात ज़ोर मारा है। वे उठकर बैठना चाहते हैं। मेरे हाथ सहारे के लिए बढ़ गए हैं। वे मेरी तरफ़ निर्वाक विस्मय से देखते हैं। इस अपराधी राम बदन में आँख मिलाने की हिम्मत नहीं रह गई है। पलकें अविलंब झुक गई हैं। क्षण भर के लिए पूरे माहौल में एक ग़मगीन चुप्पी पसर गई है। ऐसा लगा है, जैसे उनके बेड के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पास राम बदन नहीं, कोई अजनबी आया हो। आँखें पुन: ऊपर उठाता हूँ। उनके स्याह-सपाट चेहरे पर ख़ुशी, विषाद, चाह, चिंता, गिला-शिकवा, गुस्सा, नाराजगी जैसी कोई भाव वाचक रेखा नहीं, एकदम स्थित प्रज्ञ और जिजीविषा रहित। मेरा धैर्य छूट गया है। आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली है। फिर तो यकायक जगदीश राम जी भी फफक पड़े हैं, ज़ोर-ज़ोर से बच्चों की तरह। देर बाद दोनों यथापूर्व स्थिति में आ सके हैं। पहले बहुत आहिस्ता-आहिस्ता, फिर सामान्य रूप से सुख-दुख के मुद्दे खुल निकले हैं।

इस बीच पहले से पहुँचे स्वजन-परिजन कुछ समय के लिए इधर-उधर छिटक गए हैं। रह गए हैं भीष्म की भाँति मृत्यु से जूझते, लहीम-शहीम शय्यासीन एक अदद जगदीश राम जी और सामने बैठा यह निरीह राम बदन। बातचीत के दौरान जगदीश जी हृदय विगलित कातर स्वर में कहते हैं—

"ऐसा है राय साहब कि अब वक़्त पूरा हो चला है। बस इतने ही दिनों तक का साथ था।...ये डाक्टर सिर्फ़ झूठा आश्वासन दे रहे हैं। का करें, इन बेचारों को भी मेरी बाबत यमराज ने डरा दिया है।" कहते हुए जगदीश जी के म्लान सूखे होंठों पर क्षण भर के लिए ही सही, स्मित हास की एक उदास क्षीण रेखा तिर आई है। ऐसी दुखांत बातों का परिहार करते हुए वे तत्क्षण विषयांतर करते हैं, "ख़ैर छोड़िए भी, और सब सुनाइए। द्वारिका भाई (प्रवक्ता-प्राचार्य), यादव जी (डॉ. राम ललक, अंग्रेज़ी प्रवक्ता), दयाराम राय जी (प्रधान लिपिक), राजमंगल जी (संस्कृत प्रवक्ता), सभी लोग मज़े में हैं न ऽ?"

क्या जवाब दूँ! आँखें एक बार फिर छलछला गई हैं। गला रुँध गया है। जगदीश राम जी का दुर्जय व्यक्तित्व साश्चर्य फूटता है, "अरे राय साहब, यह क्या? इतने में ही घबरा गए!" फिर वे गीता के कुछ श्लाकों को क्षीण स्वर में गुनगुनाने लगते हैं—"नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः, न चैनं क्लेदयन्तापो, न शोषयति मारुतः...वासांसि जिर्णानि यथा बिहाय...अरे यार, अगर ईश्वर ने चाहा, तो फिर मुलाक़ात होगी। यह आना-जाना तो ऐसे ही लगा हुआ है"

अकस्मात, सात अगस्त की रात, बज्रपात

आठ अगस्त की अलसुबह। औचक ही ख़बर मिली है—जगदीश राम जी नहीं रहे। सुनकर सन्न रह गया हूँ। तो क्या देदिप्यमान नक्षत्र बुझ ही गया? क्या रोशनी सचमुच गुल हो गई? सच, यक़ीन नहीं आया है। चतुर्दिक अंधकार छा गया है। दिशाओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में शोक-संगीत का करुण क्रंदन उठ गया है। संस्था की ईंट-ईंट शोक-विह्वल चीत्कार उठी है। सारा काम-काज एकदम ठप्प। पढ़ाई-लिखाई कई दिनों तक बंद। ऐसे में शोक सभा की औपचारिकता का आडम्बर कौन रचाने जाए! कौन होश-हवास में रह गया है! सबके बीच से एक ऐसा सच्चरित्र, सहृदयी, नेक, कर्मण्य, मिलनसार, इनसान उठ गया है, जिसकी क्षतिपूर्ति असंभव भले न हो, दुस्तर-दुष्प्राप्य अवश्य हो गई है।

जीवन जब मरता है उम्र बीज जमता है

स्मृतियों ने फिर दस्तक दिया है—'यह आना-जाना तो ऐसे ही...।' उनसे हुई मुलाक़ात की अंतिम बातें, बातों के आध्यात्मिक अंदाज़, दार्शनिक लहजे, मन-मस्तिष्ठ को आज भी कुरेद रहे हैं। शायद ता-ज़िंदगी कुरेदते रहेंगे। लिखते-लिखते किसी फ़िल्मी गीतकार की चंद दर्दीली लाइनें दिमाग़ में उभर आई हैं—

"आदमी मुसाफिर है, आता है जाता है।
आते-जाते रस्ते में, यादें छोड़ जाता है॥"

सचमुच, इनसान चला जाता है, सिर्फ़ यादें रह जाती हैं। यादों के रूप में ही मनुष्य के मृत्यु-बीज का अंकुरण होता है। दुनियावी मंच पर उसके जीवन भर किये-किराये अभिनय की स्मृति-शाखाएँ फूटती हैं, पुष्पित-पल्लवित होती हैं। अभिनय क्षमता के न्यूनाधिक उपयोग के हिसाब से बिरवा बढ़ता-लहराता है। इस संदर्भ में अपनी ही एक कविता की चंद सतरें उद्धृत करना चाहूँगा—

जीवन के समतल में उम्र बीज बोते हैं
सहम-सहम चलते हैं, गिरते-सँभलते हैं
नहीं सुमन-सेज कहीं, काँटों में पलते हैं
जड़ तल में पल-पल, श्रम सीकर समोते हैं
जीवन के समतल में...

दिन औ सप्ताह नहीं, केवल नौ माह नहीं
दुष्कर दूरंत अंत, साल चार साल नहीं
लेकर उदरस्थल में, जीवन भर ढोते हैं
जीवन के समतल में...
जीवन जब मरता है, उम्र बीज जमता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष शत हज़ार कोई, अमर वृक्ष बनता है
मृत्यु रूपी दर्पण में, कृत्य दृश्य होते हैं
जीवन के समतल में...

निम्न चंद लाइनों के साथ मैं उस सुहृद आत्मीय दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ—

उजाले अपनी यादों के
हमारे दिल में रहने दो।
न जाने किस गली में
ज़िंदगी की शाम हो जाए॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिन्हा मनोज के मायने

इस उनवान की तफ़सील में जाने से पहले एक बात साफ़ कर दूँ कि मैं पूरी तरह समर्पित भाजपाई कभी नहीं रहा। और पूरी तरह तो मैं कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, सपाई, बासपाई या कांग्रेसी कुछ भी नहीं हूँ। कभी अटल जी के प्रति आकर्षित हुआ तो कभी चरण सिंह के प्रति, कभी कल्याण की तरफ़, कभी राजनारायण जी की तरफ़, कभी नीतीश की तरफ़, कभी ममता की तरफ़, तो कभी अरविंद केजरीवाल की तरफ़ भी। सोचने पर इस तरह के कुछ और नाम भी निकल सकते हैं। मुझे कोई गुरेज नहीं, इस मामले में आप मुझ पर 'बिना पेंदी का लोटा' या धुर अवसरवादी होने का ठप्पा लगा दें। हाँ, ग़लत ही सही या इसे मेरी मुगालता (वहम) ही समझा जाए, मैं अपने को एक ग्राम-समाज सेवी और गँवई साहित्यकार ज़रूर मानता हूँ। लोकपाल को लेकर अन्ना हजारे के समर्थन में मैं भी अनशन पर बैठा था। फ़र्क़ इतना भर था कि वे दिल्ली में बैठे थे और मैं अपने गाँव जोगा मुसाहिब में।

तो इतना सब बेमतलब बकवास का मतलब यह कि मैं मनोज का मुरीद या फैन, उनकी क़ैफ़ियतों का कायल, सिर्फ़ इसलिए कदापि नहीं हूँ कि वे भा.ज.पा. के चंद वरिष्ठ भारतीय नेताओं में से एक हैं, या दो-दो प्रमुख विभागों के सफल केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं। कर्मठता और ईमानदारी की दृष्टि से इधर के नए नेताओं में वे मुझे अनन्य, अन्यतम अवश्य लगते हैं। निःसंकोच कहना चाहूँगा, आज के जमाने में ऐसे निःस्वार्थी नेताओं का नितांत अभाव है। अर्थ लिप्सा या पद-लोलूपता कम से कम मुझे आज तक उनमें नहीं दिखाई दी है। और कल की बाबत ख़ुदा जाने, मैं क्या, कोई भी कुछ नहीं कह सकता। आँखों का तारा, आँखों की किरकिरी बन जाता है। मगर फ़िलवक़्त मनोज मेरे लिए ही नहीं, बहुतों की आँखों का तारा है, दिल का दुलारा है। संप्रति जनपदीय प्रगति का सहारा है, प्यारा है।

जब पहली दफा देखा—यह तब की बात है, जब मनोज सिन्हा के नाम तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से मैं नावाक़िफ़ था। मुझे यह नहीं मालूम था कि वे बी.एच.यू. के लोकप्रिय छात्र नेता थे और अपने कुछ छात्र-मित्रों के यहाँ मेरे गाँव के उत्तर तरफ़ आए हुए थे। मेरा घर दक्षिण तरफ़ है। तो बिना किसी से कहे-बताए सिन्हा के सम्मान में उक्त छात्रों ने आनन-फानन में एक सभा आयोजित कर डाली। गाँव की पश्चिमी परती (फिल्ड) में खुले आसमान तले चार चौकियाँ सजा दी गईं, माइक लगा दिया गया। मैं दरवाज़े पर खाना खाकर आराम फरमा रहा था कि औचक मेरे कान में माइक की आवाज़ें आने लगीं—'फूँ-फूँ, हलो-हलो-हलो! बड़े सौभाग्य की बात है कि हमारे गाँव में युवा नेता माननीय मनोज सिन्हा जी पधारे हुए हैं। सभी ग्राम वासियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक तादाद में यहाँ पश्चिम तरफ़ की परती में पहुँचकर उनके उद्‌बोधन को सुनें...लाभ उठाएँ...' आदि-आदि।

मैं अपने दरवाज़े पर लेटे-लेटे चुपचाप सुनता रहा—कौन मनोज सिन्हा? कहाँ का मनोज सिन्हा?? ख़ैर, जल्दी ही पता चल गया कि वह मनोज नामक आगंतुक कोई बी.एच.यू. में इंजीनियरिंग का विद्यार्थी है। कुछ ही देर बाद जब मनोज सिन्हा ने बोलना शुरू किया, तो उनके आरंभिक संबोधनों के साथ ही अचानक मेरे कान खड़े हो गए। एक विज्ञान के विद्यार्थी के मुख से इतनी अच्छी हिंदी, कर्णप्रिय लच्छेदार भाषा, ओजस्वी, संतुलित और मधुर-विनम्र वाणी, शायद अब तक मैंने न सुनी थी। मैं अविलंब चारपाई पर से उठने के लिए बाध्य हो गया और हवाई चप्पल सटकारते सभा-स्थल की तरफ़ तेज़ी से भागा।

बहुत तेज़ चलने के बावजूद सभा-स्थल तक पहुँचने में मुझे 30-35 मिनट लग गए। रास्ते में 'अरे कहाँ बड़ा जल्दी-जल्दी?' या 'ए भई, कौनो ख़ास बात नइखे न?' जैसे अनेक वाहियात सवालों की बौछारों ने मेरे पाँवों की गति को काफ़ी बाधित किया, क्योंकि कुछ न कुछ जवाब तो सबको देना ही था और 10-12 मिनट का रास्ता आधे घंटे का बन गया। पहुँचकर देखा, मंच के आगे बिछी दरियों पर छोटे-बड़े पचासाधिक बच्चे बैठे-लेटे हैं। बैठने वालों में सयानों की संख्या अत्यल्प थी। बाक़ी बड़े लोग तीन तरफ़ से घेरा बनाकर खड़े थे, जिनकी तादाद सौ से कम न रही होगी। मैं भी उसी घेरे में एक तरफ़ खड़ा हो गया। दूर सड़क किनारे की ऊँचाई पर, चार-छः अधेड़-बूढ़ी अनुसूचित जाति की महिलाएँ भी दिखाई पड़ीं।

मंच पर शांत बैठे क़रीब आधा दर्जन लोग, जिनमें एक-दो को छोड़ सभी युवा या किशोर। खड़ा होकर भाषण देने वाला (मनोज) बमुश्किल बाइस बरस का रेखिया उठान ख़ूबसूरत नौजवान। न बहुत मोटा न पतला, अच्छी औसत क़द-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काठी। स्मित हास लिए गौर वर्णीय मुख पर एक सौम्य सौंदर्य। वे कुर्ता और कुछ चूड़ीदार टाइप सफ़ेद पाजामा पहने हुए थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि उनके कुर्ते के ऊपर वाला बटनदार पीला स्वेटर कुछ नीचे तक लंबा, एकदम सदरी सरीखा था और उनके जवान जिस्म पर बहुत फ़ब रहा था। सारे दर्शक उन्हें टकटकी लगाए देख रहे थे, मंत्र मुग्ध सुन रहे थे और वे धारासार-लगातार बोले जा रहे थे। उनके व्यक्तित्व की कशिश ने पूरे वातावरण में सूई पटक सन्नाटा बुन रखा था। कहना न होगा, उन्हें ध्यानपूर्वक देखने-सुनने वालों में एक ख़ुशनसीब मैं भी था। लगा था, सुसंयोग वश आज के दिन मेरा जोगा मुसाहिब में होना, और यहाँ दौड़कर आ पहुँचना, सचमुच सार्थक हो गया।

भाषण समाप्त हुआ नहीं कि किसी के इशारा करने पर वे आगे बैठे बच्चों को फलांगते हुए बड़ी तेज़ी के साथ मेरे पास आए और काफ़ी झुककर दोनों हाथों से मेरे क़दमों को स्पर्श किया। फिर सिर को ऊपर उठाते हुए हाथ जोड़कर कहा, "आपका आशीर्वाद लेने आया हूँ।" फिर तो उसी क्षण मेरा भावुक मन उनकी विनम्रता का, उनके विलक्षण व्यक्तित्व का कायल हो उठा। मेरे मुँह से वाणी न फूट सकी। गला रुंध गया। हाँ, आशीर्वाद स्वरूप मेरे दोनों हाथ उनके कंधों पर ज़रूर जा पहुँचे। पुनः वे जैसे आए थे, वैसे ही तेज़ क़दम वापस अपनी मित्र-मंडली में लौट गए। अगल-बगल वालों को देखते हुए अनायास मेरे मुँह से निकला, "यह युवक कुछ हो के रहेगा, कुछ बन के रहेगा, निश्चित रूप से कुछ कर-दिखा के रहेगा!" और 1980 आते-आते यह स्वतः स्फूर्त अनायास निकला उद्गार सचमुच, सच में तब्दील होने लगा।

किसान-मज़दूर इ.का. गणपति नगर, ग़ाज़ीपुर के सम्मान समारोह में, श्री-श्री सिन्हा मनोज को समर्पित, राम बदन विरचित अभिनंदन पत्र का सार-संक्षेप—

बाल्यकालीन विलक्षणताएँ—कुशाग्र बुद्धि बालक मनोज की आरंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही संपन्न कराई गई। फिर राजकीय सीटी इंटर कालेज ग़ाज़ीपुर में इनका नाम लिखा गया, जहाँ इला. बोर्ड इंटर मीडियट टॉप टेन में आप उत्तीर्ण हुए और ज़िले का नाम रौशन किए। तत्पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय से आपने अच्छे अंकों में क्रमशः बी.टेक. और एम.टेक की ऊँची उपाधियाँ प्राप्त कीं। 1977 आते-आते आपको श्रीमती नीलम सिन्हा के साथ वैवाहिक बंधन में बांध दिया गया। और प्रौढ़ावस्था के प्रारंभ के साथ ही आप दो बच्चों—पुत्री अनुभूति और पुत्र अनुभव के पिता बन गए। किंतु यह स्थिति देर तक नहीं बनी रह सकी। घर-परिवार रूपी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मायावी बंधनों के दायित्व का किसी तरह कर्तव्य पूरा कर, आप जल्दी ही वीतरागी बन देश सेवा से जुड़ गए।

देश सेवार्थ राजनीति में प्रवेश—प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) या अधिशासी अभियंता (इक्सक्यूटिव इंजीनियर) जैसी उच्च कोटीय सेवाओं से अलग आपने भारतीय राजनीति में दखल देकर देश सेवा का व्रत लिया। आरंभ में आपने छात्र राजनीति में प्रवेश किया। इस कड़ी में पहले-पहल 1982 में आप बी.एच.यू. में छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। 1996 की ग्यारहवीं लोक सभा, 1999 की तेरहवीं लोक सभा तथा 2014 की सोलहवीं लोकसभा में आप ग़ाज़ीपुर की जनता द्वारा क्रमश तीन बार सांसद बनाए गए।

आपकी उत्कृष्ट राजनीतिक प्रतिभा की पहचान 16वीं लोकसभा में हुई, जब आपको संचार मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के साथ-साथ रेल राज्य मंत्री भी बनाया गया। उत्तर प्रदेश जैसे विशाल प्रांत के संभावित मुख्यमंत्री पद हेतु भी आपकी चर्चा भा.ज.पा. के वरिष्ठ नेताओं द्वारा ज़ोर-शोर के साथ की गई, किंतु कुछ औचक उत्पन्न विशेष परिस्थितियों के चलते ऐसा नहीं हो पाया। 'इंडिया टुडे' के अनुसार—सर्वाधिक ईमानदार सांसदों में सिन्हा मनोज भी—पूर्वांचलीय जन मानस के लाडले माननीय मनोज जी लादी गई महानता के नेता नहीं, अपितु प्रकृति प्रदत्त महानता के साथ सायास अर्जित महानता के संयोग से बनी ऊँची महानता की उपज हैं। भा.ज.पा. अध्यक्ष अमित शाह ने आपके बारे मंच पर बोलते हुए कहा था, "मनोज जी उन चंद लोगों में से हैं, जिन्हें पार्टी ने ससम्मान बुलाकर आग्रह किया था कि आप चुनाव अवश्य लड़िए।" 2014 के चुनाव में अनिच्छुक त्यागमूर्ति मनोज ने चुनाव लड़ने से स्पष्ट इनकार कर दिया था, यह कहते हुए कि क्या देश सेवा सांसद-मंत्री बने बिना नहीं की जा सकती?

यही क्यों, माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने लंका-मैदान ग़ाज़ीपुर के मंच से कभी प्रभु श्री राम के अत्यंत प्रिय लक्ष्मण की तरह मनोज जी को अपना अनुज (छोटा भाई) स्वीकार किया था। और सचमुच यदि श्री राम रूपी मोदी के लिए अमित शाह हनुमान हैं, तो मनोज उनके लिए निश्चय ही लक्ष्मण हैं, कहा जा सकता है।

सन् 1989 से ही मनोज जी भा.ज.पा. के राष्ट्रीय कौंसिल के सम्मानित सदस्य रहे हैं। आपके सतर्क समीचीन परामर्श को पार्टी के वरिष्ठ नेता आज भी महत्त्व देते हैं, प्रायः स्वीकार करते हैं।

अभी कुछ समय पहले 'इंडिया टुडें' नामक विशिष्ठ पत्रिका ने अपने सर्वेक्षण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा आपकी गणना सर्वाधिक ईमानदार सांसदों में की थी। संसद में सर्वाधिक उपस्थिति का रिकार्ड भी आपके नाम है।

ये सारे उद्धरण हम सबके लिए, पूर्वांचलीय लोगों के लिए और ख़ासतौर से ग़ाज़ीपुर ज़िले की जनता के लिए अत्यंत गौरव एवं सम्मान की बात है। उ.प्र. के मानचित्र में ग़ाज़ीपुर भी कोई जगह है, इसकी प्रतीति आज़ादी के बाद पहली बार लोगों को हुई है। और यह सब मनोज जी के कुशल नेतृत्व के चलते हुआ है। इसमें कोई दो राय नहीं।

अब तक के पिछड़े पूर्वांचल में बहुमुखी विकास की बाढ़

विगत कांग्रेसी शासन में विकास की बातें तो बहुत हुईं, किंतु काम कुछ ख़ास नहीं हुए। साठाधिक वर्षों तक हम लाट (कार्नवालिस) साहब की कब्र और ओपियम फैक्ट्री को ही अपना भाग्य (उपलब्धि) मानते-देखते रहे। ग़ाज़ीपुरी विकास के इन मिथ्या मिथकों को धराशायी कर विकास की गंगा बहाने का कार्य मनोज द्वारा ही आरंभ हुआ, जिसकी निरंतरता अब भी बनी हुई है।

सिन्हा के नेतृत्व में, बहुत कम समय में, न केवल रेल या संचार सेवा के क्षेत्र में, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क परिवन, स्वच्छता अभियान तथा नदियों का निर्मलीकरण आदि अनेक क्षेत्रों में काफ़ी कार्य हुए हैं।

ग़ाज़ीपुर को रेलवे के माध्यम से भारत के हर महानगर से जोड़ने का असाधारण कार्य, साथ ही रेलवे स्टेशनों को सुंदर, सुविधा संपन्न एवं आधुनिक बनाने का जैसा अद्‌भुत कार्य मनोज जी के द्वारा हुआ है, वह निश्चय ही सराहनीय है। ढेर सारे प्रशंसनीय कार्यों की कड़ी में "लाइफ लाइन एक्सप्रेस ट्रेन" द्वारा निःशुल्क जाँच एवं चिकित्सा की त्वरित सुविधाएँ उपलब्ध कराना, ग़ाज़ीपुर की ग़रीब जनता हेतु किसी अलौकिक वरदान से कम नहीं है।

न केवल ग़ाज़ीपुर शहर बल्कि ज़िले के क़स्बे-गाँवों में, विद्यालयों आदि में सामुदायिक शौचालयों का निर्माण भी आपके कार्य-काल में हुए विकास की महती एवं आवश्यक उपलब्धि है। सड़क परिवहन के क्षेत्र में वाराणसी से गोरखपुर तक फोर लेन सड़क, ग़ाज़ीपुर से बलिया तक फोर लेन सड़क तथा ग़ाज़ीपुर-जमानियां-सैयद राजा फ़ोन लेन सड़क का निर्माण, ज़िले के लिए आपकी प्रशंसनीय देन है।

मनोज जी की सबसे बड़ी विकास-उपलब्धि ग़ाज़ीपुर में गंगा-सेतु का नव निर्माण है। आपने ताड़ी घाट-ग़ाज़ीपुर रेल खंड का निर्माण कर दशकों पूर्व जनपदीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपने को निश्चय ही साकार किया है, जिसके द्वारा ऊपरी पुल पर दो पहिया, चार पहिया, बस, ट्रैक्टर तथा ट्रक जैसे छोटे-बड़े वाहनों का संचालन तथा निचले पुल पर अबाध गति से ट्रेनें दौड़ सकेंगी।

इस प्रकार पूर्वांचलीय धरती पर मनोज जैसे लोकोपकारी, सर्व सुखाकांक्षी वैभवी व्यक्तित्व का अभ्युदय हम सबके लिए कितना आह्लादकारी है, यह अभिव्यक्ति से परे है। आपके स्वास्थ्य-समृद्धि एवं दीर्घायु जीवन हेतु मैं परम पिता परमेश्वर से पुनः-पुनः प्रार्थना करता हूँ।

और अंत में ऐसे कर्मयोगी मनोज जी की 2019 में हुई अप्रत्याशित-आश्चर्य जन्य हार पर, मेरी मानसिकता से मेल खाती डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश' के दिल की इस दर्दीली आवाज़ को यहाँ कलमबद्ध कर देना ज़रूरी लगता है कि—

जो टूटे फलक से वो तारे नहीं हैं
हराये गए पर वो हारे नहीं हैं
हँसी भी रुलाई भी आती है उन पर
जो यह कह रहे कि हमारे नहीं हैं
पी-पी हलाहल पिलाए जो अमरित
मधु से मधुर हैं, वे खारे नहीं हैं
तुफानी थपेड़े हज़ारों ही झेले
गिरें कटकर जो, वो किनारे नहीं हैं
अँधेरे से हमको उजाले में लाए
महज कोई थोथा वो नारे नहीं हैं
नज़र को झुकाए खड़े सामने जो
डुबाये हैं वे ही, उबारे नहीं हैं
खुल करके जिन पर ख़ज़ाना लुटाए
वो बेदर्द वोटर, निहारे नहीं हैं
वे तकदीर जिनकी बनाए-सँवारे
हद है उन्हीं को, गँवारे नहीं हैं
कितने हैं ख़ुश उनका दिल जानता
जो डुबाने में सोचे-विचारे नहीं हैं
गिराने चले जो बेचारे बने हैं
मगर गिरके भी वे बेचारे नहीं हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दवा दर्दे दिल की कहाँ से ले आएँ
क्या सिन्हा सरीखे सहारे कहीं हैं?
दिशाएँ दसों मर्सिया गा रुलाएँ—
बिना उनके अब वे बहारें नहीं हैं!
'हे अभिमन्यु उन्नीस के, आने दो चौबिस'
दिनों चंद हम भी निहारे यहीं हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. राम दरश मिश्र उवाच : 'आप सभी मेरे आवास पर आमंत्रित हैं'

बीसों बरस पहले की बात है। डॉ. राम दरश मिश्र जी के अनुग्रह रूपी आग्रह-आदेश की बदौलत मैं 'अखिल भारतीय लेखक संगठन दिल्ली' का सदस्य बनाया जा चुका था। सदस्य बनने से पूर्व मैं दिल्ली की कुछ पत्रिकाओं में छप चुका था। एक-दो पत्रिकाओं ने मेरी तस्वीर भी माँगकर छापी थी। अतः एक मामूली लेखक के रूप में ही सही, दिल्ली के दस-बीस साहित्यकार मेरे नाम से परिचित हो चुके थे।

एक दिन अचानक-अप्रत्याशित मेरे डिग्री कालेज खरडीहा, ग़ाज़ीपुर के पते पर दिल्ली से एक पत्र (लिफ़ाफ़ा) आया। पत्र अ.भा.ले. संगठन दिल्ली की ओर से था, जिसमें डॉ. मिश्र जी का एक व्यक्तिगत पत्र भी संलग्न था। दोनों पत्र संगठन के चुनाव से संबंधित थे। मिश्र जी का आदेश था कि अमुक तिथि को अमुक स्थान पर मैं दिल्ली में अवश्य उपस्थित हो जाऊँ। पत्र पढ़कर मैं बहुत पसोपेश में पड़ गया, क्योंकि अभी तक कभी दिल्ली गया ही नहीं था, और अकेले दिल्ली पहुँचना मेरे लिए पहले-पहल विदेश जाने से कम न था। यह स्वीकार करने में मुझे तनिक संकोच नहीं है, कि दूर की अकेले यात्रा करने में मैं आज भी अत्यंत भीरु हूँ।

प्राध्यापक-कक्ष में बैठे-बैठे क्या करूँ, कैसे जाऊँ या कोई बहाना बनाकर न जाऊँ के उहा-पोह में मैं पड़ा ही हुआ था, कि हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. द्वारका नाथ राय टहलते हुए मेरे पास आकर एक ख़ाली कुर्सी पर बैठ गए। पल भर बाद पूछ बैठे, "क्यों कवि जी! क्या मेरे साथ दिल्ली चलोगे? चलो तुम्हें दिल्ली घुमा लाएँ।" कालेज में प्रायः सभी मुझे 'कवि जी' के नाम से ही पुकारते थे। इसे ईश्वर की अहेतुकी कृपा कहिए या अनायास सुखद संयोग, कि किसी ज़रूरी काम से द्वारका नाथ जी को भी दिल्ली जाना था, और ऐन उसी वक़्त, जब वहाँ से मेरा भी बुलावा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आया था। ख़ुशी-ख़ुशी मैं तुरंत जाने के लिए तैयार हो गया, कि चलो कोई तो साथ जाने वाला मिला।

हम दोनों उचित समय पर कार्यक्रम स्थल पर दिल्ली पहुँच गए। देश के कई प्रांतों से छोटे-बड़े साहित्यकार पधारे हुए थे, जिनमें दिल्ली के बाद पंजाब-हरियाणा की संख्या सर्वाधिक लगी। उ.प्र. के पूर्वांचलीय ज़िलों से पहुँचने वालों की तादाद शायद सबसे कम थी। जहाँ तक मुझे याद है, वाराणसी से तीन युवा साहित्यकार पहुँचे हुए थे, जिनमें एक महिला भी थीं। कार्यक्रम अनौपचारिक ढंग से ही सही, किसी तरह शुरू हुआ, किंतु जल्दी ही कुछ हल्की-फुल्की तकरारों के साथ समाप्त भी हो गया। समस्या, चुनाव के समय ही, कुछ लोगों को तत्काल संगठन का सदस्य बनाए जाने को लेकर थी, जिसका समाधान न निकल सका। वैसे अधिकांश की राय थी कि किसी भी चुनाव में भाग लेने के लिए, कम से कम तीन माह पूर्व संगठन की सदस्यता ज़रूरी होनी चाहिए।

ख़ैर 'आप कौन-कहाँ से, तो आप कौन-कहाँ से? या आपकी तारीफ़, तो आपका परिचय' जैसे जुमलों के साथ मिलने-जुलने के सौहार्दपूर्ण वातावरण में, फिर किसी अगली तारीख़ तक के लिए आयोजन का पटाक्षेप हुआ। एक शीर्ष साहित्यकार (नाम नहीं लेना चाहूँगा), जो कुछ नितांत नए चेहरों को लेकर संगठन का अध्यक्ष बनने की आकांक्षा पाले आए थे, को छोड़, वहाँ सभी राजी-ख़ुशी प्रसन्न ही नज़र आए। खाये-पीये, हँसे-बोले, हाथ मिलाये तथा इक्के-दुक्के गले भी मिले। दिल्ली जैसे महानगर में यह सब मुझे बहुत ही भला लगा, एक अजीम किंतु अच्छी-खासी उपलब्धि जैसा। मनोनुकूल और तृप्तिदायक भी।

यकायक साँझ घिर आने का एहसास तब हुआ, जब कुछ लोग घर जाने के लिए एक दूसरे से अनुमति माँगने लगे। इसी बीच दो सज्जन—एक पराशर जी तथा दूसरे शायद डॉ. विनय जी, मेरे पास आए और एक-एक बाँह पकड़कर ज़िद करने लगे, "आज आप मेरे यहाँ चलिए" तो "नहीं-नहीं, आज ये मेरे यहाँ रुकेंगे"। दोनों सज्जनों की मनुहार, पास ही खड़े-खड़े किसी से बतिया रहे डॉ. राम दरश मिश्र जी के कानों तक जा टकराई। वे अविलंब भागे-भागे आए। बोले, "ये दोनों ही नहीं, आप तीनों-चारों, आज सभी मेरे आवास पर आमंत्रित हैं। हम सभी मिलकर ग़ाज़ीपुर से आए राम बदन जी के नाम पर एक कवि गोष्ठी करेंगे। सात बजते-बजते सबको मेरे यहाँ पहुँच जाना है।" मैंने देखा, मिश्र जी के आमंत्रण रूपी आदेश का किसी ने ज़रा भी विरोध नहीं किया। इसके साथ ही सभी एक-दूसरे को हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोड़ते हुए तितर-बितर हो गए। सात बजने में अभी डेढ़-दो घंटे बाक़ी थे।

कवि गोष्ठी में बमुश्किल दर्जन भर लोग शरीक हुए। सबने अपनी-अपनी कविताएँ पढ़ीं। मैंने भी गँवई संस्कृति से संदर्भित दो कविताएँ सुनाई, जिन्हें सुन मिश्र जी सहित कई कवियों की दाद मुझे मिली। उसी कवि गोष्ठी में मिश्र जी ने अपनी '...जहाँ आप पहुँचे छलाँगे लगाकर, वहाँ मैं भी पहुँचा मगर धीरे-धीरे।' कविता सुनाई, जो आगे चलकर बहुत ही लोकप्रिय हुई।

इसके कुछ बरस बाद एक बार पुन: मैं पूज्य मिश्र जी से उनके उत्तम नगर स्थित आवास पर मिला था। साथ में मेरा पढ़ाया छात्र दिग्विजय भी था, जो तब जे.एन.यू. में हिंदी साहित्य से एम.ए. कर रहा था। मुझे अच्छी तरह याद है, जब मिश्र जी की पत्नी सरस्वती मिश्र जी हम तीनों के सामने सिर्फ़ दो कप चाय लाकर रखीं। मैं थोड़ा असमंजस में पड़ गया। किंतु मिश्र जी मेरे मनोभावों को तुरंत ताड़ गए। बोले, ''दिग्विजय चाय नहीं पीता।'' तभी सरस्वती मिश्र जी द्वारा दिग्विजय के लिए एक गिलास में संतरे का रंगीन शर्बत लाकर रख दिया गया। जिसके बाद हम दोनों सहज भाव से पूर्ववत बातचीत में मशगूल हो गए।

मुझे बहुत दिनों तक इस बात का अफ़सोस बना रहा कि मैं मिश्र जी जैसे विशिष्ठ व्यक्तित्व पर, उनके द्वारा प्रदत्त उनकी उच्च कोटीय कई किताबों पर, बहुत चाहते हुए भी, कुछ लिख नहीं पाया। जबकि अपने ढंग के वे निराले, अति उल्लेखनीय शख्सियत हैं, हिंदी साहित्य के प्यारे-दुलारे, सराहनीय साहित्यकार हैं।

95 वर्षीय श्रद्धेय मिश्र जी ने कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, ललित निबंध, यात्रा वृत्तांत, डायरी, समीक्षा यानी नाटक छोड़कर प्राय: सभी विधाओं में विपुल लेखन किया है। सरलता, सहजता, सहृदयता, विनम्रता, सदाशयता, मनुष्य और मनुष्यता के प्रति स्थायी आस्था तथा मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार के प्रति पूर्ण समर्पण उनके जीवन और साहित्य दोनों में समान रूप से दिखलाई पड़ता है। मिश्र जी को थोड़े में जानने-समझने के लिए उनके आत्म कथ्य की कुछ संक्षिप्त बातें उद्धृत करना मुझे समीचीन लगता है।

बकलम ख़ुद राम दरश मिश्र—मेरा आत्म संघर्ष

जीवन एक सीधी-सपाट सड़क नहीं है जिस पर कोई सीधे सरल भाव से चलता रहे। वह तो एक ऐसी सड़क है, जो कहीं ऊँची है, कहीं नीची है, कहीं सपाट है, कहीं गड्ढों से भरी है। कहीं उसमें अनजान ख़तरनाक मोड़ हैं, कहीं अप्रत्याशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सँकरापन है।...यदि आप रचनाकार बनते हैं तो यात्रा के सारे सम-विषम संदर्भ, सुख-दुख और संघर्ष आपकी रचना में उतरते हैं और उससे संवाद करते हुए उसे सघन सामाजिक स्वर प्रदान करते हैं।

मेरे बचपन का जीवन तो सड़क नहीं, पगडंडियाँ रहा है।...इन्हीं पगडंडियों पर...अभावों से अभिशप्त अनंत टूटे-फूटे कच्चे घर थे, जिनमें चुपके-चुपके न जाने कितने सपने टूट-टूटकर सो जाते थे, कितने आँसू रात भर बहकर सवेरे सूख जाते थे, कितने चूल्हों की आँचें कभी जागकर कई-कई दिनों तक बुझी रहती थीं। शरीरों पर फटे-पुराने वस्त्र झूलते रहते थे। आए साल दहाड़ती हुई बाढ़ आती थी और खेतों को लूट ले जाती थी। उसके साथ आते थे जमींदार के करिंदे, कुर्क अमीन, पटवारी और न जाने कौन-कौन से लोग, जोंक की तरह दुर्बल देहों से ख़ून चूसने के लिए। मेरा घर भी इन्हीं घरों में से एक घर था। और मैं भी इन तमाम लोगों में से एक व्यक्ति था।...मुझे याद है, जब स्कूल और गाँव के बीच छाती भर बाढ़ का पानी हाहाकार कर रहा होता था, तब भी पानी में दबी हुई वह पगडंडी मुझे पुकारती थी और मैं सिर पर बस्ता उठाए हुए उसके साथ हो लेता था और वह मुझे स्कूल में रख आती थी। मुझे तब वह स्कूल अपनी मंज़िल लगता था।...अब निभ्रांत रूप से स्पष्ट हो गया कि इस मंज़िल के आगे आई.ए. है, बी.ए. है, एम. ए. है, पीएच.डी. है और लेक्चररशिप है।...

मेरी इस जीवन यात्रा के साथ एक और यात्रा है—वह है रचना यात्रा। वह भी बचपन से ही मेरे साथ चलती रही है। एक पगडंडी मुझे स्कूल पहुँचाती थी दूसरी खेतों की ओर। उमड़ी हुई फसलों को देखकर जब बड़े-बूढ़े ख़ुशी से कहते थे कि इस साल काफ़ी अन्न पैदा होगा और उस अन्न से वे अपनी कई-कई योजनाएँ बनाने लगते थे, तब मेरी आँखें यहाँ से वहाँ तक उमड़े हुए सरसों, मटर, तीसी आदि के फूलों के सागर में डूबती-उतरती रहती थीं।...फागुन आता था तो मन मत्त हो उठता था...मैं देखता था कि अभावों के मारे हुए लोग फागुनमय हो उठे हैं।...'पेट ख़ाली था, मगर मन था भरा त्यौहार से।' यानी पूरे गाँव में मरण में भी एक अटूट और सघन जीवन राग था।...और मैं अनुभव कर रहा था कि मेरे किशोर मन में कविता जैसी कोई चीज़ कुलबुला रही है।...आख़िर एक कविता फूट ही पड़ी—जब मैं दर्जा छः में था। और जब फूट पड़ी तो मैं बेचैन रहने लगा। कविता पर कविता लिखने की चाह बढ़ती गई...अजीब-सा मीठा-मीठा नशा रहने लगा।

...किशोर मन तो भावुक होता ही है। अतः वह मुख्यतः प्रकृति की छवियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भावुक स्वर में गाने की चेष्टा करता है। धीरे-धीरे उसमें मानवीय सौंदर्य और प्रेम का रंग उतरने लगता है। मेरी भी आंतरिक कविताओं में यही सब कुछ था। हाँ, वह समय स्वाधीनता आंदोलन का था। अतः कविताओं में राष्ट्रीय स्वर भी उभरने लगा था।...

मैं कविता के साथ कहानी में आया फिर उपन्यास में। मैं अपने ग्राम-अनुभवों को खंड-खंड रूप में कविता में तो दिया ही किंतु उपन्यासों में समग्र गाम-यथार्थ को एक साथ उतारने की कोशिश की। इसका कारण उपन्यास का अपना फार्म तो है ही, यथार्थ और कला संबंधी मेरी विकसित समझ भी है।...

मैंने बचपन में आर्थिक अभाव झेले थे लेकिन उसके लिए संघर्ष करने वाले पिता थे, माँ थी, भाई थे, किंतु अब तो मैं संकट भी झेल रहा था और संघर्ष भी कर रहा था।...

जीवन भर संघर्ष होता रहता है—कभी विषम परिस्थितियों से, कभी अपने से। रचनाकार विषम परिस्थितियों को बुलाने तो नहीं जाता! जब वे आ जाती हैं, तब उनसे संघर्ष करना ही पड़ता है। किंतु रचनाकार अपने से तो सदा संघर्ष करता रहता है। उसका सर्जक मन और सुविधाभोगी मन हमेशा आपने-सामने होते हैं। यदि सर्जक मन सुविधाभोगी मन से नहीं लड़ सका, तो कोई सर्जक कैसे कहा जाएगा! सर्जक के लिए अनेक प्राप्त सुविधाओं को त्यागना पड़ता है या सुविधाओं की कामना को हाशिए पर डालना होता है। अपने से अपनी लड़ाई निरंतर चलती रहती है, इसलिए सर्जक नित नया लिख पाता है।...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाणी विभव विवेकी राय जी को याद करते हुए

उ.प्र. के पूर्वांचल तथा बिहार के पश्चिमी जनपदों में साहित्यिक लोकप्रियता के शिखर व्यक्तित्व, ग्राम जीवन के उत्कृष्ट उद्गाता डॉ. विवेकी राय जी का विगत 22 नवंबर 2016 को निधन हो गया। वे 92 वर्ष की आयु पूरी कर 93 में प्रवेश कर चुके थे। डॉ. राय का निधन गँवई गुहार की गुरु गंभीर गवेषणा का युगांत है। हिंदी ही नहीं, उनके भोजपुरी-सृजित साहित्य में भी, समसामयिक ग्राम चेतना बख़ूबी मुखरित हुई है।

वैसे तो गाँव को विषय वस्तु बनाने वाले भैरव प्रसाद, नागार्जुन, शिवप्रसाद सिंह, राही मासूम रजा, राम दरश मिश्र, शिवमूर्ति तथा मिथिलेश्वर जैसे अनेक लेखकों की एक लंबी श्रृंखला है, किंतु गाँव को विस्तृत फलक पर गइराई के साथ उकेरने वाले साहित्यकारों में प्रेमचंद तथा रेणु के बाद तीसरे बड़े हस्ताक्षर विवेकी राय ही रहे हैं। गोदान, रंगभूमि, मैला आंचल, परती-परिकथा के पश्चात जो सराहना विवेकी राय विरचित 'सोनामाटी' को मिली, वह किंचित किसी किताब को नसीन न हो सकी। गाँवों की, वहाँ के किसान-मज़दूरों की, शायद ही कोई समस्या हो, जो गँवई मानसिकता के चतुर चितेरे डॉ. राय की खोजी निगाहों से ओझल रह गई हों। 'सोनामाटी' को पढ़ने पर तो लगता है कि कृतिकार ने इसे लिखने से पूर्व गँवई समस्याओं की एक अच्छी-खासी फेहरिश्त तैयार कर रखी हो, फिर उन्हें जहाँ-तहाँ पूरी कथा में माला में मनकों की तरह पिरो दिया हो। उनके द्वारा सृजित साहित्य की अधिकांश विधाओं—कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, फीचर, रिपोर्ताज तथा व्यंग्य आदि में, क़दम-क़दम पर गाँव की बदहाली, किसान-मज़दूरों की मूक वेदना, सामंती सोच के जमींदारों की पीड़क कुटिल प्रकृति आदि आसानी से देखने को मिल जाती है। दरअसल उन्होंने गाँव को दूर से नहीं, बहुत पास से देखा था। देखा ही नहीं, बल्कि भोगा था, जर्रा-जर्रा जिया था। वे एक गँवई ग़रीब किसान पहले थे, शिक्षक या साहित्यकार बाद में। प्रारंभिक पढ़ाई के अलावा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्ययन के नाम पर, उन्होंने किसी शिक्षण-संस्था का मुँह नहीं देखा था। शोध प्रबंध तैयार किए जाने तक की पूरी पढ़ाई उन्होंने न केवल गाँव में रहकर, बल्कि व्यक्तिगत (प्राइवेट) तौर पर पूरी की थी।

विविध विधाओं के सृजन के साथ-साथ एक सुधी समीक्षक के रूप में भी डॉ. राय का पर्याप्त योगदान रहा है। रेणु, भारती, राही मासूम रजा, अमृत लाल नागर, यशपाल, भगवती चरण वर्मा, शिव प्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र, नरेंद्र कोहली, नरेश मेहता, राजेंद्र अवस्थी, भीष्म साहनी, श्री लाल शुक्ल, गोविंद मिश्र, रमेश चंद्र शाह, मुद्रा राक्षस, मृदुला गर्ग, वीरेंद्र कुमार जैन, शिव सागर मिश्र आदि की पचासाधिक पुस्तकों की उन्होंने प्राय: आक्षेप रहित समीक्षा लिखी। जिन्हें पढ़ने पर लगता है कि समीक्षक को किसी भी कृति की विधागत कमियाँ बहुत ही कम दिखाई पड़ती हैं। पैरा दर पैरा, परिच्छेद दर परिच्छेद सिर्फ़ ख़ूबियाँ ही ख़ूबियाँ। कदाचित इसलिए उन्हें दिल से चाहने वालों की तादाद गणनातीत है। डॉ. रामचंद्र तिवारी, गोपाल राय, रामदरश मिश्र, धर्मवीर भारती, राजेंद्र अवस्थी, बद्री विशाल पित्ती तथा पुरुषोत्तम दास मोदी जैसे दर्जनाधिक उनके अत्यंत अंतरंग शुभेच्छु थे। नि:संकोच कहना चाहूँगा, रामचंद्र तिवारी तथा गोपाल राय जैसे कुछ तो उनके ऐसे प्रबल प्रशंसक थे, कि विवेकी राय की नाक-मुँह से औचक आई छींक में भी इन्हें साहित्य की गंध महसूस होती थी।

डॉ. विवेकी राय का संत हृदय 'सर्वे भवंतु सुखिन:' की कमनीय कामना से पूरी तरह लबरेज था। साहित्य तो साहित्य, धर्म और राजनीति आदि से जुड़े वरिष्ठों की पुण्य तिथियाँ भी उन्हें अक्सर याद रहती थीं जिनके जन्मदिन या शपथ ग्रहण पर अविलंब शुभ कामना या बधाई भेज देना उनके शुभाकांक्षी स्वभाव में शामिल था। डॉ. राय के प्रिय चहेतों यथा, डॉ. जनार्दन राय, डॉ. मांधाता राय, डॉ. मु. इसराइल अंसारी, मुनीर बख़्श आलम, एडवोकेट श्री शेषनाथ राय आदि की भी एक बड़ी लाइन रही है, जिनमें से बहुतों ने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व का मुक्तकंठ गायन किया। इनमें से कुछ ने उनके विपुल साहित्य पर शोध प्रबंध भी लिखा और पीएच.डी. डी-लिट की ऊँची उपाधियों से न केवल उन्हें, बल्कि ख़ुद को भी अलंकृत-गौरवान्वित किया। डॉ. साहब के विशिष्ट व्यक्तित्व में एक ऐसा चुंबकीय आकर्षण था कि उनके सानिध्य में जो भी आया, उनका अपना हो के रहा। यथा उचित प्यार-दुलार या सम्मान देने की कला में वे पूर्ण निष्णात थे। इस फन में उन्हें महारत हासिल थी। अधिक क्या कहूँ, उनकी आत्मीय प्रेरणा एवं अनवरत उत्साहवर्धन से, मेरे जैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेक सामान्य जन साहित्य-साधक बन बैठे। डॉ. पी.एन. सिंह जैसे सुधी समालोचक तक ने स्वीकार किया है कि उन्हें साहित्य लेखन की दुनिया में ले आने का अधिकांश श्रेय, डॉ. विवेकी राय को जाता है। यानी 'ओहि क सिंगार ओही पर छाजा' जायसी की नायिका की तरह विवेकी राय, सिर्फ़ और सिर्फ़ विवेकी राय ही रहे हैं। उनकी अनन्यता पर किसी को संदेह नहीं होना चाहिए।

इस छोटे कलेवर लेख में, उनसे जुड़ी यादों के भारी-भरकम ख़ज़ाने को खोलना-दिखाना मुमकिन नहीं है मेरे लिए। इसके लिए एक पूरी किताब चाहिए। फिर भी कुछ अहम यादों को आपसे ज़रूर साझा करना चाहूँगा।

(1) आप कुछ लिखकर कहीं क्यों नहीं भेजते?

इंटर कालेज खरडीहा, ग़ाज़ीपुर के संस्कृत प्रवक्ता भवभूति द्विवेदी जी की विदाई का भव्य समारोह। पहली बार वहीं मैंने डॉ. विवेकी राय जी को देखा। संचालक ने मुझसे भी कुछ कहने के लिए कहा। कार्यक्रम की समाप्ति के कुछ देर बाद डॉ. राय ने मुझसे कहा, "आपके अंदर प्रतिभा है। आप लिखकर कुछ कहीं क्यों नहीं भेजते?" मैंने कहा, "मैं तो गड़ा मुर्दा उखाड़ने वाला इतिहास का शिक्षक हूँ, किंतु जब आप कहते हैं जो ज़रूर कोशिश करूँगा।"

तीन-चार माह बाद राह चलते ग़ाज़ीपुर शहर में विवेकी राय जी से फिर मुलाक़ात हुई। नमस्ते-बंदगी के पश्चात तुरंत उन्होंने पूछा, "कहीं कुछ लिखकर भेजा?" मैंने कहा, "हाँ, 'धर्मयुग', 'हिन्दुस्तान' तथा 'सारिका' में भेजा, किंतु सबने रचनाएँ वापस लौटा दी।" सुनकर वे हँसने लगे। कहा, "उनमें तो मैं भी जल्दी नहीं छप पाता।" कुछ रुककर फिर बोले, "कागज कलम है? मैं कुछ छोटी पत्रिकाओं के पते बता रहा हूँ, नोट कर लीजिए।" वे 'वीणा' (इंदौर) तथा 'ज्योत्सना' (पटना) पत्रिकाओं के पते बताए, जिन्हें मैंने खड़े-खड़े नोट कर लिया।

फिर तो जल्दी ही मैं लेखक-साहित्यकार होने के मुगालते में आ गया। 'ज्योत्सना' 1976 के जून अंक में चार-पाँच पृष्ठों की मेरी पहली कहानी छपी, "मैं चोर हूँ"। कहना न होगा, डॉ. राय ने पी. एन. सिंह की तरह मुझे भी ठोक-बजाकर साहित्यकार बना दिया। छोटी पत्रिकाओं के कुछ संपादक मुझसे रचना पाने के लिए प्रार्थना करने लगे। 'अगुआ दस्ता' (साप्ता.) तथा 'जनवार्ता' (दैनिक) में मैं क्रमशः 'राम बदन राय का रविवारी रोजनामचा' तथा 'सोचनीय जी सोचते हैं' शीर्षकों से स्थायी स्तम्भ लिखने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(2) इहँवा चार गो रोटी ना सेंका जाइत!

हफ्ता भले बीत जाए, महीना नहीं बीतने पाता कि मैं विवेकी राय जी के यहाँ ग़ाज़ीपुर ज़रूर पहुँच जाता। उनसे इतनी अधिक आत्मीयता बढ़ गई कि वे आप की जगह मुझे तुम कहने लगे। मुझे अच्छी तरह याद है, मिलने में विलंब होने पर एक पत्र में उन्होंने लिखा था, 'मर गए हो क्या? अगर अगले अतवार तक नहीं आए, तो मैं तुम्हें मरा मान लूँगा।'

एक बार मैं ईश्वर चन्द्र सिन्हा (सं. जनवार्ता, वाराणसी) से मिलकर रात को लगभग नौ बजे ग़ाज़ीपुर पहुँचा। सोचा, विवेकी राय जी के यहाँ सभी खा-पी चुके होंगे, अतः उनके पास पहुँचने से पहले होटल में जाकर खाना खा लिया। यह जानकर वे बहुत ही नाराज हुए। कहा, ''इहँवा चार गो रोटी तोहके ना सेंका जाइत?...बात बा जे अब थइली में तनखाहि क पइसा न हो गइल बा! हमरा केहें बारहो बजे अइलीं, त होटल में खा के ना अइलीं, कहि देत बानी।''

(3) हमारे सइयाँ क्यों रूठे!

विवेकी राय जी पर एक लेख लिखा, जो गँवई साहित्य और विवेकी राय शीर्ष से 'जनवार्ता' में छपा। डॉ. राय बहुत ख़ुश हुए। पुनः कुछ दिनों बाद मेरा एक और लेख 'श्वेत पत्र के आइने में डॉ. विवेकी राय' शीर्षक से 'मुक्तकंठ' मासिक पटना में छपा। फिर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन दोनों लेखों को मैंने स्वांतः सुखाय लिखा था। तभी उनकी चर्चित कृति 'सोनामाटी' छपी, जिस पर समीक्षा लिखने के लिए उन्होंने स्वयं मुझसे कहा। इस संदर्भ में उनके दो-तीन पत्र भी मेरे पास आ गए। इस भारी-भरकम घटना बहुल उपन्यास पर कुछ लिख पाना मुझे बहुत दुरूह जान पड़ा। किंतु उनके बार-बार के आग्रही आदेश को टरकाना भी हँसी-खेल न था। समीक्षा लिखने के लिए इस पोथे (पोथे शब्द के प्रयोग के लिए क्षमा चाहूँगा) को मुझे पूरा का पूरा दोबारा बहुत ठीक से पढ़ना पड़ा। 'पूर्वांचल का टुकड़ा भर नर्क सोनामाटी' शीर्षक से इस पर लिखी लंबी समीक्षा जब 'आजकल' में छपी, तब अचानक श्रद्धेय राय, ख़ुश होने की बजाय, मुझसे अप्रकट भीतर ही भीतर रूठ गए। किंतु मैं जान पाता तब तो उन्हें मनाता! क्योंकि वे मुझसे सिर्फ़ रूठे थे, नाराज नहीं थे। और रूठने-नाराज होने में, मामूली ही सही, थोड़ा फ़र्क़ है। उनके रूठने की स्पष्ट जानकारी महीनों बाद मुझे तब मिली, जब मैं खरडीहा डिग्री कालेज के प्रतिनिधि की हैसियत से गोरखपुर विश्वविद्यालय में था। वहाँ आयोजित एक सभा को संबोधित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर जब मैं मंच से नीचे उतरा, एक लड़का मेरे पास आया। पूछा, "आप ग़ाज़ीपुर से आए हैं?"

"हाँ क्या बात है।" मैं जानना चाहा।

लड़के ने बड़ी शालीनता से कहा, "ऐसा है सर, मैं डॉ. रामचन्द्र तिवारी का लड़का हूँ। मेरे पिता जी आपसे मिलना चाहते हैं।"

"इतना बड़ा साहित्यकार मुझसे मिलना चाहता है। यह तो मेरे लिए बड़े ही सौभाग्य की बात है। चलिए अभी चलता हूँ।" और उस लड़के के स्कूटर पर मैं पीछे बैठ गया।

वहाँ डॉ. रामचंद्र तिवारी ने मुझसे पूछा, "आजकल में छपी 'सोनामाटी' की समीक्षा आपने ही लिखी है?"

"हाँ, लिखी तो मैंने ही है। क्या कुछ ख़ास बात है!"

वे बोले, "ख़ास बात इतनी ही कि जैसी लिखी जानी चाहिए आपने लिखी है। आजकल समीक्षाएँ कह-कहकर लिखवाई जा रही है। मैं तेरी गाऊँ तू मेरी गाओ और बस, हो गई समीक्षा।" मेरी अपराधी शक्ल दिखलाने के लिए उन्होंने लड़के के द्वारा डॉ. विश्वनाथ तिवारी को भी बुलवा लिया। मैं तो एकदम हतप्रभ था।

इसके बाद मेरा न केवल विवेकी राय के यहाँ, बल्कि ग़ाज़ीपुर में कहीं भी आना-जाना कम हो गया। धीरे-धीरे किसी साहित्यिक कार्यक्रम में लोगों ने मुझे बुलाना भी छोड़ दिया, क्योंकि मैं उनकी संभावित उपस्थिति के भय से प्राय: जाता ही नहीं था। यह स्थिति कई वर्षों तक बनी रही। वे मुझसे रूठे रहे, मैं उनसे नाराज रहा। बीच-बीच में जब कभी कहीं उनसे औचक-अप्रत्याशित मुलाक़ात भी हो जाती। दण्ड-प्रणाम होते और 'कैसे हो, ठीक हूँ' जैसी दो-चार औपचारिक बातें ही होतीं।'

शायद आप ने भी कभी कहीं सुना हो, इस फ़िल्मी गीत को, "रूठे-रूठे हमारे सइयाँ क्यों रूठे? न तो हम बेवफा, न तो तुम झूठे। रूठे-रूठे हमारे सइयाँ'...उनकी यादों की कसक जब भी जेहन में ज़ोर मारती, यह गीत मैं एकांत क्षणों में गुनगुनाने लगता। और यह दुखद स्थिति अव्यक्त अनुभूति, आज भी बदस्तूर ज्यों की त्यों है। किंचित जीवन पर्यन्त, जल्दी जाने वाली नहीं।

मेरी दृष्टि में ग़ाज़ीपुर के श्रीकृष्ण राय हृदयेश, राही मासूम रजा, कुबेर नाथ राय तथा विवेकी राय, ये चार समकालीन साहित्यिक स्तंभ रहे हैं। अत्यंत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि जनपदीय साहित्यिक वितान का यह चौथा स्तंभ भी अब नहीं रहा। अधिक क्या कहू, उनकी आत्मीय प्रेरणा एवं अनवरत उत्साहवर्धन से न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केवल ग़ाज़ीपुर, अपितु निकटवर्ती अनेक ज़िलों के युवा साहित्य-साधक, अच्छे-ख़ासे चर्चित साहित्यकार बन गए। अधिकांश बिहार सहित पूरे पूर्वांचल में, साहित्य की ऐसी अहर्निश दुंदुभी बजाने वाला उनके जैसा मानीखेज फनकार, फ़िलवक़्त तो मुझे कोई नहीं दिखाई दे रहा। मनबोध मास्टर (की डायरी) से अपनी पहचान रूपी सफ़र की शुरुआत कर 'नमामि ग्रामम्' की ऊँची मंज़िल तक पहुँचने वाले ऐसे अविस्मरणीय साहित्य साधक, महर्षि मनीषी, तपःपूत, पूज्यपाद, विवेक विशिष्ठ विवेकी राय जी की पावन स्मृति को इस मनोद्गार—

'सब कहते हुए रहे नहीं अब, यह कैसे मैं मानूँ
हृदय गेह के नेह द्वार से, निकल सको तो जानूँ'

के साथ मेरा प्रणत प्रणाम, कोटिशः नमन, अशेष अभिवादन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेनजीर नाजिर सर का नायाब नाजिरनामा

उनका वास्तविक या कहें घर का दिया नाम तो शिवदत्त—श्री शिवदत्त राय है, किंतु गाँव के लोग और पास-पड़ोस के कई गाँव वाले भी उन्हें नाजिर भाई या नाजिर साहब तखल्लुस से ही नवाजते हैं। उनका पुश्तैनी मकान मेरे घर से थोड़ी दूरी पर है, अतः दस-बीस दिन पर गाहे-ब-गाहे ही उनसे मिलना हो पाता है। उम्र क़रीब 16-17 साल मुझसे ज़्यादा होगी, किंतु भाई साहब या चच्चा आदि न कहकर सबकी देखा-देखी मैं भी अक्सर उन्हें नाजिर साहब ही कहा करता हूँ। उम्र के इतने बड़े फासले के बावजूद वे मुझसे एक दोस्त की तरह ही पेश आते हैं और कभी-कभी अकेले में बीवी-बच्चों, बहुओं तक की ख़ासीयतों के साथ-साथ खामियों की बाबत भी बहुत कुछ बोल जाते हैं। हाँ, बातचीत के सिलसिले में अपनी न छूटने वाली कई वाहियात आदतों को भी वे नहीं बख्शते, और जब यह सब सुनाते-सुनाते उनकी आँखें पनीली होने लगतीं, तब मुझे कहना पड़ जाता—'नाजिर साहब, अब छोड़िए भी! खुदा के अलावा जिसे हमने कभी देखा-परखा नहीं, खामियाँ कहाँ नहीं हैं? जो भी पैदा हुआ, अच्छाइयों के साथ-साथ कुछ बुराइयों को भी साथ लेकर ही पैदा हुआ, साधु-संत, महात्मा पीर-औलिया या बड़ा से बड़ा देवता कोई भी। फिर हम-आप तो मामूली इनसान हैं। कमियों-खामियों के चलते-फिरते पुतले हैं।' और मेरी ऐसी हिदायतों के साथ ही वे कुछ देर के लिए खामोशी अख्तियार कर लेते। फिर तो मैं बीती बातों को नज़रअंदाज़ कर कोई नई बात छेड़ देता, जिसमें जल्दी ही वे तरोताजा हो फिर से मशगूल हो जाते।

अत्यंत संवेदनशील नाजिर साहब को मैं सिर्फ़ जिगरी दोस्त ही नहीं, वक़्त-ज़रूरत, हालात, परिस्थिति या तत्क्षण स्फूर्त मानसिकता के मुताबिक़ अपना अजीज उस्ताद, रहनुमा, चाचा, बड़ा भाई, शुभेच्छु, संरक्षक आदि बहुत कुछ समझता-मानता हूँ। दरअसल वे हैं ही ऐसे, मेरे जैसे ऐसे-गैरों के लिए तो ख़ास तौर से। बड़ी सरहदों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाले चीन, अमरीका या पहले वाले रसिया जैसे बड़े मुल्कों...माफ करें ग़लत लिख गया, कहना चाहिए विशाल समंदर के फैलाव जैसा, उनका दिल बहुत बड़ा है। अछोर है, असीम है। कोई माने या न माने, मेरी जानिब दुनियावी रंगमंच पर उन्होंने पुत्र, पिता, पति, भाई, मित्र तथा प्रेमी आदि की कमोबेश ठीक-ठाक ही भूमिका अदा की है। खुदा (ख़ास तौर से माँ कष्ट हरणी) की प्रति दिन घंटों इबादत में भी कहीं से कोई कमी नहीं की है। अलबत्ता स्थानीय गँवई राजनीति में एक मामूली किरदार की भूमिका भी वे ता-ज़िंदगी नहीं निभा सके। बेशक कहा जा सकता है गाँव की परधानी तो उनके लिए महा सिरदर्द है, जो हर पाँच साल बाद सुरसा जैसे मुँह फैलाये ससुरी धमकी ही रहती है। ऐसे अवसरों पर वे प्राय: गाँव छोड़कर ग़ायब हो जाया करते हैं कि 'करो बेहूदों मुँह-चोथोवल, यह बंदा नाजिर तो अब मतदान के दिन ही हाजिर होगा!' डाँड़-मथार, खेत-खलिहान तथा नारी-मोरी जैसे विवादों में भी बेचारे एकदम मौन साध लेते हैं, जिनमें कभी-कभी उनका काफ़ी हर्ज-नुकसान हो जाया करता है। इस मायने में वे बेपरवाह की सीमा तक ला-परवाह भी हैं। किंतु आपको यह जानकर बहुत ताज्जुब होगा कि उनकी इस लापरवाही के नतीजे ने बड़े ही उम्दा गुल खिलाए हैं। उनकी जायी प्राय: सभी संतानें एक से बढ़कर एक उम्दा निकलीं। अगर मैं कहूँ कि उनके जैसा पढ़ा-लिखा तालीमयाफ़्ता ख़ानदान मेरे गाँव में दूसरे किसी का नहीं, तो कोई ज़्यादा ग़लत न होगा। मुमकिन है, अगर वे अपनी खेती-बारी, ज़मीन-जायदाद या ख़ुद के प्रति इतने लापरवाह न होते, तो उनके बच्चे-बच्चियाँ कदाचित इतना आगे न बढ़ पाते। तो आइए, पहले उनके ख़ानदान की बाबत ही मुख्तसर में कुछ बातें कर ली जाएँ।

ख़ानदानी ख़ासियतें—नाजिर साहब के पिता के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं। मैंने उन्हें देखा तक नहीं था। इसके सिवा कि उनका शुभ नाम स्व. रघुनाथ राय जी था, मुझे कुछ भी नहीं मालूम। रघुनाथ जी के दो पुत्र-रत्न हुए, पहले स्व. शिवदेनी जी तथा दूसरे इस आलेख के महानायक श्री शिवदत्त जी। उल्लेखनीय है कि शिवदेनी जी आज़ादी के जमाने के पक्के गांधीवादी थे। वे न केवल सिद्धांतत: सत्य, अहिंसा और प्रेम के पुजारी थे, बल्कि व्यवहारत: गाँव में सफाई अभियान, प्रौढ़ शिक्षा तथा स्वदेशी खादी वस्त्र हेतु चरखा चालन जैसे कार्यक्रमों के प्रति सशरीर समर्पित भी थे। जहाँ तक याद है, अपनी छ:-सात साली उम्र में अपने अनपढ़ काका स्व. शिव नारायण 'मलिकार' के साथ शिवदेनी जी की प्रौढ़ शिक्षा पाठशाला में एक बार मैं भी पहुँचा था। इस पाठशाला में पढ़ाने का काम एक अन्य सज्जन स्व.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारका राय भी करते थे। तो उस दिन घर आने पर मुझे माँ से मालूम हुआ था कि वहाँ अनपढ़ अधेड़-बूढ़ों की पढ़ाई होती है। और यह जानकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ था, हँसी भी आई थी। आख़िर मेरी उम्र ही अभी क्या थी। मेरी जानकारी के मुताबिक़ जब तक सही-सलामत रहे, घर-गृहस्थी, खेत-खलिहान के रोज़मर्रा काम की ज़्यादा जिम्मेदारी शिवदेनी जी के ही जिम्मे रही। बिना डाँड़-मेढ़ वाली खेत जैसे दिमाग़-खपाऊ कामों में अनुज शिवदत्त जी का संवेदनशील मन कम ही रमता था। इत्तेफाक ही कहिए कि उन्हें लक्ष्मण की तरह राम सरीखा प्यारा भाई मिल गया था।

पिता रघुनाथ जी की ही तरह शिवदत्त जी (नाजिर साहब) की पत्नी स्व. श्रीमती बृजकुमारी की बाबत भी मैं पूरी तरह नावाक़िफ़ हूँ। किंतु अनुमान के आधार पर इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि अपने वक़्त की वह एक कर्तव्य पारायण विदुषी महिला निश्चय ही रही होंगी। क्योंकि अगर ऐसा न होता तो जो.मु. जैसे गाँव-गँवई में वे 1. फोर फर्स्ट पीएच.डी. संस्कृत प्रोफ़ेसर, ओजस्वी वक्ता, कुशल लेखिका डॉ. चन्द्र कान्ता राय, 2. अच्छे अंकों से एम.ए. उत्तीर्ण श्रीमती मनोज राय, 3. बहुमुखी प्रतिभा संपन्न अंग्रेज़ी प्रोफ़ेसर डॉ. अजय कुमार राय, 4. शारीरिक शिक्षा के पारंगत प्रोफ़ेसर डॉ. विजय कुमार राय तथा 5. उच्च कोटीय एम.ए. उत्तीर्ण श्रीमती सरिता राय जैसी सुशिक्षित अनुभवी औलादों की जननी कहलाने का गौरव हासिल नहीं कर पातीं। मेरे ऐसा कहने का यह आशय कदापि न लगाया जाए कि जनाब नाजिर साहब इस गौरव के हक़दार एकदम हैं ही नहीं। अरे भाई इस बाबत कम से कम हाफ हक़ तो उनका बनता ही बनता है। क्यों, है कि नहीं?

शिवदत्त से नाजिर साहब होने तक का सुहाना सफ़र

यह बात पहले बता आया हूँ कि नाजिर साहब का घर मेरे घर से कुछ दूरी पर है, साथ ही वे मुझसे क़रीब 16-17 साल बड़े हैं। इसमें एक बात और जोड़ दूँ कि 50 पार करते-करते वे अपना अधिकांश वक़्त करीमुद्दीन पुर की कष्ट हरणी भवानी मंदिर पर बिताने लगे थे। जाहिर है, ऐसी स्थिति में उनसे जुड़ी अनेक घटनाओं का चश्मदीद गवाह बनने की गुस्ताखी मैं नहीं कर सकता। दूसरों द्वारा उड़ी-उड़ायी ऐसी कई बातें मेरी जेहन में हैं, जिनका प्रामाणिक ठोस सबूत मेरे पास नहीं है और ऐसे बतकुचनी पचड़ों में मैं आपको डालना भी नहीं चाहता। मसलन वे कहीं कुछ दिनों तक अध्यापकी किये और वहाँ से प्राचार्य या प्रबंधक की बेजा हरकतों से तंग आकर ख़ुद हटे या किन्हीं अन्य वजहों से हटा दिये गए। इसी तरह कुछ दिनों तक कचहरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में रहकर नाजिर के पद पर काम किए और वहाँ किसी हाकिम की अनोड़ से आजिज आ उस पद को भी लात मारकर घर आ बैठे कि 'भाड़ में जाए ऐसी हरामखोरों की चाकरी!' हाँ, कचहरी में काम करने का एक अहम फ़ायदा उन्हें ज़रूर मिला कि वे शिवदत्त राय की जगह अब ससम्मान नाजिर साहब कहे जाने लगे, साधारण बंदे से साहब (से सब होत है...) हो गए। यानी इतना सब होने-हवाने के बावजूद उनका रुतबा रत्ती भर कहीं कम न हुआ। वे गाँव भर में या गाँव से बाहर भी अधिकांश के प्यारे-दुलारे बने रहे। वैसे उनकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा उनके दिन-ब-दिन लायक़ होते गए लड़कों की वजह से भी हुआ, कहा जा सकता है। उनकी बड़ी बेटी डॉ. चंद्रकांता के न केवल सूरत की, बल्कि उच्च कोटीय सीरत की शोहरत-सराहना गाँव की सरहद के बाहर तक फैली हुई है। उसकी शहद घोलती मीठी बोली, दरियादिली और नेकनीयती से गाँव का जर्रा-जर्रा वाक़िफ़ है। मेरी 68 वर्षीया अत्यल्प शिक्षित पत्नी श्रीमती राधिका राय उसे अपनी कोख जायी बेटी की तरह तरजीह-प्यार देती हैं। कहना न होगा, मैं भी उसकी बेमिसाल काबिलियत का कायल हूँ। ज़बान से बरबस निकल जाता है, 'भगवान किसी को संतान दे, तो चंद्रकांता जैसी।' गोया नाजिर जैसे मामूली अल्फाज के आगे साहब जुड़ने वाली भूमिका में चंद्रकांता की सहभागिता से इनकार नहीं किया जा सकता।

चंद बेनजीर नजारे—हरफनमौला नाजिर साहब फक्कड़ाना अंदाज़ और मस्त-मलंग तबियत के एक अजीबो-गरीब कुदरती शख़्सियत हैं। कई मायने में वे लाजवाब हैं, लासानी हैं। यानी अन्यों से एकदम अलहदा। आइए इस बात की तस्दीक हम इन चंद नजारों के ज़रिए करते हैं।

दृश्य एक

बरसात के धूसर दिन। आसमान में हल्के-फुल्के बादल ज़रूर हैं मगर बरसने वाले नहीं लगते। नाजिर साहब सहित हम लोग चार-पाँच आदमी गाँव से बाहर निकले हैं। सुबह की पश्चिम जाने वाली अठबजिया ट्रेन पकड़नी है। चूँकि सभी दो-चार मिनट आगे-पीछे निकले हैं, अतः इसी हिसाब से कोई कुछ क़दम आगे है तो कोई कुछ क़दम पीछे। चाल को तेज़-मद्धिम करते हुए मँगई नदी के निकट आते-आते सभी एक साथ हो गए हैं। 'तुम कहाँ चलोगे?' तो 'आप कहाँ तक साथ देंगे?' जैसी बातें भी होने लगी हैं। ट्रेन अक्सर आधा-पौन घंटा लेट आती है, अतः सभी निश्चिंत है कि ज़रूर मिल जाएगी। किंतु हेलकर नदी पार करने के कुछ पल बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही अचानक पिछले स्टेशन ताजपुर से ही ट्रेन की तेज़ सीटी 'सी-ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ' सुनाई पड़ी है और सभी अगिया-बैताल मुख्य मार्ग छोड़ तिरछे दौड़ने लग गए हैं।

मज़ेदार सीन या सीन का क्लाइमेक्स इसके बाद शुरू होता है। भागते-दौड़ते सबसे उम्रदराज नाजिर साहब की ढीली लुंगी यकायक खुल जाती है और वे एकदम नंगे हो उठते हैं। क्योंकि लुंगी के नीचे संयोग वश कछिया-लिंगोट कुछ भी नहीं है। ऊपर बदन में बनियान तक नहीं है। सिर से पाँव तक उघारे, लुंगी को झोले के साथ बगल के कंधे-काँख में दबाए, बेख़याल-बेपरवाह वे बेतहाशा भागे जा रहे हैं। आस-पास खेतों में घास कटने वाले खड़ा हो-हो 'अरे ज़रा ई देखो!' कह तमाशा देखने लगे हैं। बड़ी और शर्म की बात यह कि उनमें दो दूर खड़ी घसियारने भी हैं, जो खी-खी की फुलझड़ियाँ छोड़तीं आँचल से मुँह छिपाए पीछे घूम गई हैं। किंतु बेनजीर नाजिर साहब की सेहत पर इन सबका इंच भर भी असर नहीं। शायद उन्हें पता भी नहीं कि दूर खड़ी दो औरतें भी देखने वालों में हैं। उलटे हाँफते हुए वे यथासंभव भर ताक़त बर्राने लगे हैं, "अरे हरामजादों, तुम लोग अपना खोलकर क्यों नहीं देख लेते? अरे जो चीज़ मेरे पास है, वह तुम लोगों के पास भी है ही! बेहूदे, बत्तमीज, नालायक़...उल्लू के पट्ठे!"

ख़ैर, बलिया से वाराणसी जाने वाली कुछ भीड़ भरी सड़क आते-आते उन्होंने लुंगी को जैसे-तैसे यह कहते हुए लपेट लिया है कि "समझदार लोग ही वक़्त के तकाजे को समझ पाते हैं, मूढ़-जाहिल नहीं! और ये सबके सब ससुरे जाहिल हैं। बेवकूफ़ हैं। हाँ, ज़रा एक बार और ज़ोर लगाकर जल्दी-जल्दी तुम लोग चलो, ताकि किसी भी क़ीमत पर ट्रेन छूटने न पाए। अब स्टेशन पर या ट्रेन की बोगी में ही कायदे से कपड़ा पहना जाएगा।"

दृश्य दो

इस दृश्य की प्रस्तुति से पूर्व संक्षेप में इसकी भूमिका को जान लेना ज़रूरी है। मेरा गाँव जो. मु. उत्तर से दक्षिण तक लंबाई में बसा है। अब उत्तर तरफ़ तो बाज़ार है, कालेज है, कुश्ती का अखाड़ा है, रामलीला का मंच है, यहाँ तक कि मंदिर-ठाकुरबाड़ी भी लगभग उत्तर तरफ़ ही हैं, जबकि दक्षिण तरफ़? आज से क़रीब 45 वर्ष पहले तक दक्षिण तरफ़ कुछ भी नहीं। सबसे बड़ी समस्या लड़कियों की शादी में बारातियों को नजदीक कहीं ठहराने को लेकर थी। जल्दी ही दक्षिण तरफ़ ग्राम समाज की एक ख़ाली ज़मीन मिल गई। हम लोगों ने आपस में मिलकर तय किया कि इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़मीन पर एक गर्ल स्कूल का निर्माण किया जाए। इसके लिए अर्थ उगाहने को लेकर आनन-फानन में एक नाट्य संस्था बनाई गई, जिसके तात्कालिक अगुआ बनाए गए नाजिर साहब। मेरे द्वारा ही लिखे 'कण-कण में भगवान' नामक नाटक में खलनायक की भूमिका नाजिर साहब को निभानी थी।

फिर तो अपने ही गाँव से जा रही एक बारात में हम लोग नाटक खेलने बैरनपुर गाँव में पहुँच गए। जहाँ तक मुझे याद है, यह घटना 1976 की है और कहीं भी बाहर जाकर नाटक खेलने का यह हम लोगों का प्रथम प्रयास था। यहाँ हम लोगों का मतलब मवेशी डॉ. पारसनाथ, डॉ. सत्येंद्र उर्फ़ भुटकुन, शिवप्रसाद, राजकुमार उर्फ़ तुंगनाथ, ठकुराई उमाशंकर उर्फ़ पिल्लू, तेजबहादुर तेजा, गामा कुर्मी, रामजी राय गायक, जितेन्द्र उर्फ़ बुच्ची लाल तथा गर्जन यादव आदि दो दर्जन से अधिक की तादाद, जिनमें कुछ संप्रति स्वर्गीय हो चुके हैं। हाँ एक बात और। हम लोगों के साथ नाचने-गाने वाली भाड़े की दो तवायफ़ें भी थीं, जिन्हें ज़रूरत के मुताबिक़ हो रहे नाटक के बीच-बीच में नाचना-गाना था।

यह दूसरा दृश्य नाजिर साहब की औचक उत्पन्न समीचीन सोच, जिसे लोग अंग्रेज़ी में प्रजेंस आफ माइंड बोलते हैं, से संदर्भित है। यहाँ नाटक के उस अहम सीन का पूर्वाभास देना बहुत ज़रूरी लगता है। नाटक की कहानी का दरहरामी दुष्ट नायक (नाजिर साहब) अपनी ईश्वर आश्रित पूर्ण पतिव्रता पत्नी को जबरिया घसीटते हुए घर से बाहर निकाल चुका है। वह विवश-बेचारी दर-दर की ठोकर खाती, शहर-बाज़ार कटोरा लिए घूम-घूमकर भीख माँग रही है। काफ़ी दिनों बाद भीख माँगते हुए उसकी भेंट अचानक एक दिन अपने अय्याश शराबी पति से हो जाती है, जो इसे न पहचानते हुए इसके कटोरे में कुछ सिक्के उछाल देता है। ये सिक्के छर्र-ऽऽ की आवाज़ के साथ कुछ कटोरे में गिरते हैं और कुछ स्टेज पर इधर-उधर। पत्नी स्टेज पर गिरे-छितरे सिक्कों को झुक-बैठ कर बीनने-बटोरने लगती है। तभी उसका महा लोफर निर्दयी पति, जिसके हाथ में शराब की बोतल है, नशे की हालत में अकबक बोलते-लड़खड़ाते हुए, उसे धक्के देकर नीचे गिरा देता है। अब इसी दर्दनाक दृश्य को स्टेज पर अंजाम देना था। इसके पूर्व का सीन अब समाप्ति की ओर था।

दृश्य का दी बेस्ट यहाँ आकर शुरू होता है—

स्टेज के पीछे पर्दे की आड़ में एक तरफ़ हाथ में शराब की रंगीन बोतल लिए, पैण्ट-कोट सूट तथा बड़े गागल वाला काला चश्मा डटाये पति बने नाजिर साहब खड़े हैं, तो दूरी ओर हाथ में भीख का कटोरा लिए, मैली-कुचैली चीकट साड़ी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुर्ती पहने पत्नी बने रामजी राय। दोनों के बीच नाटक की पांडुलिपि और एक नन्ही टार्च लिए मैं खड़ा हूँ। पहले नाजिर साहब को स्टेज पर जाना है, जिसके पल भर बाद रामजी राय को। हम तीनों के पीछे कुछ दूरी पर दोनों तवायफ़ें बेफ़िक्र आराम फरमा रही हैं, जिनका हो रहे नाटक की भूमिकाओं से कोई लेना-देना नहीं है। नाटक के बाक़ी पात्र ग्रीन रूम में बिछी दरियों पर जहाँ-तहाँ बैठे-लेटे अपनी-अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे हैं।

तभी क्या देखता हूँ कि खलनायक बने नाजिर साहब एक तवायफ को, जो दूसरी से ज़रा ज़्यादा कमसिन-हसीन है, हाथ के इशारे से अपने पास बुलाते हैं और उसे बिना कुछ बताए, उसकी सुराहीदार लंबी गर्दन को अपनी बायीं बाँह में कसकर लपेटे, सैकड़ों दर्शकों के रू ब रू स्टेज पर जा धमके हैं। फिर तो दाहिने हाथ में सुरा तथा बाईं बाँह के बीच फँसी अवश-अस़हाय छटपटाती सुंदरी और नाजिर साहब के एक से बढ़कर एक लच्छेदार दिल धड़काऊ डायलाग शुरू। लड़खड़ाते क़दमों-अल्फाजों के द्वारा कमाल की एक्टिंग। सब कुछ अनायास, औचक, अप्रत्याशित और एकदम लाजवाब! सैकड़ों सिरों से खचाखच भरे शामियाने में चारों तरफ़ 'हाय-हाय' 'वाह-वाह' 'गजब ढा दिया!' तथा 'हद कर दिया!' का हल्ला मच गया। अगला सीन आने से पहले नाजिर साहब के अद्भुत अभिनय से अत्यंत अगराये दर्शकों की ओर से दस, बीस पचास तथा सौ तक के इनामों की झड़ी लग गई। कहना न होगा, सन् 1976 के उस जमाने में दस-बीस के नोटों की भी बड़ी अहमियत हुआ करती थी। सौ का नोट वर (श्री राम बचन राय पुत्र स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्लोक राय) पक्ष की ओर से मिला था। हाँ एक पते की बात और। सीन समाप्त होने के तत्काल बाद नाजिर साहब की अटपटी हरकतों से खफा दोनों तवायफ़ें एकदम आग-बबूला हो उठी थीं। किंतु आख़िर में हजरत (नाजिर) की कौतुकी ख़ुशामदों ने ही उन्हें मनाया-हँसाया भी। मुझे कहना पड़ गया, "आप नाजिर साहब नहीं, बेनजीर साहब हैं!"

नाटक और बेनजीर नाट्यकर्मी नाजिर साहब

बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि एक औसत गाँव के एक औसत किसान परिवार में पैदा होने के चलते नाजिर साहब उसियाँ वाले नाजिर हुसेन की तरह फ़िल्मों में तकदीर आजमाने मुंबई नहीं जा पाए। महानगरों में जाकर वे किसी बड़ी नाट्य संस्था से भी नहीं जुड़ सके। अपने वक़्त की बनारस, कानपुर, मथुरा या लखनऊ आदि की लोकप्रिय थियेटर कंपनियों में भी अपना कौशल-कमाल दिखाने के प्रार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे नहीं बने। बस अपनी करइल की इलाक़ायी जागीर के इर्द-गिर्द ही ता-ज़िंदगी घूमते-भटकते रह गए। कहना चाहूँगा, कभी भी वे कांटों से कसमसाए नहीं, फूलों की ओर लुभाए नहीं। खोया ख़ुदा ने जैसी ज़िंदगी बख्शी, ख़ुशी-ख़ुशी गले लगाए रहे। गाँव के होने वाले नाटकों में राजा रंक फकीर, हर तरह की भूमिका अदा किए। नायक-नायिका ही नहीं, डाकू, भिखारी, मज़दूर, ऑफ़िसर, जोकर, किसान, पुलिस-दारोगा तथा चपरासी आदि किरदारों का उम्दा रोल करते हुए मैंने अपनी आँखों से उन्हें कई दफा देखा है। सत्यवादी हरिश्चंद का अभिनय देखकर तो कइयों की रोते-रोते हिचकियाँ बंध गई थीं। एक वक़्त रहा, जब मेरे गाँव में नाटक और नाजिर अल्फाज एक दूसरे के पर्याय बन गए थे। इनके अभिनय-कला की थोड़ी क्षतिपूर्ति भू. पू. अधिशासी अभियंता तारकेश्वर राय जी ने ज़रूर की, किंतु बहुत थोड़े दिनों तक ही। तारकेश्वर जी नाटकों के जानीवाकर थे, महमूद थे।

मेर गाँव जो.मु. में नाटक खेलने का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। बुजुर्गों के मुताबिक़ आज से अधिकतम सौ साल पहले एक बड़े जमींदार शिव नारायण जी ने पहले-पहल हुए किसी नाटक में भेड़ चराने वाले गड़ेरिये का किरदार निभाया था। यह जानकर कि इतने बड़े जमींदार का बेटा मामूली गड़ेरिया बना है, नासमझ पिता स्व. श्रीपतिराय ने पुत्र शिवनारायण को बहुत डांटा-फटकारा था, ऐसा सुनने में आता है। नाटक खेलने वाली इसके बाद की पीढ़ी में मेरी जानिब पहला बड़ा नाम नाजिर साहब का ही आता है। इनके समकालीन स्व. शिवरंजन राय, एजी. आफ़िस के वरिष्ठ अधिकारी श्री लाल जी राय, स्व. राम विशाल राय, स्व. गणपति राय, स्व. राम सागर राय, श्री देवशरण राय, कुशल ढोल वादक स्व. राम बचन राय, उच्च पदस्थ अधिकारी श्री सहतू राम तथा भू. पू. प्रधान श्री राजेंद्र राय आदि अनेक रंगकर्मी हुए। सन् 1972 के बाद की पीढ़ी के लिए तो लगभग आधा दर्जन नाटक मेरे द्वारा ही लिखे गए, जिनमें 'औरंगजेब का सिरदर्द' को छोड़ सबका सफल मंचन भी हुआ। दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उक्त नाटकों में से एक की भी पांडुलिपि मेरे पास नहीं है। पड़ोसी गाँव वाले खेलने के लिए ले गए, किंतु वादे के मुताबिक़ किसी ने भी लौटाया नहीं। इस बाबत ग़लती मेरी भी कम नहीं रही है।

नाजिर सर की नज़रे इनायत और रामलीला का जलवा

आइए अब आपको अपने गाँव की रामलीला (समिति) की ओर लिये चलते हैं जिसकी स्थापना महामल्ल मंगला राय जी की पुण्य स्मृति में सन् 1976 में हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समिति के संस्थापन सदस्यों में आरंभिक अध्यक्ष स्व. जनार्दन राय सुपुत्र स्व. साहब राय, प्रथम व्यास एवं हारमोनियम वादक स्व. भगवान पाण्डेय, अपर अध्यक्ष एवं सुंदर संवाद सर्जक कुशल वक्ता स्व. जनार्दन राय शिक्षक उर्फ़ पूरन मास्टर, वरिष्ठ रंगकर्मी एवं लीला के ताज-नाज नाजिर साहब, अपर अध्यक्ष विशिष्ठ व्यास लोकप्रिय गायक सकुटुंब समर्पित प्रधानाध्यापक श्री सत्यदेव मिश्र, स्व. शिक्षक कुबेर नाथ राय, श्री दिनेश राय, श्री रमाशंकर राय, श्री भगवान उर्फ़ ढोंढ़ा राय, स्व. जितेंद्र सिन्हा, आला फनकार बच्चू लाल राय, श्री सुरेश राय, श्री लक्ष्मण राय, श्री हृदय नारायण राय, पूर्व प्रधान श्री राजेंद्र राय, श्री लोलार्क मिश्र, लाल जी गुप्ता, रामाश्रय यादव, श्री रामानुज मिश्र, रामजी राय गायक, श्री शिवाशंकर संगीतज्ञ तथा नरेंद्र उर्फ़ गुड्डू राय आदि रहे। भूल वश छूट गए नामों के लिए क्षमा चाहूँगा। संप्रति रामलीला का सफल संचालन, अपने दोनों पुत्रों सूर्यकांत, चंद्रकांत तथा बहुत आयामी फनकार श्री शैलेश राय सहित नयनाभिराम अभिनय-संपन्न श्री निशिकांत मिश्र जी कर रहे हैं।

प्रबुद्ध जन कहते हैं, दशरथ नंदन राम को भगवान राम बनाने का वास्तविक श्रेय महाकवि केशव को नहीं, महाकवि कंब को नहीं, महाकवि भवभूति को नहीं, यहाँ तक कि विश्व-विश्रुत आदि कवि बाल्मिकी को भी नहीं, उन्हें दशरथी अजिर बिहारी से मर्यादा पुरुषोत्तम तथा पुरुषोत्तम से परम प्रभु भगवान—अकल, अनीह, अनंत, अनामय, अज, अवधेय, अखिलेश्वर तक पहुँचा देने वाले एकमात्र, सिर्फ़ और सिर्फ़ सगुण संत तुलसी दास जी हैं। रामचरित मानस के बहाने भगवान राम के परम पावन चरित्र को उन्होंने दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचा दिया। पश्चिमी विद्वान वीसेंट स्मिथ, मैकी, वारान्निकोव तथा जार्ज ग्रियर्सन जैसे अनेक विचारक, दार्शनिक, साहित्यकार श्री राम की गौरवमयी गाथा के कायल हो उठे। आरंभ से लोदी काल तक के रामकथाकार जो नहीं कर पाए, वह मुगलकाल तक आते-आते गोस्वामी तुलसी ने कर दिखाया, कि देखो—"हमारे राम, हमारे भरत तथा हमारे हनुमान आदि ऐसे थे, हमारी 'संशय विहग उड़ावन हारी' राम कथा इस तरह की थी।"

एकदम इसी तरह जोगा मु. की आरंभिक मामूली रामलीला को रम्य-रमणीक रामलीला, मननीय-नमनीय रामलीला या क्षेत्र प्रसिद्ध चर्चित रामलीला बना देने का एकमात्र श्रेय श्री शिवदत्त राय उर्फ़ नाजिर साहब को निर्विवाद दिया जा सकता है। इन्होंने भी दिखा दिया कि देखो, रामलीला का सुरुचिपूर्ण संचालन ऐसे किया जाता है, सुंदर संवाद इस तरह बोले जाते हैं, ख़ुद गंभीर रहकर हँसाने वाली बात बोली जाती है, दर्शकों को यथासंभव पीठ दिखानी नहीं चाहिए, वस्त्र-विन्यास, रूप सज्जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा मंच सज्जा आदि के ढंग ये होते हैं। इन्होंने यहाँ तक सिखा दिया कि दर्शकों की जेब से अधिक से अधिक इनाम के पैसे कैसे निकलवाए जा सकते हैं। आख़िर रामलीला को महीना भर चलाने के लिए प्रचुर मात्रा में धन भी तो चाहिए! इस प्रकार एक उच्च कोटीय गुरु की तरह, दूरदर्शी पथ प्रदर्शक की भाँति रामलीला के सदस्यों को कुछ ही वर्षों में इन्होंने बहुत कुछ सिखा-पढ़ा दिया। इनके बार-बार बताए-सुनाए, 'राम दरबार से कोटिशः आशीर्वाद', 'प्रभु श्री राम आपकी सारी मनोकामना, सकल मनोरथ पूर्ण करें' तथा 'बजरंग बली की कृपा व जोगी वीर बाबा के आशीष से आपका पूरा परिवार दिन दूना रात चौगुना फूले-फले, तरक्की करे' जैसे जुमले तो रामलीला के हर सदस्य की जुबान पर, आज भी चढ़े हुए हैं। जबकि पचासी पार जइफी के चलते-पिछले कुछ सालों से इन्होंने रामलीला में शिरकत करना छोड़ दिया है।

शायद आपको यह बात अटपटी लगे, हँसी या गुस्से का बायस बने, कि आज से 32-35 बरस पूर्व की नाजिर साहब की सुंदर शक्ल मेरे मन-मस्तिष्क में पुरानी हिरोइन नूतन से मिलती-जुलती बसी है। यह बात अलग है कि नूतन महिला थीं और नाजिर साहब एक अदद छः फुटे पुरुष। पैत्तालिस पार करते-करते वे मेरी नज़र में सुनील दत्त बन चुके थे। आज इस बुढ़ापे में सफ़ेद झक-झक दाढ़ी बढ़ाए, कभी वे रवीन्द्र नाथ टैगोर लगते हैं, कभी मिर्जा ग़ालिब तो कभी बहादुर शाह जफर। ख़ैर, तजबीज अपनी-अपनी, ख़याल अपना-अपना! ये नितांत मेरी निजी निगाह की बातें हैं और इसमें किसी दीगर की दलील या दखल से मुझे ज़रा भी परहेज नहीं। माफ करेंगे।

अब कुछ बातें बिल्कुल ब्रीफ में

मगर पहले अभी-अभी दिमाग़ में कौंधी चंद सतरें—

ऐ नाजिर, बेनजीर हो तुम
जन्नत-ए-कश्मीर हो तुम
तुम क्या हो, तुझे क्या मालूम
हर रांझा की हीर हो तुम।

शाहे जहाँ फकीर हो तुम
दुवा पराई पीर हो तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यार, बेपनाह आह की
निकले नज़र का नीर हो तुम।

बहुत सहनशील, धीर हो तुम
सदा ढाल, नहीं तीर हो तुम
मुसाहिब जोगी के, जोगा की
जगमगाती जागीर हो तुम

(ए) नाजिर साहब कपड़े की कटाई-सिलाई बख़ूबी कर सकते हैं। कई साल पहले मैंने उन्हें तहबन (लुंगी) को काटकर पाजामा बनाते हुए अपनी आँखों से देखा था। गोया मन से चाहे होते तो वे बहुत बढ़िया दर्जी (टेलर मास्टर) ज़रूर बने होते।

(बी) इन्हें मैंने करनी-बँसुली लेकर बिना सूता-साहुल के सही-सलामत ईंटें जोड़ते हुए देखा है। यानी ये मामूली कोशिश करने पर एक उम्दा किस्म के कारीगर (राजमिस्त्री, शिल्पकार) बन सकते थे।

(सी) पुर्जा-पुर्जा खोल-छितराकर मैंने इन्हें पेट्रोमेक्स दुरुस्त करते हुए भी कभी देखा था। अर्थात् थोड़ा-सा प्रयास करने पर ये अच्छा-खासा मेकनिक-तकनीशियन बन सकते थे। उस जमाने में अभी गाँवों में बिजली नहीं आई थी। जेनरेटर का भी चलन नहीं था और अवसर-विशेष पर पेट्रोमेक्स ही जलाए जाते थे।

(डी) शिक्षक बनने पर छात्र-छात्राओं की ओर से यह शिकायत कभी नहीं आई कि इनका पढ़ाया समझ में नहीं आता या ये वक़्त से स्कूल नहीं पहुँचते, कई-कई दिन ग़ायब रहते हैं। बावजूद इन विशेषताओं के, ये कुछ ही दिनों तक मास्टर साहब बने रह सके और जल्दी ही कचहरी में नाजिर बन गए।

(ई) कुछ दिनों तक कचहरी से जुड़े होने की वजह से ये बहुत पहले काफ़ी-कुछ कानूनी दाँव-पेंच से भी वाक़िफ़ हो चुके थे। यह बात दीगर है कि इस काबिलीयत का दुरुपयोग इन्होंने अब तक कभी नहीं किया। उपयोग के बारे में मेरी जानकारी नहीं के बराबर है।

(एफ) नाजिर साहब किसी तरह गुज़र-बसर करने वाले आम आदमियों के संसर्ग में रहना ज़्यादा पसंद करते हैं। तथाकथित बड़ों की बेमरौव्वत प्रताड़ना या ख़ाली पेट की मजबूरी के चलते, विवशता में चोर-उचक्के तक हो चुके यतीम इनसान इनकी दोस्ती के दायरे में आ सकते हैं। सच पूछिए तो सफ़ेदपोश बड़े-बड़ों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोहबत इन्हें रास ही नहीं आती। मुझे कोई फ़र्क़ नहीं, यदि मेरी इस तजबीज से आप इत्तेफाक न रख सकें।

नाजिर साहब की खासियत के मुतल्लिक और भी ढेर सारी बातें मेरे दिमाग़ी दरबे में हैं, जिनका ज़िक्र करना मुझे ज़रूरी नहीं लगता। सच पूछिए तो इस तरह के कई कारनामों से लबरेज, मानीखेज शसियत नाजिर साहब का यह नाजिरनामा 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' है, जिनसे निजात पाना ग़ैर मुमकिन भले न हो, बहुत मुश्किल, श्रमसाध्य ज़रूर है।

इस कृतित्व कथा के तैयार होने का तात्कालिक निमित्त

नाजिर सर की छियासी साला सेहत से संबद्ध एक नाजुक वाकया। मकर संक्रांति जनवरी 15 से एक दिन पूर्व, यानी 14 जन. 2020 का मंगलवार। उनके पुत्र डॉ. अजय राय जी को फ़ोन किया। पता चला कि अचानक वे फर्श पर गिरकर बुरी तरह घायल हो गए हैं। कमर की किसी हड्डी में फ्रैक्चर हो गया है। उन्हें वाराणसी ले जाने की तैयारी हो रही है। सुनकर यकायक मन क्षुब्ध हो उठा। यह दुखद ख़बर मैंने अपने घर वालों—पत्नी, बेटे तथा बहू को बताई। बेटे हरे कृष्ण ने मुझसे कहा कि अब आगरा से मेरे लिए अकेले वाराणसी पहुँचना तो मुश्किल है। इसके लिए इस वक़्त वाराणसी में ही रह रहे नितीश, मनीष (भतीजों) को फ़ोन किया जा सकता है। इसके साथ ही कुछ देर के लिए सभी चुप हो गए।

शाम को ऑफ़िस से लौटते ही हरे कृष्ण ने कहा, "ऐसा है पापा कि आप जल्द से जल्द नाजिर साहब पर एक अच्छा-खासा लेख लिख डालिए और छपने जा रही किताब 'यादों के दरीचे' के साथ इसे भी जोड़ दीजिए!"

"किंतु पुस्तक की पूरी पांडुलिपि तो प्रकाशनार्थ भेजी का चुकी है।" अफ़सोस के साथ मैंने उससे कहा।

"तो क्या हुआ! मैं अभी आपके प्रकाशक से इस संबंध में बात करता हूँ। अभी तो उन्होंने (गौरीनाथ) काम की शुरुआत तक न की होगी। आप आराम से अभी लिखना शुरू कर दीजिए। और बाक़ी सबकुछ मेरे हवाले छोड़िए।"

"किंतु नाजिर साहब पर मैं क्या लिखूँ? उनके बारे में कितना क्या जानता हूँ मैं! उनकी कुछ उपलब्धियाँ ज़रूर हैं मगर..."

"फिर वही अगर-मगर! आप भी कभी-कभी बेमतलब की बात करते हैं पापा। अरे आप चाहें तो काठ के उल्लू पर भी अच्छा-खासा लिख सकते हैं, फिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाजिर चाचा तो गाँव की, इलाक़े की एक ख़ास हस्ती रहे हैं।''

''अच्छा भाई, चलो कोशिश करते हैं।''

फिर तो हरे कृष्ण द्वारा दिए ढाढ़स-प्रोत्साहन ने मेरे लिए संजीवनी का काम किया और मकर संक्रांति 15 जन. 2020 के पुनीत पर्व पर मैंने इस अनगढ़ आलेख की 'श्री गणेशाय नमः' नींव डाल ही दी। अंततः सिया सहित अवधपति के अनवरत आशीष से आज उन्नीस जन. रविवार को यह सृजन भी पूरा हुआ। एतदर्थ राम-दरबार तथा दरबार के परम भक्त दरबारी नाजिर साहब की कृपा के प्रति अत्यंत-अत्यंत आभार। निसंदेह 'प्रभु की कृपा लिखउ यह लेखा। जोगीबर की दया बिसेखा॥' परमानंद प्रदायी परम प्रभु को पुनः-पुनः प्रणाम! अब इस सारे लिखे की खामियाँ मेरे सिर माथे तथा ख़ूबियाँ इस आंतरिक उद्गार के साथ आप सबके हवाले कि—

नमामि रामम्, नमामि श्यामम्।
सकल चराचर, ब्रह्मांड नाथम्॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माननीय मनोज जी के प्रति कुछ अन्य उद्गार

1.

पार्टी जो हो, मनोज सिन्हा एक अच्छे व्यक्ति हैं। मैं उन्हें बचपन ही से जानता हूँ।...इनके पितामह भी बेहद प्रतिष्ठित आदमी थे। सुना जाता है कि अगर कोई व्यक्ति उनसे पैसा माँग देता, तो वह तुरंत पाकेट में हाथ डालते और उसमें से जो निकलता, उसे दे देते।...

मनोज सिन्हा के पिता का नाम वीरेंद्र बहादुर सिंह था। इनके पिता श्री नृसिंह इंटर कालेज के प्राचार्य थे। वह भी बड़े नेकदिल इनसान थे। उन्हीं के कालेज में मनोज सिन्हा की पढ़ाई हुई थी। हाई स्कूल की परीक्षा में इन्होंने पूरे प्रदेश में छठवाँ स्थान प्राप्त किया था और इंटर की परीक्षा जिसे उन्होंने इंटर कालेज ग़ाज़ीपुर से पास की थी, उसमें भी प्रदेश में उच्च स्थान प्राप्त किया था।...इनके परिवार में कई लोग जज, आई.ए.एस. अधिकारी, प्रोफ़ेसर्स और बैरिस्टर्स थे। लेकिन इन्होंने राजनीति की राह चुनी और बचपन से ही जनसंघ फिर भाजपा के सदस्य रहे।

मेरा परिवार बचपन से ही कम्युनिस्ट था, जिसके चलते हम लोग कभी इनके वोटर नहीं रहे।...बावजूद इसके मनोज के व्यक्तिगत व्यवहार में कोई अंतर नहीं पड़ा। उम्र में मैं उनसे चार-छः साल बड़ा हूँ, इसलिए जहाँ भी वह मुझे देखते हैं, मेरा पैर छूते हैं। इतने शिष्ठ हैं मनोज सिन्हा। यद्यपि उनका मैं वोटर नहीं हूँ, इसके बावजूद 2019 के चुनाव में मेरे घर पर आए तो मैं विवश हो गया।...अंततः मैंने अपने विचारधारा के विरुद्ध जाकर मनोज सिन्हा को वोट दिया, जिसके लिए मेरे एक मित्र मेरी खिल्ली उड़ाते रहते हैं। लेकिन क्या करूँ, उस समय मुझे यही विकल्प उचित लगा था। सिन्हा जी के लिए एक बड़े काम (ग़ाज़ीपुर में गंगा पर रेलवे पुल) को तरजीह देनी पड़ी।

कुल मिलाकर मनोज सिन्हा एक शरीफ आदमी हैं।...आदमी का व्यवहार बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपील करता है, जिसके वे धनी इनसान हैं। संभव है, उनमें बहुत सारी कमज़ोरियाँ हों, जिन्हें मैं नहीं जानता। लेकिन इतना मैं जानता हूँ, कि वह निश्चय ही भले इनसान हैं। मैं उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

—डॉ. पी.एन. सिंह

संप्रति ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.) के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिधर्मी

2.

स्वच्छ व शालीन छवि के नेता माननीय मनोज सिन्हा जी, जिन्हें ग़ाज़ीपुर जनपद ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वांचल में विकास पुरुष के नाम से जाना जाता है, की राजनीतिक यात्रा का मैं साक्षी रहा हूँ। जब हम लोग काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र थे, तीसरे प्रयास में आप छात्र संघ के अध्यक्ष हुए थे। छात्र आंदोलन का नेतृत्व करते हुए आपको देखा हूँ, भाषा की शालीनता व अहिंसक आंदोलन, किसी प्रकार की उग्रता नहीं, प्रोफ़ेसर लोगों के प्रति अति सम्मान बोध। अनेक छात्र नेताओं की उद्दंड-झुंड में मनोज जी की एक अलग ही छवि थी। आप आरंभ से ही आर.एस.एस. व भाजपा के छात्र-संगठन से जुड़े हुए हैं। अन्य नेताओं की भाँति अवसरवाद का परिचय देते हुए कभी उछल-कूद करते आपको नहीं देखा हूँ। अपनी हार भी उसी विनम्रता से स्वीकार करते रहे हैं जिस विनम्रता से जीत। मंत्री बनने के पहले ग़ाज़ीपुर लोक सभा से दो बार सांसद रह चुके हैं। जब ग़ाज़ीपुर गृह जनपद को अपना कर्म भूमि बनाए तब मैं भी पी.जी. कालेज में आ चुका था। वैसे मैं सक्रिय राजनीति का कभी हिस्सा नहीं रहा हूँ, मगर छात्र जीवन के संबंध का निर्वहन करते हुए जब भी वह चुनाव लड़े, हारे या जीते, उनको अपना व परिवार का मत देता और दिलवाता रहा हूँ। एक समय तो ऐसा लग रहा था कि उनका राजनीतिक जीवन अवसान की ओर है, मगर राष्ट्रीय क्षितिज पर मोदी जी के अभ्युदय के साथ इनको भी राजनीति में पुनर्जीवन मिला। मोदी जी के मंत्रालय में पहले केंद्रीय रेल राज्य मंत्री व फिर संचार मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार मिला। अन्य नेताओं की भाँति लफ्फाजी इनकी फितरत में नहीं है। कभी विवादित बयान नहीं देते। कम बोलते हैं, ठोस बोलते हैं, शब्दों-वाक्यों के चयन में बहुत सजग रहते हैं। अवसर मिलने पर, चूँकि सिविल इंजीनियरिंग के छात्र रहे हैं और शुरू से ही प्रखर विद्यार्थी रहे हैं, इनकी प्रतिभा का एकाएक प्रस्फुटन हुआ और आज विकास पुरुष के रूप में आपकी ख्याति है। इतना कुछ कर दिखाया कि मैं तो व्यक्तिगत रूप से इनकी सक्रीयता, रचनाशीलता, गतिशीलता एवं कल्पनाशीलता का कायल हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज़ादी के बाद से ही ग़ाज़ीपुर हर क्षेत्र में विकास के लिए तरस रहा था, भूखा था, प्यासा था, जिसकी तृप्ति इसी जनपद के सपूत के हाथों संभव हुआ। मगर सियासत एक विचित्र खेल है, जिसमें अनेक तरह के समीकरण एवं मनोविज्ञान काम करते हैं। ग़ाज़ीपुर के मतदाताओं को विकास के अतिरिक्त अन्य कारक ज़्यादा प्रिय लगे और वह चुनाव हार गए। मगर समय बलवान होता है, आज पुनः यह जनपद सूना हो गया और सबके जबान पर इनका नाम व पश्चाताप का भाव दीख रहा है। ख़ैर, ये सियासत के मजे हुए खिलाड़ी हैं, अपने लंबे राजनीतिक जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं। इसे वह समभाव से लेते हैं। आज भी अपनी क्षमता भर इस जनपद की सेवा में मनोयोग से संलग्न हैं। ईश्वर आपको स्वस्थ व दीर्घायु करे और पूर्ववत सार्वजनिक जीवन में आप स्वच्छ व शालीन रहते हुए हमारी सेवा करते रहें।

—डॉ. श्रीकांत पांडेय

एसोसिएट प्रो. एवं विभागाध्यक्ष

अर्थशास्त्र, पी.जी.का. ग़ाज़ीपुर (उ.प्र.)

3.

एक दो अपवादों को छोड़ दिया जाए तो भारतीय लोकतंत्र में राजनीति स्वार्थपूर्ति का साधन बन गई है। अंग्रेज़ों के शासन काल से आरंभ कर एक लंबे समय तक यह स्वार्थपरता भारत राष्ट्र के गौरव और अस्तित्व के साथ छल करती रही है। ऐसे परिवेश में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अभियांत्रिकी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी मेधा एवं शक्ति को राष्ट्र की सुदृढ़ता के लिए समर्पित करने का संकल्प लेकर देश की संसद का गर्व बढ़ाने वाले श्री मनोज सिन्हा राष्ट्रस्तरीय नेतृवर्ग में आदर्श एवं प्रेरणा के अजस्र स्रोत के रूप में आदरणीय हैं, अनुसरणीय हैं। शिक्षा के संस्कार और सेवा के धर्म को अपने व्यवहार में उतारकर इन्होंने जहाँ महापुरुषों के मार्ग का चयन किया, वहीं अपने निश्छल निःस्वार्थ संयत आचरण से सबके लिए श्रद्धास्पद बन गए।

"यदि आप एक वर्ष के लिए योजना बनाते हैं तो धान उगाइए, दस वर्षों के लिए योजना बनाते हैं तो पेड़ लगाइए और सौ वर्षों के लिए योजना बनाते हैं तो बच्चों को शिक्षित बनाइए"—चीनी दार्शनिक कांफ्यूशियस को संजीदगी के साथ उद्धृत करते हुए ये व्यक्ति एवं राष्ट्र के सर्वांग विकास की मूल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। देश में जाति, धर्म, वर्ग की ग्रंथियाँ पृथक-पृथक समुदाय में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकीर्णता और विभेद उत्पन्न कर कर्मयोगियों को विचलित करने का प्रयास करती रही हैं किंतु अपने कर्म से सृजन का अध्याय लिखने वाले धीर पुरुष तो हर युग में अटल मील के पत्थर बन कर्तव्य के मार्ग को प्रशस्त करते रहे हैं।

उन्नीसवीं सदी के आठवें दशक में छात्र जीवन से आरंभ कर अद्यावधि अनेक सम-विषम परिस्थितियों में जिस अविचल मानव का परिचय हमें श्री मनोज सिन्हा जी के रूप में मिला है, सृष्टि-स्थिति-संहार के अधीश्वर प्रभविष्णु परमात्मा की प्रेरणा से ऐसे सत्पुरुष का अवतरण कुल एवं राष्ट्र के समुत्थान के लिए होता है। महाकवि भर्तृहरि ने कहा है—

"स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।"

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में सिन्हा जी ने लोकहित के लिए जिस प्रकार प्रतिबद्धताओं की कसौटी पर अपने को साधा है, देश के लिए चिरप्रतीक्षित योजनाओं को भूर्त रूप देने में अपनी युक्ति और शक्ति लगाई है, उत्तरप्रदेश को विकास का जो अपूर्व उपहार दिया है, युवा पीढ़ी संघर्ष के इस पुरोधा की कार्यशैली की कायल है। अपने आचरण से शिष्टाचार और संस्कार की परिभाषा को चरितार्थ करने वाले, सृजन के शिल्पी मनोज सिन्हा जी के नेतृत्व में देश को ज्ञान-विज्ञान एवं कौशल की नवीन दिशाओं के उद्घाटन की प्रतीक्षा है।

—डॉ. चंद्रकांता राय

विभागाध्यक्ष-संस्कृत, आर्य महिला महाविद्यालय, वाराणसी

4.

इस दुनिया में रोज़े अव्वल से अब तक जितने अफराद ने जन्म लिया, उनका ताल्लुक़ ज़िंदगी के किसी न किसी मैदान से ज़रूर रहा है। इनमें से कुछ दानिश्वर हुए तो कुछ मेहनतकश, कुछ तो तोल्वा हुए तो कुछ असात्ज़ा और कुछ सियासत दाँ। सियासत दाँ की बात की जाय तो सच पूछिए, असल सियासत है। वही है जिस के मेज़ाज में सादगी और इन्केसार हो। साथ ही ख़िदमेख़ल्क़ का बेपनाह जज़्बा। मनोज सिन्हा एक ऐसे ही सियासत दाँ का नामे नामी है। उन्होंने आवामी फ़लाहो बहबूद के जो कारहाए नुमायाँ अंजाम दिए उनकी वजह से मनोज सिन्हा का नाम ग़ाज़ीपुर की तारीख़ में सुनहरी हारूफ़ से लिखा जाएगा।

मनोज सिन्हा का नाम तआरूफ़ का मोहताज नहीं। उनका ताल्लुक़ ग़ाज़ीपुर के ही एक गाँव से है। वह दरमियानी तबक़े के एक किसान परिवार के चश्मोचिराग़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। अपनी सियासी बसीरत की बदौलत वह ज़िले के ऐसे क़दआवर नेता हैं जिन्हें बेइंतहा शोहरत और मक़बूलियत हासिल हुई। लेकिन इस शोहरत और मक़बूलियत के पीछे उनकी तवील जिद्दोजेहद और आज़माइशों की एक दासतान भी पोशीदा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनका सियासी सफ़र बिलकुल बेदाग़ रहा है।

मनोज सिन्हा आला तालीम याफ़्ता हैं। एक आला तालीम याफ़्ता में जिन ख़ूबियों को होना चाहिए वह सब उनमें मौजूद हैं। वह इन्तेहाइ मोहज़्ज़ब, ख़लीक़, नेक नफ़स, दर्दमन्द, उसूलपसंद और सादा मेज़ाज इनसान हैं। उनके मेज़ाज की सादगी का अंदाज़ा उन तक़रीर से भी लगाया जा सकता है जो वह आवामी जल्सों में करते हैं। वह वही कहते हैं जो उनको करना होता है। यहाँ बुलन्दबाग दावे नहीं हैं।

उनकी शख़्सियत के सेहर से सामने वाला मोतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता। किसी से गुफ़्तुगू करते हैं तो ऐस अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल करते हैं कि मोख़ातिब को अपना गिरवीदा बना लेते हैं। उनके राब्ते में आने वाला हर शख़्स यह महसूस करता है कि वह गोया उसके दिल की बात कह रहे हैं।

यूँ तो मनोज सिन्हा की ख़िदमात का दाएरा बहुत वसी है ताहम ग़ाज़ीपुर ज़िले की तारीख़ में उनके करनामों को हमेशा याद रखा जाएगा। यह हक़ीक़त है कि एक अच्छे और तजुरबेबार रहनुमा की शिनाख़्त ख़ुद उसके कारनामों से होती है। इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने यहाँ के अवाम की भलाई और सहूलत के लिए जो ख़िदमत अंजाम दी उसने ग़ाज़ीपुर जैसे छोटे शहर को हिंदोस्तान के नक़्शे पर एकदम नुमायाँ कर दिया। हिंदोस्तान के किसी भी बड़े शहर में जाना-आना मुश्किल न रहा। इस सहूलत ने न सिर्फ़ कारोबार को फरोग़ दिया बल्कि समाजी राब्ते में भी एज़ाफ़ा किया।

यह वक़्त की सितम ज़रीफ़ी कहिए कि पूरे ज़िले में तरक़्क़ीयाती कामों का सिलसिला जो बहुत ज़ोरोशोर से जारी था, वह रुक गया। मनोज सिन्हा की ख़िदमत का एतराफ़ जिस तरह करना चाहिए था, वह नहीं हुआ। इस नासिपासी का सबसे बड़ा असर तो यही हुआ कि यहाँ के अवाम हवाई सफ़र जैसी बड़ी सहूलत से महरूम हो गए। यक़ीनन इस का असर समाजी, मआशी और एकतेसादी पहलुओं पर भी पड़ा होगा।

वक़्त का पहिया चलता रहता है। अजब नहीं कि यह पहिया फिर उसी महवर पर आ आये जहाँ से वह चला था।

—डॉ. ओबैदा बेगम

पूर्व प्रो. उर्दू विभाग, स्वामी सहजानंद पी.जी. कालेज ग़ाज़ीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5.

आदरणीय भाई राम बदन जी!

सुनने में आया है कि आप माननीय मनोज सिन्हा जी के बारे में कुछ लिखने जा रहे हैं। आप की यह प्रशस्ति गायन कामना सुनकर मुझसे रहा नहीं गया और आपके लिए यह खत लिखने बैठ गया। इसके अलावा कि मनोज जी न केवल ग़ाज़ीपुर-बलिया या वाराणासी, बल्कि पूर्वांचल या कहें पूरे प्रदेश की जान हैं, शान हैं, आन हैं, मुझे उनके व्यक्तित्व-कृतित्व के संबंध में अधिक कुछ नहीं कहना है। हाँ, ग़ाज़ीपुर के आप जैसे सैकड़ों बुद्धिजीवियों-साहित्यकारों के बारे में ज़रूर कुछ कहना-पूछना चाहूँगा और वह यह कि आप जैसे महानुभावों के रहते-देखते कैसे सिन्हा जी 2019 का चुनाव हार गए, वह भी बुरी तरह, लाख वोटों से भी अधिक मतों से? कैसे ऐसे विकास-व्यक्ति को हरा कर आप अपनी कलम के सहारे अब विरहा-मर्सिया गाने जा रहे हैं? क्या आप लोगों में तनिक भी शर्म-हया नहीं रह गई है? अरे मेरे भाई, मुद्दतों बाद तो एक ऐसा रहनुमा नेता मिला है, जिसे बेरहमी के साथ आप सबने ठुकरा दिया। और अब? अब घड़ियाली आँसू बहाने जा रहे हैं। मैं इस पत्र के माध्यम से ग़ाज़ीपुर के आप जैसे तथाकथित विचारकों को लानत भेजता हूँ। मेरी इस प्रेषित 'थू-थू:' को, दुखी दिल की पागल-बदहोश आवाज़ को, आप सबको झेलना ही होगा। माफ करेंगे, सच प्राय: कड़वा होता है।

—इस विवश-बेबस अभिव्यक्ति के लिए क्षमा-याचना सहित।

डॉ. राजेंद्र भारती

बलिया

•••

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection; Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम बदन राय

जन्म : 7 जुलाई, 1950 (माँ के द्वारा बताई जन्म तिथि, 1948 के क्वार मास की अमावस्या) को गाजीपुर (उ.प्र.) जिले के जोगा मुसाहिब गाँव में।

गँवई गुहार (काव्य-संग्रह), फिरकी वाली (डोम जीवन पर आधारित उपन्यास), परंतः (कहानी-संग्रह), कुछ शरीफ कुछ शरारती (व्यंग्य-संग्रह), शिवायन (खण्ड काव्य), कृष्णायन (प्रबंध काव्य), कश्यप कीर्ति (इति.), द्वार खड़ा अभिसार (काव्य-संग्रह) तथा 'फागुन भर हमसे मति बोलऽ' (भोजपुरी काव्य-बारहमासा) पुस्तकें प्रकाशित। कुछ प्रकाशनाधीन। इनके अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं आकाशवाणी से तक़रीबन तीन सौ रचनाओं का प्रकाशन-प्रसारण। वाराणसी से प्रकाशित 'जनवार्ता' एवं युसुफपुर-गाजीपुर से प्रकाशित 'अगुआ दस्ता' अख़बारों में कुछ दिनों तक क्रमशः 'सोचनीय जी सोचते हैं' तथा 'राम बदन राय का रविवारीय रोजनामचा' स्थायी स्तंभों का लेखन।

'अरावली का नाहर', 'पिघल उठा चम्बल', 'कण-कण में भगवान', 'शेर-ए-कश्मीर' (युद्ध 1965) एवं 'औरंगजेब का सिरदर्द' शीर्षक नाटकों का लेखन एवं मंचीन निर्देशन। ग्रामीणों से चंदा माँगकर, साथ ही वैवाहिक कार्यक्रमों में नाट्यमंचन द्वारा धन उगाहकर, अपने गाँव में एक गर्ल्स स्कूल तथा शिवालय के नाम पर एक सार्वजनिक सभावास का निर्माण।

संप्रति, इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर पद से 2013 में अवकाशोपरांत, गाँव की खेती-गृहस्थी के साथ-साथ स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : जोगा मुसाहिब, गाजीपुर (उ.प्र.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 250/-

ISBN 978-93-88799-50-8

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.